विज्ञापन ।

इस ग्रन्थके छापने मे अथवा संशोधन करणे मे जो कोइ जगे अक्षर खोट, काना मात्रा भुल हुवा होय अथवा और कोइ तरेह ज्ञानादिकका छापने मे आशातना हुवा होय सो सकल श्री संघ समक्षे मन वचन काया कर मिच्छामि दुक्कडं होय, और साधर्म्मिक श्री सङ्घ से इह प्रार्थना है, कि इस पुस्तक मे जो कुछ कहिं २ अशुद्ध होय, तिसकुं संशोधन करके जयना से उपयोग कर पाठ करणे मे आवे । इति ॥ श्री रस्तु कल्याण मस्तु । उत्तरोत्तर मङ्गलीक ॥

सूचिपत्र ।

=

सुचिपत्र।

विषय | पत्राङ्क

विषय		पत्राङ्क

सान्दसह ....
स्पड्डिक्कमिट ।

॥ ॐ नमः ॥

ज्ञानावली।

॥ प्रतिक्रमण विधि ॥

॥ अथ प्रथम सामायिक विधि लिख्यते ॥

प्रथम मुहपती आसनपुञ्जनी प्रमार्जिकर (३) वार गुरुवंदना देणी, इच्छामि खमासमणो वन्दिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मथ्थेएण बन्दामि, पूजजी इछाकार भगवन सुहराइ सुह दिवसि सुख तप सरीर निरावाध सुख सञ्जम जातरा निरवहतिछे पूजजि साता ॥ इति गुरुपरम्पर बन्दना ॥ णमो अरिहन्ताणं णमो सिद्धाणं, णमो आयरियाणं, णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं, एसोपञ्च णमुक्कारो, सव्व पाव प्पणासणो, मङ्गलाणञ्च सव्वेसिं पढमं हवइ मङ्गलं। कहणो ॥ इच्छाकारेण सन्दिसह भगवन् इरीयावहियं पड़िक्कमामि इच्छं इच्छामि प्पड़िक्कमिउ १ इरिया वहियाए विराहणाए गमणा गमणे २

पाणक्कमणे वीयक्कमणे हरियक्कमणे उसाउत्तंग पणग दग मट्टी मक्कड़ा सन्ताना सङ्कमणे जेमे जीवा विराहिया ए गिंदिया बेइंदिया ते इंदिया चउरिंद्रिया पञ्चिन्द्रिया अभिया वत्तिया लेसिया सङ्घाईया सङ्घट्टिआ पराविया किलामिया उद्दाविया ठाणा उट्ठाण सङ्कामिया जीविआउ विवरोविया तस्स मिच्छामि दुक्कडम् ॥ तस्स उत्तरी करणेणं कहणो ॥ आठ नवकारका काउसग्ग ॥ पछै काउसग्ग पारि, नमो अरिहन्ताणं ऐसा प्रगट पणे कहणा, लोगस्स उज्जोय गरे धम्म तित्थयरे जिणे अरिहन्ते कित्तयसं चउवि सम्पि केवलि ॥ उसभ १ मजियञ्च २ वंदे सम्भव ३ मभि नन्दनञ्च ४ सुम इञ्च ५ पउमप्पहं ६ सुपासं ७ जिणञ्च चन्दप्पहं वंदे ८ सुविहिञ्च पुप्फदन्तं ९ सियल १० सियञ्च ११ वास-पूजञ्च १२ विमल १३ मणन्तञ्च जिणं १४ धम्मं संतिञ्च वंदामि १६ कुंथु १७ अरञ्च १८ मल्लि १९ वन्दे मुनिसुव्वयं २० नमि जिनञ्च २१ वंदामि रिट्ठनेमि २२ पासन्तहं २३ वद्धमानञ्च २४ ॥ एवमए अभित्थुया विहुअरयमला पहीण जरमरणा चौविसम्पि जिनवरा तित्थयरा म पसी अंतु कित्तिय वंदिय महिया जेते लोगस्स उत्तमा सिद्धा आरुग्गं बोहि लाभं समाहि वर मुत्तमं दिन्तु ६ चंदेसु निम्मलयरा आइच्चेसु अहियं प्पया सयरा सागर वर गम्भिरा सिद्धा

सिद्धिं मम दिसन्तु ७ ॥ (खड़ा हो कहणा)करेमि भंते सामाइयं सावज्जं जोगं पच्चक्षामि जाव नियम पज्जवा सामि दुविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं नकरेमि नकारवेमि तस्स भन्ते पड़िक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसरामि ४ नीचै वैसकर बोलना ॥ नमोत्थुणं अरिहन्ताणं भगवंताणं आईगराणं तित्थयराणं सयं सं बुद्धाणं २ पुरिसुत्तमाणं पुरिस सीहाणं पुरिसवर पुण्डरियाणं पुरिसवर गन्ध हत्थीणं ३ लोगोत्तमाणं लोगनाहाणं लोगहियाणं लोगपईवाणं लोगपज्जोयगराणं ४ अभयदयाणं चक्षुदयाणं मग्गदयाणं शरणदयाणं जीवदयाणं वोहिदयाणं ५ धम्मदयाणं धम्मदेसियाणं धम्मनायगाणं धम्मसारहीणं धम्मवरचाउरंत चक्कवट्टीणं। दीवोत्ताणं सरणगइपइट्ठा अप्पडिहयवर नाणं दंसणधराणं वियट्ट छउमाणं जिणाणं जावयाणं तिन्नाणं तारियाणं वुद्धाणं वोहियाणं मुत्ताणं मोयगाणं ८ सव्वन्नूणं सव्व दरसीणं सिव मयल मरुय मणंत मक्खय मव्वावाह मपुन राविति सिद्धिगइ नामधेयं ठाणं सग्पत्ताणं नमो जिणाणं जीय भयाणं ९ ठाणं सम्पाविउ कामस्स णमो जिणाणं ॥ इत्ति सामायिक लेवा विधि ॥

॥ अथ चौविसत्थारी विधि कहैछै ॥

नमो अरिहन्ताणं ५ पद कहणा ॥ लोगस्सकहणो ॥ नमो त्थुणं कहणा ॥ पीछे उभा होय कर तस्सुत्तरी १२ लोगस्सरो काउसग्ग अथवा ४८ नवकाररो काउसग्ग पारी, प्रगट पणै नमो अरिहन्ताणं कह कर लोगस्स कहणा पिछे । नीचा वैस कर नवकार लोगस्स नमोत्थुणं कहणो ॥ इति चौविसत्थो १ पछे द्वादशावर्त्त वन्दना देनी, उकडु वेसणो १वार अन्ते उभो एक वेर नीचै वेठा कहणो इछामि खमासमणो वन्दिउं जाव णिज्जाए निसहीआए अणुजाणह मेमि उग्गहं निसीही आ हो कायंकाय-संफासं खमणिजो भे किलामो अप्प किलन्ताणं वहु सुभे णभे देवसी वइक्कन्तो जत्ताभि जव्वाणि जं चंभे खामेमि खमासमणो देवसियं वइक्कमं आवस्सियाए पड़िक्कमामि खमा समणाणं देवसिआए आसायणाए तेत्तिसंभयाराए जं किञ्च मिच्छाए मणदुक्कड़ाए वयदुक्कड़ाए कायदुक्कड़ाए कोहाए मायाए लोभाए सव्वकालियाए सव्वमिच्छो वयाराए सव्व धम्माई कमणाए आसायणाए जोमे दिवसऊ अईयारो कऊ तस्सखमासमणो पड़िक्कमामि नन्दामि गरिहामि अप्पाणं वोस रामि ६ इति वन्दना ३ आवस्सकका, हिवे चौथो पड़िक्कमणा आवस्सक कहनो ॥ इच्छाकारेण सन्दिसह भगवन दिवसियं

पडिक्कमणो ठाएमि इच्छं ठाएमि नाण दंशन चारित्र तप अतीचार चिंतवनार्थं करेमि काउसग्गं ७॥ नवकार करेमि-भन्ते इच्छामिठामि काउसग्गं जोमे देवसियंमि अइयार कऊ काइयो वाईयो माणसिऊ उसत्तो अम्मगो अकप्पो अकरणिज्जो दूज्झायो दुव्विंतीऊ अणायारो अणिच्छियव्वो आसावग पावगो नाणं दंशने चरित्ता चरित्ते सुए सामाइये तिन्नं गुत्तीणं चउन्नं कसायाणं पञ्चन्नं मणुव्वयान्नं तिन्नं गुण व्वयाणं चउन्नं सिखावयाणं वारस विहस्स सावग धम्मस्स जं खण्डियं जं विराहीयं तस्स मिच्छामी दुक्कडं १० तस्सुत्तरी, ८नवकार काउ सग्ग, पछै पारि,नमो अरिहन्ताणं,लोगस्स उज्जोयग्गरे॥ पछै, २वार वडी वन्दना देणी ॥ पछै आसण छोड़कर आलोयणा ऊभा केहणी॥ इच्छाकारेण संदिहस्सह भगवन देवसीयं आलो यणं आलोएमि ज्ञानकै विषै दरशनरै विषे चारितनै विषै तपनै विषै वीर्यनै विषे अतिक्रर्म वितीकर्म अतिचार अनाचार कोई दिवसकै विषै दोष लागो होयते मिच्छामि दुक्कडं १एकप्रकारको असञ्जम सेव्यो होय दिवसकै विषै तेमि० दोय प्रकारना रागनै द्वेष कीधा होय तेमि० दोय परकारना संसारना जीव तृस अनै थावर विराधीया हुवै ते मिछा० तीनदण्ड मनदण्ड वचनदण्ड कायदंड एतीन दण्ड मांहे कोई दण्ड सेव्यो होय ते मि० तीन गुप्त मनगुप्त कायगुप्त वचनगुप्त तीनगुप्त मांहे कोई गुप्त कीधी

न होय ते मि० तीन विराधना ज्ञानविराधना दरसन विराधना चारित विराधना तिन विराधना मांहे कोई विराधना कीधी होय ते दिवसीके वीसे मि० च्यार कषाय क्रोध मांन माया लोभ च्यार कषाय मांहे कोई कषाय सेवी होयते मि० च्यार ध्यान आरत ध्यान रुद्र ध्यान धर्म ध्यान सुकल ध्यान च्यार ध्यान मांहे कोई दुर ध्यान ध्यायो होय तें मि० च्यार कथा राज कथा देस कथा स्त्री कथा भत्ती कथा च्यार कथा मांहे कोई कथा कीधी होय तेमि० पांच ईन्द्रि श्रोत्रइन्द्रि चक्षुइन्द्रि घ्राणेन्द्रि रसेन्द्री स्परसेन्द्री पांच ईन्द्रि मांहे कोई इन्द्रि मोकली मेली होयते मि० पांच प्रमाद, मद्यं विसय कसाया निद्रा विघाय पञ्च मे भणीया, ए ए पञ्च पमाया जीवा पाडंती संसारे १ पांच प्रमाद मांहे कोई प्रमाद सेव्यो होय ते मि० छ काय पृथिवी काय अप काय तेउ काय वायु काय वनसपती काय तिस काय छ काय मांहे कोइ काय विराधी होयते मि० छ लेस्या किसन लेस्या नील लेस्या कापोत लेस्या तेजो लेस्या पदम लेस्या सुकल लेस्या छ लेस्या मांहे कोई पाडूवी लेस्या ध्याई होयते मि० सातभय ईहलोक भय परलोक भय आदान भय अकस्मात भय आजीविका भय मरणका भय अ सलाका भय ए सात भय मांहे कोई भय कीधो होयते मि० सात कु विसन, दूतञ्च मांसञ्च सुराच वेश्या पापार्द्ध चोरी

परदार सेवा एतानि सप्त व्यसनानि लोके, घोरातिघोरं नरके पतंति १ सात कुविसन मांहे कोई कुविसन सेव्यो हुवैते दि॰ मि॰। आठ मद। जाति मद कुल मद बल मद रूप मद तप मद लाभ मद श्रुत मद ऐश्वर्य मद आठ मद मांहे कोई मद कीधो होयते मि॰ आठ कर्म ज्ञानावरणी दरसनावरणी वेदनी मोहनी आऊखो नाम कर्म गोत्र कर्म अन्तराय आठ कर्मरी एकसो अठावन प्रकृति मांहे कोई असुभ प्रकृति बांधी होय ते मि॰ नवतत्व। जीवतत्व अजीवतत्व पुण्यतत्व पाप तत्व आश्रवतत्व सम्वरतत्व निरजरातत्व बंधतत्व मोक्षतत्व ए नवतत्व मांहे कोई तत्व सूधो सरदह्यो न होय ते मि॰ नव नियाणा निवंधन नारीनर सुर अपव्वियार पव्वियारतं सदवृत्तं दरिदत्तञ्च चइज्जइ नव नीयाणाइं १ नवनियाणा माहे कोई नियाणो कीधो होयते दि॰ मि॰ दसप्रकार रो मिथ्यात्व धम्मे अधमा सन्ना अधम्मे धम्म सन्ना असाहू साहू सन्ना साहू असाहू सन्ना अजीवे जीवसन्ना जिवे अजीवसन्ना अमुत्ते मुत्तसन्ना मुत्ते अमुत्त सन्ना उमग्गे मगा सन्ना मग्गे उमग्गसन्ना ए दशविध मिथ्यात्व मांहे कोई मिथ्यात्व सेव्यो होयते मि॰ ईग्यारे प्रतिमा श्रावकनी दंसण वय सामाइ पोसह पमाय बम्भ सचित्तं आरम्भ पेसउ दिट्टं वज्जीय समण भूइये ईग्यारे प्रतिमा श्रावकनी सूधी सरदही न होय ते दि॰ मि॰ ईग्यारे अङ्ग आचारङ्ग १ सुयगडां

ग २ ठाणांग ३ समवायाङ्ग ४ भगवति ५ ज्ञाता धर्मकथा ६ उपासग दशाङ्ग ७ अन्तगढ़ ८ अणुत्तरोववाई ९ प्रश्न व्या कर्ण १० विपाकसूत्र ११ ईग्यारे अङ्गमाहे कोई अङ्ग सुधो सरधो न हुवेतो दिवसीकै विषै तस मिच्छामि दुक्कडं १ ॥ बारै व्रत श्रावकना पांच अणुव्रत तीन गुणव्रत च्यार सिक्षा व्रत बारे व्रत श्रावकना सूधा सरदह्या न होयत मि० बारै उपाङ्ग उववाई राय पसेणी जीवाभीगम पन्नवणा जंबुद्वीप पन्नती चन्द पन्नती सूरपन्नती निरावली कप्पीया कप्पवडंसिया पुप्फीया पुप्प चूलीया वन्निदशा बारै उपाङ्ग माहै कोई उपाङ्ग सुधो सरदह्यो न होयते मि० तेरह काठीया आलस मोह अवन्नथंभा कोहा पम्माय कवणिता भय सोग अनियाणा विषय कुतुहला रमणा १ तेरह काठीया माहे कोई धरम करतां काठीयो आडो आयां होय ते मि० चवदह नेम ॥ सचित्त दव्व विगई पाणह, तंबोल वच्छ कुसमेसु वाहण सयण विलेवण अवंभ दिसि णाण भत्तेसु १ चवदह नेम लेने चितारया न होयते मि० पनरह कर मा दाण ईङ्गाल कम्मे वणकम्मे साडी कम्मे भाडीकम्मे फोडी कम्मं दन्त वणिज्जे लख्ख वणिज्जे रस वणिज्जे केस वणिज्जे विस वणिज्जे जन्त पिलण कम्मे निलञ्छन कम्मै दव दावणि या सरदह तलाव परिसोसणीया असञ्जति जन पोसणिया पनरे करमादान मांहि कोई दूषण लागो होय ते मि० सोळै

कषायरी चोकडी च्यार क्रोधरी च्यार मानकी च्यार मायारी चार लोभकी सोलह कषायकी चोकडी मांहे कांई बंध पाड्यो होयते मि० सतरे प्रकारे सञ्जम पृथ्वी काय सञ्जमे अपकाय सञ्जमे तेउ काय सञ्जमे वाउकाय सञ्जमे वनस्पतिकाय सञ्जमे बेंइंद्रि सञ्जमे तेरिंद्री सञ्जमे चोरिंद्री सञ्जमे पञ्चेंद्रि सञ्जमे अजीव सञ्जमे पेहा सञ्जमे अपेहा सञ्जमे पमज्जणा सञ्जमे पारिठावणिया सञ्जमे मण सञ्जमे वय सञ्जमे काय सञ्जमे सतरे प्रकारे सञ्जम मांहे कांई असञ्जम सेव्यो हुवे ते दि० मि० ॥ अठारे पापस्थान प्राणातिपात मृषावाद अदत्तादान मैथुन परिग्रह क्रोध मान माया लोभ राग द्वेष कलह अभ्याख्यान पैशुन रति अरति परपरवाद माया मोस मिथ्या दंसन सल्लंय अठारे पाप स्थान मांहे कोई सेव्यो होय सेवायो होय सेवतां प्रते भलो करि जाण्यो होय ते दिवसके विषय त्रिविध २ करि ते मिच्छामी दुक्कडं ॥ इति श्रीआलोयन विधि ॥

पीछे आसन प्रमार्जि कर उभो थको इच्छं आलोयेमि ईच्छामि ठामि काउसग्गं पछे सव्व सव्व देवसियं दुच्चिन्तियं दुब्भासियं दुच्चिट्ठियं अतिचार श्रावक सूत्रं भणायमि पछे उकडु नीचे बैस कर नवकार० करेमि भन्ते क० चत्तारि मङ्गल अरिहन्ता मङ्गलं सिद्धा मङ्गलं साहु मङ्गलं केवली पन्नत्तो धम्मो मङ्गलं चत्तारि लोगुत्तमा अरिहन्ता लो० सिद्धा लो०

साहु लो० केवली पन्नत्तो धम्मो लोगुत्तमा, चत्तारि सरणं पवज्जामि, साहू सरणं पवज्जामि, केवली पन्नतो धम्मो सरणं पवज्जामि, इच्छामि ठामि काउसग्गं नवकार० ॥ वन्देत्तु सव्व सिद्धे धम्मायरिएअ, सव्व साहूअ, इच्छामि पडिक्कमिउं सावग धम्मा ईआरस १ जोमे वया इयारो, नाणे तह दंसणे चरित्तेय, सु हु मोअ बायरोवा, तं निन्दे तञ्च गरिहामि २ दुविहे परिग्गहमि, सावज्जे वहु विहेय आरम्भे, कारावणे अकरणे पडिक्कमे देवसियं सव्वं ३ जं वद्ध मिंदि एहिं चउहिं कसाएहिं अप्प सथ्थेहिं रागेणव दोसेणव तं निन्दे तञ्च गरि हामि ४ आगमणे निग्गमणे ठाणे चंकमणे अणाभोगे अभि उगे अनिउगे, पडि० ५ सङ्का कङ्ख विगञ्छा, पसंसतह सन्थवो कुलिङ्गीसु, सम्मत्तस ईयारे पडि० ६ छ काय समारम्भे, पयणे पया वणेअ जेदोसा अतट्ठा य परट्ठा उभयट्ठा चेव तं निंदे ७ पञ्चन्हं मणुव्वयाणं गुणव्वयाणंच तिन्न मइयारे सिक्खा णञ्च चउण्हं पडि० ८ पढमे अणुव्वयंमि थूलग पाणाइ वाय विरईओ आयरिय मप्प सत्थे ईत्थ पमाय पसङ्गेणं९ वहवंध छवि च्छेये अईभारे भत्तपाण वुत्थेए पढमं वयस्स ईयारे पडि १० वीए अणु व्वयंमी परि थुलग अलिय वयण विरईओ, आयरिय मप्प सत्थे इत्थ पमाय प्पसङ्गेण ११ सहस्सा रहस्स दारे मोसु वए सेय कुड लेहेय वीअ वयस्स इयारे पडि० १२

तईए अणुव्वयंमि थलग पर दव्व हरण विरइओ आयरिअ मप्प सत्थे इत्थं पमाय प्पसङ्गेणं प० १३ तेना हड़ प्पउगं तप्पड़ि रूवे विरुद्ध गमणेय क्‌ड़ तुल्ले कूड़माणे पड़ि० १४ चउत्थे अणुव्वयंमि निच्चं परदार गमण विरईओ आयरिअ मप्पसत्थेईत्थं प० १५ अपरिग्गहिया इत्तर अणङ्ग वीवाह तिव्व अणुरागे चउत्थे वयस्स इयारे पड़ि० १६ इत्तो अणुव्वय पञ्चमंमि आयरिअ मप्पसत्थंमि परिमाण परिच्छेए इत्थ० १७ धन धन्न खित्त वत्थु रुप्प सुवन्नेय कुविय परिमाणे दुप्पय चउप्पयंमि पडि० १८ गमणस्सउ परिमाणे दिसासु उड्ढं अहेय तिरियञ्च वुड्ढि सई अन्तरद्धा पढ़मंमि गुणव्वये निंदे १९ मज्जंमिय मंसंमिय पुप्फे फलेय गन्धमल्लेय उवभोग परिभोगे वीयंमि गुणव्वए निंदे २० सचित्ते पड़िवद्धे अप्पोल दुप्पोलिअंच आहारे तुच्छो सहि भक्खणया पड़ि० २१ इङ्गाली वण साड़ी भाड़ी फोड़ी सु वज्जए कम्मं वणिज्जञ्चेव दन्त लक्ख रस केस विस वि-सयं २२ एवं खुव्वंत पीलण कम्मं निल्लञ्छणंच दव दाणं सरदह तलाव सोसं, असई पोसञ्च वज्जिज्जा २३ सत्थग्गि मूसल जन्तग तण कट्ठ मन्त मूल भेसिज्जे, दिण्णे दिवा वए वा पड़ि० २४ ण्हाणुवट्ठण वन्नग विलेवणे सद्द रूव रस गन्धे वत्थासण आभरणे पडि० २५ कंदप्पे कुक्कइए मोहरि अहि गरण भोग अइरित्ते दंडग्मि अणट्ठाए तईयंमि गुणव्वए निंदे

२६ तिविहे दुप्पणिहाणे अणवट्ठाणे तहासइ विहूणे सामाइय वितह कए पढमे सिक्खावए निंदे २७ आणवणे पेसवणे सद्दे रूवेअ पुग्गलक्खेवे देसावगासियंमि बीए सिक्खा वए निंदे २८ सन्थारुच्चार विही पमाय तह चेव भोयणा भोए पोसह विहि विवरीए तइये सिक्खा वए निंदे २९ सच्चिते निक्खिवणे पिहणेव वए समच्छरे चेव कालाई क्कम दाणे चउत्थे सिक्खा वए निंदे ३० सुहिएसुअ दुहिएसुअ जा मे अस्सञ्जएसु अणु कम्पा रागेणव दोसेणवा तं निंदे तञ्च गरिहामि ३१ साहू सु सम्विभागो नकऊ तव चरण करण गुत्तासु सन्ते फासुय दाणे तं निंदे तञ्च गरिहामि ३२ इहलोए परलोए जीविअ मरणेअ आसं सप्पओगे पञ्चविहो अईयारो मा मुझं हुज्ज मरणन्ते ३३ काएण काईयस्स पडिक्कमे वाइअस्स वायाए मणसा माणसियस्स सव्वस्स वया ईआरस्स ३४ वन्दण वय सिक्षा गारवेसु सन्ना कसाय दण्डेसु गुत्तीसुअ समिईसुअ जो अईयारो तं निंदे ३५ सम्मदिट्ठी जीवो जई विहु पावं समा यरे किंचि अप्पोसि होई वन्धो जेन ननिद्धं धसं कुणई ३६ तम्पिहु सपडिक्कमणं सप्परिया वंश उत्तर गुणञ्च खिप्पं उवसामेई वाहिव्व सु सिक्खिउ विज्जो ३७ जहाविस कुट्ठ गयं मन्त मूल विसारया विज्जाहणंत मन्तेहि तोतं हवइ नि-व्विसं ३८ एवं अट्ठविहं कम्मं राग दोस समज्जिय आलोयं

तोय निंदंतो खिप्पं हणई सुसावओ ३९ कय पावा वि मणुस्सो आलोइय निंदीअ गुरु समासे होइ अइरेगल हुओ ओहरि अ भरुव्व भार वहो ४० आवस्सएण ए एण सावओ जई वि वहुरओ होइ दुक्खाण मन्त किरिअं काही अचिरेण कालेण ४१ आलोयणा वहु विहा नय सम्भरिआ पड़िक्कमणं काले मूल गुण उत्तर गुणे तं निंदे तञ्च गरिहामि ४२ तस्स धम्म स्स केवलि पण्णतस्स अब्भुट्ठिओमि आराहणाए विरओमि विराहणाए तिविहेण पड़िक्कन्तो वन्दामि जिणे चउव्विसं ४३ जावन्ति चेइआइ उड्ढेअ अहेअ तिरिअ लोएअ सव्वाइं ताइं वन्दे इह सन्तो तत्थ सन्ताइं ४४ (भगवन्) जावन्ति केवि साहू भरहे रवए महाविदेहेअ सव्वेसि तेसि पणओ तिविहे ण तिदण्ड विरिआणं ४५ चिर सञ्चिय पाव पणासणिए भव सय सहस्स महणोए चउविस जिण विणिग्गय कहाइं वउलन्तु मे दीअहा ४६ मम मङ्गल मरिहन्ता सिद्धा साहू सुअञ्च धम्मोअ सम्मद्दिट्ठी देवा दिंतु समाहिंच वोहिंच ४७ पड़ि सिद्धाणं करणे किच्चाण मकरण पड़िक्कमणं असद्दहणेअ तहा विवरीअ परूवणाएअ ४८ खामेमि सव्व जीवे सव्वे जीवा खम न्तुमे मित्तीमे सव्वभुएसु वेरं मज्झ नके नइ ४९ एवमहं आलो इअ निंदिअ गरहिअ दुगञ्छियं सम्मं तिविहेण पड़िक्कन्तो वन्दामि जिणे चउव्वीसं ५० ॥ इतिश्रीवन्दितु सम्पूर्ण ॥

" इच्छामि खमासमणो" इत्यादि वड़ी वन्दना २ वार देणी पछे खामणा देणी इच्छाकारेण सन्दिस्सह भगवन् अभुट्ठिअंमि अभिन्तर देवसियं खामेमि इच्छं खामेमि देवसियं जं किञ्च अपत्तियं परपत्तियं भत्ते पाणे विणए वियावच्चे अलावे संलावे उच्चासणे समासणे अन्तर भासाए उवरि भासाए जं किञ्च मुज्झ विणय परिहीणं सुहुमम्वा बायरंवा तुभ्भे जाणह अहं न जाणामि तस्स मिच्छामी दुक्कड़ं १ पछै सर्वनै खमाय कर उभो होयनै सात लाख पृथिवी काय सात लाख अप्पकाय सात लाख तेउकाय सात लाख वाउ काय दस लाख प्रत्यैक बनस्पती काय चौदह लाख अनन्त काय बेलाख बेइन्द्रि बेलाख तेइन्द्रि बेलाख चौरिंद्री च्यार लाख नारकी च्यार लाख देवता च्यार लाख तिर्यञ्च पंचेंद्रि चौदह लाख मनुष्यनी जाति एवङ्कार च्यार गति चौरासी लाख जीवा जोनि सूक्ष्म बादर गर्भज समुर्छिम पर्याप्ता अपर्याप्ता सन्नी असन्नी जलचर स्थलचर खेचर उरचर भुजपर जे कोई जीव अभिहीया वत्तीया लेसीया सङ्घाया सङ्घट्टीया परावीया किलामिया उदवीया ठाणा उट्ठाण सङ्कामिया जीवीआओ विवरोविया तस्स मिच्छामी दुक्कडं १ अठारे लाख चोविस हजार एकसो विस भूज्जो २ करि तस्स मिच्छामी दुक्कडं १ भगवनजी आयरिए उवज्झाए सीसे सामिए कुल

गणिए जेमे कया कसाया सव्वं तिविहेण खामेमि १ सव्वस्स समण सङ्घस्स भगवन् अञ्जलि करे सीसे सव्व खमावइत्ता खामेमि सव्वस्स अहंपि २ सव्वस्स जीव रासिस्स भावउ धम्मो निहिय निहिय चित्तो सव्वं जीव खमावइत्ता खामेमि सव्वस्सईहंपि ३ इति प्रतिक्रमण चतुर्थ आवस्सक इच्छाकारेण सन्देह सह भगवन् ज्ञान दर्सण चारित तप अतिचार विसोधनार्थे करेमि काउसग्गं नवकार ॥ करेमि भन्ते० ॥ इच्छामि ठामि काउसग्गं तस्सुत्तरी० च्यार लोगस्सरो काउसग्गं अथवा १६ नवकारको काउसग्ग पछै काउसग्ग पारि प्रगट पणै नमो अरिहन्ताणं एसा कह कर लोगस्स उज्झोयगरे पछै २ वार वड़ी वन्दणा देणी इति काउसग्ग ५मो आवस्सक पछै उभो होयनै रयणि पच्चक्खाण करै रयणि पच्चक्खाण ॥ चउविहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अन्नत्थणा भोगेणं सहसा गारेणं महत्तरा गारेणं सव्व समाई वत्तिया गारेणं वोसिरामी १ सामायिक १ चउविसस्थो २ वन्दणा ३ पड़िक्कमणो ४ काउसग्ग ५ पच्चक्खाण ६ खड़ावस्सक नै विषै कोई दोस लागो होय ते दिवसकै विषै तस्स मिच्छामि दुक्कडं २ नमो खमा समणाणं गोयमाणेणं महामुणिणं थुई थुइ भणामि निस्सही नमो त्थुणं अरिहन्ताणं० पछै पालखी आसण वैस कर सर्व्व तिर्थंकर

पांच पद कुं वंदणा देणी ॥ आदिनाथजी १ अजितनाथ जी २ सम्भवनाथजी ३ अभिनन्दनजी ४ सुमतनाथजी ५ पदमप्रभुजी ६ सुपारसनाथजी ७ चन्दाप्रभुजी ८ सुविधनाथ जी ९ सीतलनाथजी १० श्रीश्रेयांसनाथजी ११ वासपूजजी १२ विमलनाथजी १३ अनन्तनाथजी १४ धर्मनाथजी १५ शान्तिनाथजी १६ कुंथुनाथजी १७ अरनाथजी १८ मल्लि-नाथजी १९ मुनिसुव्रतजी २० नमिनाथजी २१ नेमनाथजी २२ पार्श्वनाथजी २३ महावीर स्वामिजी २४ एते चउविंशति तीर्थङ्करा शांता शांतिकरा भवन्तु सीमन्धर स्वामी १ युग-मन्धिर स्वामी २ वाहु ३ सुवाहु ४ सुजात ५ स्वयंप्रभु ६ ऋषभानन ७ अनन्त वीर्य ८ सूर प्रभु ९ विसाल १० वज्रधर ११ चन्द्रानन १२ चन्द्रवाहु १३ भुजङ्गम १४ ईश्वर १५ नेमी श्वर १६ वीरसेण १७ महाभद्र १८ देवयस १९ अजित जिन २० इति वीसवेहरमान नाम ॥ इन्द्रभुति १ अग्निभूति २ वायुभूति ३ व्यक्त ४ सुधर्मा ५ माण्डित ६ मौर्यपुत ७ अक-म्पित ८ अचलभ्राता ९ मेत्तार्य १० प्रभास ११ ए इग्यारे गणधर नाम ॥ अथ पांचपदांकी वन्दणा लिख्यते ॥ पेंहलापद मै जघन्न तो वीस तीर्थङ्कर उत्कृष्टा एकसो साठ तथा सित्तर तीर्थङ्कर तथा दोयसे चालीस अथवा च्यारसे अस्सी तीर्थङ्कर चौतिस अतिसय पैंतिस वांणी कर विराजमान एक हजार

आठ लक्खणका धरण हार चउसट्ठ इंद्रका पूजनीक बारे गुणे करि विराजमान अनन्तो ज्ञान अनन्तो दर्शन अनन्तो बल अनन्त सुख देवध्वनि भाव मण्डल फटक सिंहासण असोक वृक्ष पुष्प बृष्टि देव दुन्दभी चमर दुलय तिन छत्र धरे जघन्यतो दोय कोड़ केवली उत्कृष्टा नव कोड़ केवली केवल ज्ञान केवल दर्शनरा धरणहार सर्व्व द्रव्य क्षेत्र काल भावरा सर्व्व वस्तु जांणण हार जिणां महा पुरसांजीने हाथ जोड़ मांन छोड़ नीचो सीस नमाय एक हजार आठ वार हमारी वन्दणा नमस्कार होयज्यो तिखुत्तो अयाहिणं पयाहिणं वन्दामि नमंसामि सक्कारेमि सम्माणेमि कल्लाणं मङ्गलं देवयं चेवयं पज्जुवासामि मत्थेण वन्दामि १ दुजा पदमै पनरै भेदै सिद्धजी सीधा आठ कर्म्म खपाय मोक्ष पहुता जठै जन्म नहीं जरा नही रोग नही सोग नही कर्म नही काया नही मोह नही माया नही चाकर नही ठाकुर नहीं आठ गुणे करि विराजमान अनन्तो ज्ञान अनन्तो दर्सन अनन्तो सुखा माहे सुख क्षायक समकित सहित अटल अवघांणा अमूर्त्ति पणो अगुरु लघु पणो अनन्त बल सहित ज्यां सिद्ध महाराजने मान छोड़ हाथ जोड़ नीचो सीस नमाय एक हजार आठ वार वन्दणा नमस्कार होज्यो २ तीजा पदमै आचारजजी छत्तीस गुणे

करि विराजमान पांच इन्द्री जीते नव वाड़ ब्रह्मचर्य्य पाले च्यार कषाय टाले पांच महाव्रत पाले पांच आचार पाले पांचै सुमति सुमता तीण गुप्ते गुप्ता आठ सम्पदा सहित जिहां महा पुरसांने वन्दणा नमस्कार होयज्यो ३ चौथे पद उपाध्यायजी पचीस गुणे करि विराजमान इग्यारे अङ्ग बारै उपाङ्ग पोते भणे औरां नै भणावे चउदे पूर्व्वरा पारगामी जिहां महा पुरषां नै हमारी एक हजार आठ वार वन्दणा नमस्कार होज्यो ४ पांचमां पदके विषे पोतारा धर्माचार्यजी साची श्रधा साची प्ररूपणा करे पञ्च महाव्रत चोखा पालै उणां साधांने आदि लेई नै जघण्य पदमे दोय हजार कोड़ि साधु उत्कृष्टा नव हजार कोड़ साधु पांच भरत पांच ऐरावत पांच महा विदेह पांच पनरे क्षेत्रमे जयवन्ता विचरै साधुजी महाराज कैंवा वै छै सतावीस गुणे करि विराजमान पांच महाव्रत पालै पांच इन्द्री जीते च्यार कषाय टाले भाव शुच करण शुच योग शुच मन समै धारणा वचन समै धारणा काया समै धारणा णांण सम्पन्ना दर्सण सम्पन्ना चारित्र सम्पन्ना क्षमावन्त वैराग्यवन्त वेदना आए वेदना सहे मरणान्त उपसर्ग सहे वस्त्र पात्र आहार थांनक निरदोस भोगवे बावीस परिसह सहै नव वाड़ि सहित सील पालै दस

प्रकार को यति धर्म पालै बैयालीस दूखण रहित सुध आहार पाणी भोगवै भगवानकी आज्ञा सहित चालै जीहां महापुरुसानै हमारी एक हजार आठ वार वन्दणा नमस्कार होज्यो तिखुत्तो० ५ इति पांच पदकी वन्दणा ॥

पछै पद्मासण वैस कर आज्ञा स्वामीजी एक नवकार॥ पछै स्तवन कहणो ॥ मङ्गल कर जिन राय सुणौ चउवीस तीर्थङ्कर नाम सुणौ ॥ श्रीआदिश्वर जग आदि करो। श्रीअजित नाथ अव पाप हरो ॥ १ ॥ सम्भव स्वामी सुख करणा। अभिनन्दन जिनवर दुख हरणा॥ श्रीसुमति नाथ द्यो सुमति सदा। श्रीपदम् प्रभु प्रणमौ आनन्दा ॥ २ ॥ श्रीसुपारस आसा पूरो। चन्दा प्रभु अशुभ करम चूरो ॥ सुविधिनाथ सीतल गावो। श्रेयांस एकादश मन ध्यावो ॥ ३ ॥ वासुपूज्य विमला स्वामी। श्री अनन्त धर्म शिव जिन गामी॥ शान्ति कुंथु अर जिणराया। मल्लि मुनि सुव्रत सुखदाया ॥ ४ ॥ नेमि पास वंदुं पाया। श्रीमहावीर जिना गुण गाया ॥ ए जिनवर जे मन ध्यावे। ते ऋद्धि सिद्धि सुख पावे ॥ ५ ॥ कलस० इम चउवीस जिनवर। कल्प तरुवर सुख सागर सेवीये। भव जलधि तारण कुगति वारण। जगत गुरु आराहिए ॥ नागोरी गच्छ श्री आसकरण गच्छपति। दूदाजी दुख दूरए ॥ देवाधि देव

दयाल थुनतां । श्रीसङ्घमे मङ्गल पुरए ॥ इत्ति श्री चतुर्विंशति जिन स्तवनम् ॥

पछै तावकायं ठाणेणं मुणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसरामि पछै च्यार लोगस्सरो काउसग्ग वा अथवा सोल नवकारको काउसग्ग करणो पछै काउसग्ग पारी प्रगट पणै १ लोगस्स कह कर नीचे वैस कर जी स्वामी ऐसा कहणा । पछै गुरुजी नही हुवै तो पांते मङ्गलीक कहै० नवकार० धम्मो मङ्गल मुक्किट्ठं अहिंसा सञ्जमो तवो देवा वित्तं नमं सन्ति जस्स धम्मे सयामणो १ जहा दुम्मस्स पुप्फेसु भमरो आवियइ रसं नय पुप्फं किलामेई सोयै पिणेई अप्पयं २ ए मेए समणा वुत्ता जे लोए सन्ति साहुणो विहङ्ग माव. पुप्फेसु दाण भत्ते सणे रया ३ वयं च वित्तिं लब्भामो नय कोई उवहाम्मई अहा गड़े सुरियन्ते पुप्फेसु भमरो जहा ४ महुकार समाबुद्धा जे भवन्ति अणस्सिया नाणा पिंडया दन्ता तेण वुच्चंति साहुणो तिवेमि ५ इति दुम्म पुप्फिया ज्झयणं पढमं सम्मत्तं ॥ सर्व्व मंगल मांगल्यं सर्व कल्याण कारणं प्रधानं सर्व्व धर्म्माणां जैनं जयति सासनं १ पछै एक सिज्झाय कहणी पनरै दिनरी पनरै सिज्झाय कहणी कदाच्चित सुख पाठ नही आवै तो सुख कारण तो मुख पाठ करणी रोज सुख कारण कहणी और

सिज्झाय आवै तो सुख कारण नही कहणी ॥

सुख कारण भवियन । समरो नित नवकार ॥ जिण सासण आगम चवदह पूरब सार । इण मन्त्रनी महिमा कहतां न लांउ पार, सुर तरु जिम चिंतित वञ्छित फल दातार ॥ १॥ सुर दानव मानव सेवकरे करजोड़ी भूमण्डल विचरै तारै भवियण कोड़ि, सुर छन्दे विलसै अतिशय जासु अनन्त पहिलै पद नमियै अरिगञ्जन अरिहन्त ॥ २ ॥ जै पनरै भेदे सिद्ध थया भगवन्त पञ्चमी गति पहुता अष्ट करम करि अंत, कल अकल सरूपी पञ्चानंतक देह जिनवर पाय प्रणमुं बीजै पद वलि एह ॥३॥ गछ भार धुरं धर सुंदर ससिहर सोम कर सारण वारण गुण छत्तीसे थोम । श्रुतजांण शिरोमणि सागर जेम गम्भीर तीजे, पद नमियै आचारीज गिरिधीर ॥ ४ ॥ श्रुतधर गुणआगर सुत्र भणावै सार तप विध सञ्जोगं भाषै अरथ विचार, मुनिवर गुणजुत्ता ते कहियै उवझाय, चौथे पद नमियै अहनिस तेहना पाय ॥५॥ पञ्चाश्रव टाले पाले पञ्च आचार तपसी गुणधारी वारि विषय विकार, तृस थावर पीहर लोक माहे जे साध त्रिविधे ते प्रणमुं परमारथ गुण लाध ॥ ६ ॥ अरि करि हरि सायण डाइन भूत वैताल सब पाप पणासे थासे मंगल माल, इण समरयां सङ्कट दूर टलै ततकाल

जंपै जिण गुण प्रभु सुरवर सिस रसाल ७ इति श्री नवकार स्वाध्याय सम्पूर्ण ॥

पढ्यो मंत्र नवकार ताप तेजरो निवारै पढ़ो मंत्र नवकार दुख दालिद्र टालै, पढ़ो मंत्र नवकार हुवै कायर नर सूरा पढ़ो मंत्र नवकार हुवै भण्डार भर पूरा, पढ़ो मंत्र नवकार मोक्ष मार्ग निहालै, जपियै मंत्र श्रीजिनवर तणो दिन दिन जस अधिको वधै नवकार मंत्र पढ्या पछै और मंत्र प्राणी काई पढ़े ॥ १ ॥ पहिलो मंगलीक कहुं हिवै एह, उत्तम टालै सयल संदेह ॥ अरिहंत अरि जेहनै नहीं कोय सो सरणो स्वामी मुझ होय १ मंगलीक वीजो मनमै धरो लोक माहि छै उत्तम खरो। सिद्ध गया जे सिद्ध अनंत सो सरणो स्वामी हीय धरंत २ मंगलीक चोलुं हिवै तरती लोक माहि छै उत्तम यती। साधु सरण भवियण अणुसरो जिम भव सायर दुत्तर तरो ३ मंगलीक चौथो अवधार केवली भाषित धर्म सम्भाल। टालै रोग सोग भय मरण साचो श्रीजिन धर्म्म नो सरण ४ च्यारे सरण करै नर जेह भव सायर डुवै नहि तेह। सकल कर्म नो आणै अंत मोक्ष तणा सुख लहै अनन्त ५ तीन काल तिहुं जोगै करै ऊंची पदवी ते नरवरे। विजय भद्र कवियण इम कहै गरभावास जीवड़ो नवि लहै ॥ इति श्रीमांगलिक सुखम् ॥

पछै नवकार वाली गुणनी स्तवन सिज्झाय गावणा। कदाचित प्रतिक्रमण करतां सामायिक काल दोय घड़ी आय जावै तो सामायिक पार लेणी॥ मुहपती पडलेई कर खड़ा होय नै नवकार कहणा॰ इच्छाकारेण सन्दिसह भगवान् इरिया वहि पडिक्कमामि॰तस्सुत्तरी॰ ८ नवकारका काउसग्ग पारी नमो अरिहन्ताणं पछै लोगस्स उज्जोय गरे पछै नीचै वैस कर नमोत्थुणं॰ पछै पारणकी पाटी कहै॰॥ फासियं पालियं चैव सोहीयं तीरीयं तहा कित्तियं आराहियं चैव पर समंमि पइयत्तं॰ १। जं न फासियं न पालीयं न सोहीयं न तीरीयं न आराहीयं दश मनरा दश वचनरा वारे कायरा वत्तिस दोषा माहै कोई दोष लागो होय ते दिवसी सामायिक विषे तस्स मिच्छामि दुक्कडं नवमो सामायिक व्रत माहै कोई अतिचार लागो होय ते आलेवुं मन वचन कायका जोग माडवा ध्यान प्रवरताया हुवै सामायिक माहै समता कीधी नही हुवै अण पुगीया पारि हुवै पारता विसारी हुवै विधै करतां अविध असातणा हुई हुवै ते मिच्छामि दुक्कडं १ पछै तिन नवकार गुणनो इति सामायिक पारणा विधि सम्पूरण॥ इति श्रीषट्टावस्सक विधि देवसी, प्रतिक्रमण विधि सम्पूर्ण॥

प्रह उठीनै समरी जे हो (भवियण) मङ्गलीक सरणा

च्यार । आपद टाले सम्पदा हो ॥ भ० ॥ दौलत नो दातार हीयड़ै राखीजै हो ॥ भ०१ ॥ अरिहन्त सिद्ध साधां तणो हो ॥ भ० ॥ केवली भाष्यो धर्म । ए च्यारुं जपता थकां हो ॥ भ० ॥ टुटै आठु कर्म हो ॥ भ०२ ॥ ए च्यारुं सुख कारिया हो ॥ भ० ॥ ए च्यारुं मङ्गलीक ए च्यारुं उत्तम कह्या हो ॥ भ० ॥ ए च्यारुं तहतीक हो ॥ भ०३ ॥ गेलै घाटै चालन्ता हो ॥ भ० ॥ स्मरुं वारम्वार । गावां नगरां चालता हो ॥ भ० ॥ विघन निवारणहार हो ॥ भ०४ ॥ डाकन साकण भुतड़ा हो ॥ भ० ॥ सिंह चिता नै सूर ॥ वैरी दूसमण चोरढ़ा हो ॥ भ० ॥ रहै सदाई दूर हो ॥ भ० ५ ॥ सुख साता वरते घणी हो ॥ भ० ॥ जै ध्यावै नर नार पर भव जातां जीवनें हो ॥ भ० ॥ सरणांको आधार हो ॥ भ०६ म० ॥ राखो शरणा की आसता हो ॥ भ० ॥ नेड़ो नहीं आवै रोग । वरते आनन्द सुख सही हो ॥ भ० ॥ वाला तणो सञ्जोगही ॥ भ०७ ॥ निस दिन याकुं ध्यावतां हो ॥ भ० ॥ जीव तणे उधार । कुमी नहीं कोई वस्तुनी हो भ० ॥ याही जगमैं सार हो ॥ भ०८ ॥ मन चिन्ता मनोरथ फले हो ॥ भ० ॥ वरते कोड़ कल्याण । सुध मन करनै रमरंता हो ॥ भ० ॥ निश्चै पद निरवांण हो ॥ भ०९ ॥ ए सरणानै ध्यावतां हो ॥ भ० ॥ नाम तणो आधार । ए

श्रीरणाकी कीर्त्ति कही हो ॥ भ० ॥ ध्यावो मनह मझार ॥ ही ॥ सम्वत अठार बावने हो ॥ भ० ॥ पाली सेहर सुखकार ॥ श्रीऋषमल्ल इम विनवे हो ॥ भ० ॥ सुनज्यो बाल गोपाल ॥ भ० १० ॥ इति मङ्गलीक सरणा ॥

॥ अथ प्रतिक्रमणसिझाय लिख्यते ॥

करि पड़िकमणो भावसुं, दोय घड़ि शुभ ध्याण लालरे ॥ पर भव जातां जीवने, सम्बल साचो जाण लालरे ॥ १ ॥ करि पड़िकमणो भावसुं ॥ श्री मुख वीर समुच्चरे, श्रेणिक राय प्रतिबोध लालरे ॥ लाख खण्डी सोनातणी, दीये दिन प्रति दान लालरे ॥ २ ॥ करि पड़िकमणो भावसुं ॥ लाख वरस लग तेहने, इम दीये द्रव्य अपार लालरे ॥ इक सामायक नी तुल्य, नावे तेह लगार लालरे ॥ ३ ॥ करि पड़िकमणो भावसुं ॥ सामायक परसाद थी, लहीये अमर विमान लालरे ॥ धरम सिंह मुनिवर कहे, सुगति तणो ए निदान लालरे ॥ करि० ॥ इति

अथ अठार भार सिज्झाय।

जिन महावीर नमी चित चङ्गे रङ्गे दया दिल आणीरे ॥ भार अठार वनस्पति कहिये एहवी सगली वाणीरे ॥ १ ॥ जीव दया जतन करि पालो टालो विराधना एहनीरे ॥ चतुर पुरुष तिन भेद विचारी धारो जाति छे जेहनीरे ॥ २ ॥ तिन

अरब नई कोड़ि इक्यासी ऊपरि बारह लावोरे ॥ बहुत्तर सहसने नवसे सित्तर एतला आंक मिलावोरे ॥ ३॥ एतले आंके मांडी गणतां (३८११२७२९७०) मान कह्यो इक भारोरे ॥ एहवे अठारे भारे सघली वनस्पतिनो विचारोरे ॥ ४ ॥ नव नव फूल ग्रहीजै सघला जाते जेछे जुआरे ॥ ते सब जब कीजै इक ठामें चारह भारते हुआरे ॥ ५ ॥ जूआ २ लीजै जोई जेहने फल पत्र होई रे ॥ एहवी जाति आठ जाणनो भार मांने करि सोइरे ॥ ६ ॥ बेलि छे जे जातां वित्तारी गणीई ते सुविचारीरे ॥ भार कह्या षट ते सब लीना वासुदेव दिल धारीरे ॥ ७ ॥ एह अठार भार कहीजै वनस्पतीनी जातेरे ॥ एह संकलना नही सिद्धान्ते सुणीये प्रवें वातेरे ८ ॥ जे नरनारी धर्म्म विचारी सारी दया दिलधारीरे ॥ वारी विराधननी जे किरिपा सौभाग्यते तरया ते तारीरे ॥ ९ ॥ इति सिझाय ॥

॥ अथ कलियुग विनती लिख्यते ॥

॥ ढाल ॥ देखो भाई कलियुग आयौ दुनिया पलटी जायछे ॥ आंकणी ॥ तिन भवनका नाथ प्रभुजी ज्यानें भूल्या जायछे ॥ १॥ साधु मुनिश्वर तारें जगमें ज्यांका गुण निसरायछे ॥ तो पाखण्डी कपटी तापसीकी दुनी भगती करायछे ॥ २ ॥ जीव दया छै धरम शिरोमणि राग दोष

नहीं ल्यायछै ॥ दोणाठी मूंकी चोट धमुंका क्रोध किये गुगा जायछै ॥ ३ ॥ गायबाछुड़ा पूजैढांक भिज्यां नाज चढ़ायछै तौ रोस करे तब लठी मारे यौतो बड़ी अन्यायछै ॥ ४ ॥ आगै राजा परजा पालै चौथो बांटो खायछै। तो अब राजाकि लोभ बध्योछै मन मानै सो करायछै ॥५॥ नाहर बघेरा गैला रोके ज्यांको करे शिकारछै ॥ तो अब पशुजीव क्यां मारे घास तिना जो खायछै ॥ ६॥ आगै न्याव करे बाणिता कोई पष नहीं ल्यायछै॥ तो अब न्याव करेछै जे तो मतलब राख्या जायछै ॥ ७ ॥ धरम करमकी विरियां रुपिया खरचे नहीं लगायछै ॥ तो और अनेक कामके माहीं अधिको नाम वधायछै ॥ ८ ॥ वस्तु चढ़ावे देव गुरुके निरमायल हो जाय छै ॥ तो पाप दोषसुं डरपै नाहीं सोभी खाता जायछै ॥ ९ ॥ परको माल चोरीवा जावे परको खेत तुड़ायछै ॥ तौ गैला मारे मनुष सन्तावे नरकामें दुख पायछै ॥ १०॥ मात पिता सब पालेपोषे ज्यासुं जुदा रहायछै॥ तो कलहकारणी घरमें आवै कुलकी लाज गमायछै ॥ ११॥ अनजाण्या पानी को दूषण विध्वि वस्तु छुड़ायछै ॥ तो राती खावाको दोष घणोछै सो तो समझो नाही छै ॥ १२ ॥ देस परदेस फिरे गावामें ख्याल तमासे जायछै ॥ तो देहराकी दरशन करता आलस अधिको आयछै ॥ १३ ॥ चौमासामें इन्द्र देवता

वांछित जल बरषाइछे ॥ तो अब परजाकी नीति घटीछे मेह पणा तरसायछे ॥ १४ ॥ हीन जातिको विसवो दानो भला पुरुष नहीं खायछे ॥ तो अबतो ब्राह्मण जावे वान्या विनज करायछे ॥१५॥ आगे धोलो केश देखि करि तप करिवा उठि जायछे ॥ तो अबतो बुड़ा होवेछे सो फेर परणव्या जायछे ॥१६॥ गढ़रापति दौलत पाई खरचै नांहि लगारछे ॥ तो कष्ट घणी करि जोड़तो जोरावर ले जायछे ॥१७॥ लेत उधारा बल रूपइया लिखत पक्की लिखाय छे ॥ तो देता विरियां कपट विचार दगावाज अधिकायछे १८ ॥ परनारीको पाप घणाछे पुरुष परायो त्यागछे ॥ तो सील ब्रतणें खंडछे जो खोटी गतिमें जायछे ॥ १९ ॥ कन्या बड़ी सयानी करि करि बुढ़ाको परणायछे ॥ तो पूंजी लेता दाम चुकावे मीठा भोजन खायछे ॥२०॥ गाली गीतमें ख्याल तमासे रात्यों खड़ा रहायछे ॥ तो कथा धरमको चरचा सुनतां आंखा नींद भरि आयछे ॥२१॥ अवे जगत में भाङ्ग तमाखू सुंघे पीवे खायछे ॥ तो स्वामी यति सन्यासी जोगी एवी अमल नखायछे॥२२॥एकादशी करछे निरजल सोतो ब्रत फल पायछे ॥ तो भांति भांतिका स्वाद बनावे पेट सरचो फल जायछे ॥२३॥ ज्योंही को तो खावे पीवे ज्यासुं मड़ी कहायछे ॥ तो ज्यांइको गुण विसर जावे उलटो

वैर करायछै ॥२४॥ अब जीवकै क्रोध घणौ छै मान वड़ाइ गायछै ॥ तो लोभ घणौ करि कपट करिछै हरिया वृक्ष कटाय छै ॥२५॥ पूजा करतां जाप जपंतां मन थिरता नहीं पायछै तौ मौन धारकै माला फेर मनमें मती करायछै ॥ २६ ॥ विना अरथही झूठा बोलै कुड़ी साष भरायछै ॥ तो चुगली करिके गांव लुटावे दौदे आगि लगायछै ॥२७॥ वड़ा जीव कुं मारयां संती हत्यारो कहावायछै ॥ तो छोटा जीव हजारा मारै सो क्यो भूल्या जायछै ॥२८॥ राग द्वेषकुं छो ड़छै सो वैरागी सुखदायछै ॥ तो अब वैरागी भेक धारके सस्त्र बांधि लड़ायछै ॥ २९ ॥ पोथि पाना प्रभुकी मुरति पूजे सुगति वधायछै ॥ तौ भुखा मरतां वेचन जावे सारो नरक कमायछै ३० ॥ चोरी निन्द्या आछी लागै जुवा खेलवा जायछै ॥ तो ज्ञान गोटिकी सङ्गति वैठा घरका राड़ि करायछै ॥ ३१ ॥ जैसी रचना वरते जगमें तैसी जोड़ जुड़ायछै ॥ तो गावे देवा ब्रह्माचारी सुनतां आनन्द पायछै ॥ ३२ ॥ इति कलि- युगकी विनती सम्पूर्णम् ॥

अथ अईमत्ता सिझाय ।

वीर जिनेश्वर वांदी गौतम, गोचरिया सञ्चरिया । पिलासपुरी नगरीमें चाल्या घर घर आंगन फिरिया ॥१॥ आगे गहां पधारोजी लड्डू पाव धरीजे, लड्डू पाव धरीजे

हम पर कृपा कीजै ॥ आ० १ ॥ तिण अवसर अईमत्ता रमन्ता पग भमता मुनि दीठा । कञ्चन वरणी काया निरखी मनमें लागा मीठा ॥ आ० २ ॥ विनय करी अईमत्ता बोले किहां फिरो किरपाला । खरी दुपहरी पगां उघाड़ा, भमिया कैंइ कामा ॥ आ० ३ ॥ मधुर वचनसे मुनिवर बोल्या सुद्ध गवेषण कीजै । निरतिचार अणे निरदूषण घर घर भिक्षा लीजै ॥आ० ४॥ आवो आज हमारे आंगन, कहस्यो ते विध करस्यां । ज्यों ओहीनें जुगति करीनें, भावे भिक्षा देस्यां ॥ आ० ५॥ आंगु तईनें घर ले आया, आया मन आनंदे । अईमत्ता साथै गौतमनें, श्री देवी राणी वन्दे ॥ आ० ६ ॥ आज हमारे रयण चिन्तामणि मेह अमीरस वूठा । आज हमारे सुरतरु फलिया, जो गौतमनें दीठा ॥ आ० ७ ॥ रे बाळूड़ा वहु बुधवन्ता गोयम गणहर ल्याया । थाल भरीनें असणादिक गोयमनें वहराया ॥ आ० ८ ॥ विनय करि अईमत्ता पूछै किहां वसो किरपाला । वीर समीपे वसुं अईमत्ता सङ्ग चल्या अईमत्ता ॥आ० ९॥ वीर वांदी वाणी वलि सुणवा आया मन हुलासे । अनुमति मांगे माताजीसुं सञम ले प्रभु पासे ॥ आ० १०॥ रे बाळूड़ा वहु बुधवन्ता सञमनें स्युं जाणें । बालपणेमें श्रीराज सुख, भोगवो तुम हम साथे । आ० ११ ॥ विनय करि अईमत्ता बोले कुमर कहइ कुल

भाणौ । सो जाणं सो जाणं नाही ना जाणं सो जाणं ॥ आ० १२ ॥ एक दिवसका राज करीनें, मात मनोरथ पूरें । सञ्जम लेस्यां जिनवर आगै, दूरगति करस्यां दूरे ॥ आ० १३॥ अनुमति लहीनें सञ्जम लीधा, पाल मांटीना बांधी । काचली तिहां तरती मूका नान्हड़ीया मन साधी ॥ आ० १४ ॥ तपस्यायें करि केवल पाम्यौ पहुंचौ पद निर्वाण । भावें करिजे तपस्या करसी, ते पावें शिवठाण ॥ आ० १५॥ इति अईमत्ता सिझ्याय सम्पूरण ॥

अथ वैराग्य सिझ्याय लिख्यते ।

भुलो मन भमरा कांई भम्यां भमियो दिवसने रात । मायानो बांध्यो प्राणियो भुल्यो भ्रमजाल ॥ भु० १ ॥ कुम्भ काचोरे काया कारमी, तेहना करोरे जतन्न । वीनसन्तां वार लागे नहीं निर्मल राखोरे मन ॥ भु० २ ॥ केहना छोरु केहनां वाछरु केहनां मायने वाप । प्राणी जीव जासे एकलो साथै पुण्य ना पाप ॥ भु० ३ ॥ आस्या तो डुंगर जेवडी मरवो पगलाने हेठ । धन सञ्चीने कांई करो करो देवनी भेठ ॥ भु० ४ ॥ धन्धो करि धन जोडियो लाखां उपर कोड मरणरी वेला मानवी लियो कंदारो छोड ॥ भु० ५ ॥ मुरख कहे धन मांहरो धोपें धानन खाय । वस्त्र विना जाय पोढसी लखपति लाकड़ां मांय ॥ भु० ६ ॥ नव सागर दृग जल

भयो तिरवो छेर तेह। त्रिथमें तीह सेंवली थयो करम बांधने मेह ॥ भु०७॥ लखपति छत्रपति सवी गये गया लाख वे लाख । गरभ करि गोखे बेठता जल बल होय गया राख ॥ भु०८॥ धमण धूखंतिर रह गई बुझ गई लाल अङ्गार । एरण को ठबको मिट्यो उठ चल्योरे लोहार ॥ भु०९॥ उलट नदी मारग चालवो जावो पेलेजी पार। आगल हाट नहीं हट थोणीयो सम्बल लिजोरे लार ॥ भु०१०॥ परदेशी परदेशने कुनसुं करेर सनेह । आयोरि कागल उठ चल्यो न गिगें आंधिने मेह ॥ भु०११॥ कई चाल्यारे केई चालसी केई चालणहार । केई बेठा बुडा वापडा जांणो नरक मझार ॥ भ०१२॥ जिण घर नोबत बाजति होता छत्तीस राग । ते मन्दिर खाली पड्या बेठन लागारे काग ॥ भु०१३॥ महमद कहे वस्तु माहरो जे कोई आवेर साथ । आपणो लाभ उवारीयो लेखो साहिब हाथ ॥ भु०१४ ॥ इति वैराग्य सिझ्झाय सम्पूर्ण ॥

अथ इलाची पुत्रनी सिझ्याय लिख्यते ॥

नाम इला पुत्र जानिये धनदत्त शेठनो पुत्र । नटवि देखीने मोहियो जे राखे घर सुत्त ॥१॥ करमन छुटेरे प्राणिया पुरव नेह विकार । निजकुल छण्डीरे नट थयो नांणी सरम लगार ॥क०१॥ इक पुर आव्योरे नाचवा ऊँची वांश विशेष तिहां राय जोवारे आवियो मिलिया लोक अनेक ॥ क०२॥

दोय पग पेहरीरे पावडी वांस चढ्यो गजगेल । निरधारा उपर नाचतो खेलै नव नव खेल ॥ क०३ ॥ ढोल वजावेरे नटवी गावे किन्नर नाद । पाय तल घुघरा घम घमे गाजे अम्बर नाद ॥ क०४ ॥ तिहां राय चित मेरे चितवे लुबधो नटवीनें साथ । जो नट पडेरे नाचतो तो नटवी मुझ हाथ ॥ क०५ ॥ दानन आपेरे भूपति नट जाणे नृप वात । हुं धन वंछुरे रायनो राय वंछे मुझ घात ॥ क०६ ॥ तब तिहां मुनि-वर पेषीओ धन धन साधुनी राग । धिग धिग विषयारे जीवनें इम पाम्या वइराग । क०७ । थाल भरी सुध मोदके पदमणी उभेलो बार । लो लो केछे लेता नथी धन धन मुनि अवतार ॥ क०९ ॥ सम्बर भावेरे कवली थयो मुनि कर्म खपाय । केवल महिमाजी सुर करे लब्धि विजै गुण गाय ॥ क १० ॥ इति इलाची पुत्रनी सिझ्झाय सम्पूर्ण ॥

॥ अथ विजय शेठनी सिझ्झाय लिख्यते ॥

सुकल पक्ष विजया व्रत लीनो शेठ किसन पषरो जांणी धन धन श्रावक पुण्य प्रभावक विजय सेठनें सेठानी ॥ ध० सज सिणगार चढी पिय मन्दिर हिय हरष और हुलसानी तिण दिवस मुज वरत तणाते सेठ बोले मधुरी वाणी ॥ ध० २ ॥ वचन सुणीनें तो नीर ढलियां वदन कमल थाये चिल

षांनि ॥ प्रेम धरी पदमणनें पूछै थें किम यो विलखांणी ॥ ध० ३॥ सुकल पक्ष व्रत गुरु मुख लीनो थें परणो दूजी राणी दूजी नार मारे बेन बराबर धन धीरज थारी हो राणी ॥ ध० ४ ॥ हियहार सिणगार सजी सब श्यांम घटा हिय हुलसांनि । बरषाकाल अति घणो गरजे चिहुं धारा बरषे हो पानी ॥ ध० ५ ॥ एक सीज्यानें दोनुं परबल तो पिण मन राखो हुलसानी ॥ षट रस मांस दुवादश बासर सरस समज हिय हूलसानी ॥ ध० ६ ॥ मन वच काया अखण्डत निरमल सिल पलां साचां जांणी । विमल केवलि करि प्रशंसा ए दोनुं उत्तम प्राणी ॥ ध० ७ ॥ प्रगट होया सञ्जम व्रत लीनो मोह कर्म कीया धुल धानी । रतन चन्द कर जोडी विनवै केवल ले गया निरवाणि ॥ ध० ८ ॥ इति ॥

अथ दश श्रावक सिझ्याय ॥

आनन्दे आनन्द हुवै, काम देव कल्याण। सुरा देव सुख संपजै, सुलस नाम सुविहाणं ॥ १ ॥ सुखडाल समरया दुख टले, चणनी नाद विनोद । गाथापति चुलनी पियां, ध्यायां होय प्रमोद ॥ २ ॥ कुंड कोलियो कुल तिलक, महा सतक सतवन्त । सुलहे नित सराहिये, जिम करमां आवै अन्त ॥ ३ ॥ दसे श्रावक सह वीरना, जे ध्यावे इक चित्त । त्यां घर अचल वधावना दिन दिन वाधे वित्त ॥ ४ ॥ सतमें

अङ्ग भाषीया, श्री वीर जिनन्दे देव। करजोड़ी गढ़मल कहे स्वामीजी आपो सेव ॥ ५ ॥ इति दश श्रावक सिझ्याय ॥

॥ अथ स्वारथ सिझ्याय ॥

सयं मुखै जिनवर उपदिसेरे जगजिवन जिनराज। लहि मानव भव दोहिलोरे कीजै उत्तम काजरे ॥ १ प्राणी० ॥ स्वारथीयों सहु कोई आप विमासी जोयरे ॥ प्राणी० ॥ आवै जावै एकलोरे सुख दुख वेचै एक, वेदनको विहचै नहीरे धरि निज चित्त विवेकरे ॥ २ प्राणी० ॥ कूड़ी प्रीति करे घणी रे सुज्ञन ते न सुहाई, रङ्ग पतङ्ग तणी परेरे षिणमै पेरू थाइ ॥ ३ ॥ रे प्राणी० ॥ अनविड्तां लगि आपजारे जहां लगि चालै पिड़। पिंड रह्या सहू पारकारे खोटी माया छाड़ ॥ ४ ॥ रे प्राणी० ॥ अनजानी कीजै नहीरे जन जन साथै प्रीत, गुण जाणी ने कीजीयै रे उत्तमनी ए रीत ॥ ५ ॥ रे प्राणी० ॥ नाना व्यंजन रसवतीरे नव नव करि पकवान। दिन प्रति देही पोखीयैरे नावी साथी निदान ॥ ६ ॥ रे प्रा० एकभि उदरे उपन्यारे सरिस ग्रही हित सिप। ते भाई रहे देखतारे दंता लांवी विष ॥ ७ ॥ रे प्राणी० ॥ लील करे जे लाड़लारे न लहे उन्हीं छांट। दुख भरिते पण डिकरा रे वेदन न सके वांट ॥ ८ ॥ रे प्राणी० ॥ दीठा तनमन हुल्लसेरे खिन विरह न समाय। ते कामनि अलगी रहे रे

जीव एकलो जाय ॥ ९ ॥ रे प्राणी० ॥ एक घड़ि नवि आव ड़ेरे एक जीव दोय देह । सैण तिके स्वारथ पषेरे झटक दिखा ड़ैछैह ॥ १० ॥ रे प्राणी०॥ कुन सुत किनरी कामिनीरे कुन माता कुन बाप । पुन्य पाप कीधा जीकेरे सहसी आपो आप ॥ ११ ॥ रे प्राणी० ॥ रङ्ग लिये चिहुं दिशि रुलैरे मारग मांहि मजीठ । स्वारथ विन चिहुं आगलारे तैने कानन दीठरे ॥ १२ ॥ रे प्राणी० ॥ तेल लियां तिल पील नैरे वास खालिनी सवाद । न रहै डाड़ि वासनारे फुल तनी मरजाद ॥ १३ ॥ रे प्राणी० ॥ धान लिये तुष धान नारे वाय विसरी जाय । नीर सरोवर नीठ वैरे नैड़ो कोइन थाय १४ ॥ रे प्राणी० ॥ माड्यां निज सुत मारिवारे चुलनि चित्त विढाल । राय यशोधर नै दियेरे विसनी नारी निहाल ॥ १५ रे प्राणी० ॥ स्वारथ विन मार्यो पितारे सुर प्रिय नाम कुमार । परदेशी गल नख दियोरे सूरीकंता नार ॥ १६ रे प्राणी०॥ इमजे आप स्वारथीरे तिणरी संगत टाल । उप- गारी स्वारथ पषैरे तो विरला इनकाल ॥ १७ ॥ रे प्राणी० कांइ करै मन रूषनोरे कांइ करै सन्ताप । भोगव्या विन भाजै नहिरे पहला भवना पाप ॥ १८ ॥ रे प्राणी० ॥ अव गुण उपरि गुण कररे ते विसवाइ एकविस । ताज्या वलि तार सीरे जीव घना जगदीस ॥ १९ ॥ रे प्राणी० ॥ ए विसा

स्वारथ तणारै दिसछै सुविचार । मुनि श्री सार कहै इसारे कीजे पर उपगार ॥ २० ॥ रे प्राणी० ॥ इति सारथ विसि ।

॥ अथ शील बत्तीसी ॥

शील रतन यतन करि राखो वरजो विषय विकार जी । शीलवन्त अविचल पद पामै विषयी रुलै संसार जी ॥ १ शील० ॥ शील रतन जग माहि जस लहि सीझे वंचित कोड़जी । सुर नर किन्नर असुर वियाधर प्रणमे चकर जोड़जी ॥ शील० २ ॥ कडुया विषय विषम विप सरषा सेवे जे नर नारी जी । ते पर भवि दुरगति दुख पामै न लहै सोभ लगार जी ॥ शील० ३ ॥ एकवार नरनारी सङ्ग जीव मरै नव लाख जी । एक भाले पांचइ सागे सङ्ग सिञ्ज भव साखी जी ॥ शील० ४ ॥ करम वशी रमणी देखीने जे चुके गुणवन्त जी । तन मन वयन वली वशी आवै ते पिग साधु महन्त जी ॥ शील० ५ ॥ आठ रमणो रूपै रम्भासम कनक निनाडं कोड़िजी । छांड़ि जंबु चरण करण धर कवन करे तस होडी जी ॥ ६शी० ॥ कुलवालुवो तप जप करतो रहितो ते वन वास जी, श्रेणिक गणिका संगे विलुधउ पामें नरका वास जी ॥ ७ शी० ॥ चिलना वचन सुनीने नीसी भरी । श्रेणिक पडिउ संदेह जी । सती सीरोमणि वीर वखानी पामे सवि सुखतेहजी ॥ ८ शी० ॥ सुक मालिका

नादि माहि नाख्यो भूपति निज भरतार जी कुवज पुरुष साथे हत्यारी दुखनि भमे संसार जी ॥ ९ शी० ॥ श्री रह नेमि नेमिजिन वन्धव, राजमति तनुं देख जी, च्युक्यो बालि धृत भङ्गनको भयो राखि राजल रेख जी ॥ १० शी०॥ अभया राणी दुषण दाख्यो भेटी नचलिउ जेह जी। शुली फिटी थयो सिंहासन सेठ सुदर्शन तेह जी ॥ शी० ११ ॥ लंका-पति विद्या अतुलि बल सुरपति पदवीसार जी। तसु मस्तक रड़वड़ीया धरणी, त्रिरुया विषय विकार जी ॥ १२ शी० चालनीए जल काढ़ी सुभद्रा चंपा बार उघाड़ि जी, शील प्रभावे महिमा वाध्युं नाख्यो आल उपाड़ि जी ॥ १३ शी० हसि वायस जोड़ी दिखावै जानि इन मुझ बात जी। नयन वसै चुलनी मातायें चितवीयो सुत घात जी॥ १४ शी० ॥ भर्त्तृहरि काउसग्ग वनमाहि जपै पिङ्गला नाम जी। डीवी मिसी गोरख समझावी जोवो विषय विकार जी ॥ १५ शी० कलह कारक भाखे जगमाहि, वीरति नही पच्चखान जी। तिन भव शिव गामि नारद, ते तत्र शील प्रमाण जी ॥ १६ शी० ॥ जिन रक्षित सायर विचि वहिउ रयणा रुपे भुलो जी खण्डो खण्ड करि वली दीधो पडतां माड़ि त्रिसूल जी ॥ १७ शी० ॥ जनक सुता वन माहि एकली मूकावी श्री राम जी, पावक गङ्गा जल सम कीधो राख्यां अविचल नाम जी

१८ शी० ॥ शील सनाह मंत्री सर रूपई शूलि रूपणि नार जी, एम कुशील पणि दुष लाधा निरय निगोद मझार जी ॥ १९ शी० ॥ नल राजा देखि दवदान्ति पूरव भव संसार जी, जिम मन मोडी तिम वलि चाली पामई सुख अपार जी ॥ २० शी० ॥ पुरव परिचित वेश्या नईरि घरि थूलभद्र रह्या चउमासि जी, ब्रह्मचारी चूड़ामणि मुनिवर न चल्यो नारि पासि जी ॥ २१ शी० ॥ वलकल धारी वासि वन माहि, कन्द फल फूल आहार जी, ते पणि गणिका केडई धायो आव्यो नयर मझारि जी ॥ २२ शी० ॥ वारहजार वरस छटकीधा, वेयावच्च प्रधान जी। नन्दी सेन संजम फल हार्यो कीधा नारी निदान जी ॥ २३ शी० ॥ भड़तो भीम अतुलि वल भूपिउ, आवीमाता पास जी। शील प्रभावे कुंता वचनई कादम अमृत ग्रास जी॥२४शी०॥ केसफरसनी आनउ कीधो, पालि व्रत चिरकाल जी। ते सभूति वारमुं चक्रवर्त्ति जात सप्तम पाताल जी ॥ २५ शी० ॥ देउदा संगति जेव्रत आदरी, नाचत चतुर सुजान जी। ते आशाढ़ भूति संवेगी पामय केवल नाण जी ॥ २६ शी० ॥ अर्द्ध मण्डित नारी निन छंडि, साधु भगत परिणाम जी। ते सच देव नागिला वचने आवै ठामो ठाम जी ॥ २७ शी० ॥ पट राणि वचने नवि खलिउ, राजा नयन निहालि जी, तत-

पिण वंक चुलनं आपे राज काज संभाल जी ॥ २८ ॥ आद्र कुमार रह्यो वनवासं छण्डि व्रतनो भार जी । जीरण तृण जिमतेहि परिहरि, लाधो भवनो पार जी ॥ २९ शी० ॥ ईम जानिने साधु साधवी श्रावक श्राविका जेहजी, निरमल व्रत पालै मन सुद्धे शीव सुख साधे तेह जी ॥ ३० शी० ॥ युग प्रधान जिन चन्द यतिसर, तास पाटि गण धार जी, जिन सिद्ध सूरि एम पभणे राज समुद्र सुविचार जी ॥ ३१ शी० ॥ इति शील वत्तीसी संपूर्ण ॥

॥ अथ सुमति छत्तीसी ॥

सरस्वति स्वामिणि वीन वुरे । मांगु वचन विलासरे ॥ सुवुद्धि प्राणि ॥ तुम्हे समकित सूधो पालिज्योरे लाल, जिन धर्मतणे आवासरे सुवुद्धि० ॥ १ ॥ तुम्हे कूडो कदा ग्रह मत करोरे लाल । पड़िस्यो दुरगति जाल रे ॥ सु० ॥ वलिय वलियं विसेषे साधु नेरे लाल । तुम्हे रुलिस्यो वहुलो कालरे २ ॥ सु० ॥ देव वुधई अरिहन्त नईरे लाल । मानिज्यो सूधई भावरे सु० ॥ गुनगरुवा गुन मानिजोरे लाल । मति धारो मन कुभावरे ॥ सु० ॥ ३ ॥ केवलिनो भाण्यो खरोरे लाल । तुम्हे धारिजो धर्म ध्यानरे ॥ सु० ॥ देखि कुगुरु कु देव नईरे लाल । तुम्हे मतिकरो वहु मानरे ॥ सु० ॥ ४ ॥ जिन शाशन में जिन कह्यारे लाल । आगम पईतालीसरे ॥

सु० ॥ अक्षर एक उथापतीरे लाल । भमिये विसवा वीसरे सु० ५ ॥ साधु महाव्रत पंच छेरे लाल । पांचेई मेरु समान रे ॥ सु०॥ ते सुधा हिव नवि पलेरे लाल । पञ्चम आरे प्रमान रे ॥ सु० ६ ॥ वीतराग ना वयन थीरे लाल । तुम्हे समझो रूडई हेवरे ॥ सु० ॥ धन्य साधु छे आज नारे लाल । ईने खोटेई कलि कालरे ॥ सु० ७॥ उतरा ध्येन माहि कह्यो रे अध्ययन दशमा माहि रे ॥ सु० ॥ घनामति जिन शाशने रे लाल । जूजूईवाणिछे ताहिरे ॥ सु० ८॥ ते देखि संसई पडेरे लाल । संशोमूल मिथ्यातरे ॥ सु० ॥ मोहे रुलीया मानवीरे लाल । नावें धर्म्मनी वातरे ॥ सु०९ ॥ धर्म्म वडो श्रावक तणोरे लाल । व्रत वारे उदाररे ॥ सु० ॥ ते जीव दया सुधो पाल तो रे लाल । पडे नहि संसार रे ॥ सु० १० ॥ श्री ठाणांग माहि भण्यारे लाल । श्रावक भेदे चाररे ॥ सु० एक श्रावक माता पितारे लाल । केईक सउ अनुहार रे ॥सु० ११ ॥ केईक मध्यम भावसूरे लाल । कई एक भुंल भावरे सु० ॥ मर्म्म न जाने धर्म्म नोरे लाल, कुडो भाषई दावरे ॥ सु०१२ ॥ भाषाना भेद तीन छेरे लाल । सत्य असत्य ने मिश्रर ॥ सु० ॥ वोलो वोल विचार सुरे लाल । भलई पालो भाषा तिश्ररे ॥सु०१३॥ जीव दया जुगतें करीरे लाल । करो जीव जतन्नरे ॥ सु० ॥ सत्य वचन सहु मोल ज्यांरे लाल ।

कुडों मकरी जो मन्न रे ॥ सु० १४ ॥ दान अदत्ता परिहरा रे । गिनज्यो तृण मणि सममरे ॥ सु० १५ ॥ परिग्रह व्रत छई पांचमोरे लाल । टालो आरम्भ अनेक रे ॥ सु० ॥ कर सण खेति पशु पालवारे लाल । न रहे धर्म्म नि टेकरे ॥ सु० १६ ॥ आश्रव पांच अनुव्रतईरे लाल । टालो चोथें चितरे । सु० ॥ सात शिक्षा व्रत जानईरे लाल । सिषो रुड़ई सत्यरे सु० १७ ॥ मनवचनई काया करीरे लाल । वरजो पाप विकाररे ॥ सु० ॥ मानव नोभव दोहिलोरे लाल । वलि श्रावक अवतार रे ॥ सु० १८ ॥ गुण एक वीस श्रावक तणोरे लाल तिनसूं धरो चित रागरे ॥ सु० ॥ निन्दा मकरो पार किरे लाल, दुरगति नो छई माग रे ॥ सु० १९ ॥ देव निन्दा कर तो थकोरे लाल । जीव रुले संसार रे ॥ सु० ॥ गुरू निन्दा नर पातकी रे लाल । बांधई करम नोभार रे ॥ सु० २० ॥ शास्त्र निन्दा कोढ़ी हुवे रे लाल, मरिय चण्डालई जायरे ॥ सु० ॥ नरक वलि निगोदमेंरे लाल । तिरियञ्च मरीने थाय रे ॥ सु० २१ ॥ पुढवी कायंई ऊपजेरे लाल । लह जीव थिर वासरे ॥ सु० ॥ काल असंख्यातो तिहारे लाल । उत्कृष्टो जीव वासरे ॥ सु० २२ ॥ अप्प काय अगनि मईरे लाल । चउथी वायु विचाररे ॥ सु० ॥ काल असंख्यातो कह्योरे लाल । वचन वीतराग ना साररे ॥ सु० २३ ॥ वणस

पति मई जीव डारे लाल । रहई अनन्तो कालरे ॥ सु० ॥
पंचई थावर भण्यारे लाल, जीव साधारण जालरे ॥ सु०२४
प्रत्येक वणस्सईना कहईरे लाल । जिनवर ज्ञानी देवरे ॥ सु०
फल फुल काष्ट छल्ल पान नारे लाल । मूल बीज भिन्न
भवरे ॥ सु० २५ ॥ वि त्रि चउरिंद्रि जीव मईरे लाल । रहइ
संख्या तो कालरे ॥ सु० ॥ तिरिजंच माहे भवकरईरे लाल
सात आठ भव मालरे ॥ सु०२६ ॥ देव अने नारकी तणारे
लाल । भवमाहे भमें जीवरे ॥ सु० ॥ उत्कृष्टई सागर
भण्यारे लाल । त्रेतीस संख्या सदीवरे ॥ सु० २७ ॥ देव
वलि नारकि भवईरे लाल । भव एकेक विचाररे ॥ सु० ॥
शुभ अशुभ करम तणईरे लाल । भमईजीव गति चाररे
सु०२८ ॥ अङ्ग चारि गति दोहिलिरे लाल । दश दृष्टान्ते जे
मरे ॥ सु० ॥ मानव भवि श्रुति नई श्रद्धारे लाल । संजम
वीरज नेमरे ॥ शु० २९ ॥ विसई सारस देवतारे लाल ।
तिरजञ्च विवेके हीनरे ॥ सु० ॥ नित्य दुखि रई नारकीरे
लाल । धरम मनुष्य मे कीनरे ॥ सु० ३० ॥ च्यार ध्यान
जिनवर कह्यारे लाल । आरति रौद्र निवाररे ॥ सु० ॥
धर्म्म शुकल ध्यान धावतारे लाल । करई करम संहाररे ॥
३१ सु० ॥ काल तीन द्रव्य भण्यारे लाल । आदरो नंत
तत्त्वरे ॥ सु० ॥ छ लेश्याके कौय नीर लाल । नयनाकर

जुगतित्तरे ॥ शु० ३२ ॥ आठ करम सभाव थीरे लाल । जीव धरेई आठ मद्दरे ॥ सु० ॥ वंचन दोई वसई पञ्चरि लाल । हारई नर भव रहरे ॥ सू० ३३ ॥ नव नीयांणा परिहरंरे । वरजो चार कसायरे । सू० ॥ पंच प्रमाद विषई तजोरे लाल । ईम भाषे जिन रायरे ॥ सू० ३४ ॥ खेत पनरे कम भूमिनारे लाल । अढई दीपां माहिरे ॥ सू० जिनवर साधु त्रिहुं कालनारे लाल । वन्धु मन उछाहरे ॥ ३५ सु० ॥ भणता गुणतां भावसुंरे लाल । शुमति छतिसी कर जोडीरे ॥ सु० ॥ यश लाभ गणि ईम भणेरे-लाल । तुटे कर्म्मनी कांडीरे । सु० ३६ ॥ इति सुमति छत्तिसी संपूर्ण ।

॥ अथ थूलभद्र सिज्झाय ॥

कमल नयन कोस्याभणे, प्रिउजी आयोछै बरसात हो, सावण भादो भरि वहै ॥ प्रि० ॥ नदीयां नीर न मात हो ॥ म्हारी उलंगड़ी उलगाणा, कहै थूलि भद्रनें जी ॥ १ ॥ पर देशी पंथि पावसे ॥ प्रि० ॥ आवै निज२ गेह हो, धन तिन पुरुषारो जीवनो, जांरी नवल नारयांसुं नेह हो ॥ म्हा० २ ॥ आसु आस्या पुरियें ॥ प्रि० । काती छाती लाय हो, मृगसिर महिर करो पिया, पोस होय सुख दाय हो ॥ म्हा० ३ ॥ माह थाह नही शीत नो ॥ प्रि० ॥ रयण छमासी थाय हो, पलङ्ग पथरणा पामरी, पीया विन शीत न जाय हो । म्हा ४

फागुण फाग रंगे रमें ॥प्रि०॥ संग निज पति साथ हो, चैत्र वन बाड़ी फूल्या, मोर्या अंबचन दाप हो ॥ म्हा०५॥ वैसाखे शाषा भरी ॥ प्रि० ॥ कोयल करै टहु कार हो, जेठे तड़का लु वालि खस खाना सुख कार हो, ॥ म्हा० ६ ॥ आषाढ़ मास धड़ुकीया ॥ प्रि० ॥ मेहा बरखण हार हो, वाट जोई वणिता घणी जोरा पर देसे भरतार हो ॥ म्हा० ७ ॥ इम उलह्नता आविया ॥ प्रि० ॥ थूलि भद्र चतुर चौमास हो, हियड़ानी कुंपल हंसि, पुगी मननी आसहो ॥ म्हा० ८ दीधी समकित सुखड़ी ॥ प्रि० ॥ कीधी श्राविका सार हो, सिधी मननी कामना सौभाग्य जय जय कार हो ॥ म्हा० ९ इति थुल भद्र सिज्झाय।

॥ अथ तरकारी सिज्झाय ॥

ढाल काछे लीनी ॥ श्री फल आंबा काकड़ि ॥ सखिहे खरवुजानी जात। तरवुज खीरा आरिया ॥ स० ॥ कारे लानीरे भांत ॥ १ ॥ सीम कंकोड़ा सुन्दरू ॥ स० ॥ पापड़ी नीलुआ जात। मेथी सरसव मोकला ॥ स० ॥ चौलाइ विख्यात ॥ २ ॥ तन्दलेवो केला सही ॥ स० ॥ पर वल प्रेम अपार, कंदुरी तोरी भली ॥ स० ॥ सेत्र अनार उदार ॥ ३ ॥ मुंग मोठ चोलातणी ॥ स० ॥ फलिया र लीयारे होय मटर डोडी मुझ मोकला। स०। वार बहुविधि

जोय ॥ ४ ॥ द्राख आडु भलि रूयड़ा ॥ सिंघोड़ा सुविवेक नागर वेलतणा भिडं ॥ स० ॥ जाति पान अनेक ॥ ५ ॥ नींबु नारङ्गी भलि ॥ स० ॥ अति मिठा आनानास । रायण रूडी फालसा ॥ स० ॥ कयरे करुरे उलास ॥ ६ ॥ सोही जगमें आमला ॥ स० ॥ होला पूरवी जाति । फूट मतीरा आदरू ॥ स० ॥ मोठ काचर भलि भाति ॥ ७ ॥ नीम्ब पचांग वखानीइ ॥स० ॥ अरडूसानी सो रिती । अमल वेतस आदरूं ॥स०॥ बुद त्रिगा मन प्रीति ।८। बीजोरा वीलो भली स०॥ तिम तुलसी पंचाग ।कालिगडाने सांगरी॥स०॥ बावल फल मनरंग ॥ ९ ॥ मोगरी मुझने मोकली ॥ स० ॥ दातण जाति जेह । देस अने देसान्तरे ॥ स० ॥ दस२ राखुं नेह १० ॥ ए तरकारी मोकली ॥ स० ॥ होजो सदा मन रङ्ग, विरति वेल वारू फले । स० । सौभाग्य सुंहोय सङ्ग ॥ ११ इति तरकारीकी सिज्झाय ॥

॥ अथ बाहुबल सझाय ॥

ढाळ) राज तणा अति लोभिया भरत बाहुबलि झुझेरे मुंठ उपाडि मारिवा बाहुबळ प्रतिबुझेरे ॥ १ ॥ वीरा मारा गजथकी उतरो ब्राह्मी सुन्दरी एम भाषेरे ऋषभ देवजी मोकाले व हु वहिने पासेरे ॥ वी० २ ॥ लोच करि चारित्र लियो वली आयो अभिमानोरे लघु बन्धव बांदु नहीं काउ-

सग्ग रह्यो सुभ ध्यानोंरे ॥ वी० ३ ॥ वरस दिवस काउ सग्ग रह्यो वेलडिया विटांणोंरे। पंखीमाला हो मोडीया ताप सीते सुकाणोरे ॥ वी० ४ ॥ साधवि वचन सुणीकर्ने चमक्यों चित्त मझारोंरे, हय गज रथ सहु परिहर्या वली आयो अहङ्कारोंरे ॥ वी० ५ ॥ वैरागे चित्त वालिये मुकी निज अभिमानोंरे। पाय उपाडे हो ष दवा उपनों केवल ग्यांनोंरे ॥ वी० ६ ॥ पहुता केवली परष दा बाहुबळ ऋषि रायोंरे अजरामरपदवी लही समय सुंदर वांदे पायोंरे ॥वी० ७ ॥ इति बाहुबळ सझाय ॥

॥ हित सिष्या सिझाय ॥ (ढाल कडखानी)

मकरिहो जीव परिताप दिन रात तूं। आंपणां वांक नयणे न देषै, तिल समा परतणा छिद्र होवै तिके। तहकरि दोषवे मे रु लेषे ॥ १ म० ॥ जेकरै परतणी तात अति हो घणी। तहते तहनो मयल धोवे। तास उज्जल करै। पिण्ड पापें भरै मूढते आपणो आप षोवै ॥ २ म० ॥ बहुल मछर र गणि गुण तजी परतणां, सन्त असन्त जे दोष भाषें। बापडो जीवडो तेह मूरष पणें। गजपरें निज सिरे धूलि नाषै ॥ ३ मक० ॥ द्राष साकर जिम सरस वस्तुं परिहरी। काग जिम चांचसुं गुंथे चूंथै। निंदक तिमकोड़ि छोडी करी। चित्तसुं पर तणा दोष गुंथे ॥ ४म० ॥ अह्न निज गोपवी मान नें मारिवा

बग रहै जिनपरें नीर नाके। नींच तिम दोष गोपवि करी आर ण।। राति दिन पारका छिद्रताकै॥ ५ म०॥ निपट लंपट पणे लंपटी कु तरो। वमन देषि तथा तेह नाचै। दोस लव लेस पामि तथा पातकी। अधम जन सबलमन माझि माचै ६ म०॥ देषि सज्जन हुवै सेलडी सारिषा। षंड षंड करि कोइ कापे। तेह पणि जेह उत्तम तणै पीलता। अमृत सम रस सरस आपे॥ ७ म०॥ कोडि अवगुण तजी जे गुण ग्रहै, देश परदेश ते सूजस पावै। देखि परगट पणें कृष्ण परि तहना। देवराजान परि सुजस गुण गावै॥ ८ म०॥ देव गुरु आराधि सूधै मनि। पारकै पेंसि मां मूढकोइ। सकल सुख कारिणी दुरित भव वारिणी। भावसुं ए हित सीष मानें॥ ९ मक०॥ इति हित सिष्या सिझाय।

॥ अथ आत्म निन्दा सिझाय॥

हे आत्मा हे चेतन कुदृष्टां कुश्रद्धायां, अकार्य प्रबृति ए रस गृर्धाणै अखांटी२ दृष्टां सामायक दोय घडी मात्रमें तू मत चिन्तवनकर क्यारे सम्यक्त मोहनीमें, क्यारें मिश्र मोहणीमें क्यारें काम रागमें, क्यारें स्नेह रागमे क्यारें दृष्टि रागमें, क्यारें तुं कु गुरुमें, क्यारे कुदेवमें, क्यारें कु धर्म्म में, क्यारे ज्ञान विराधनामें, क्यारे दर्शन विराधनामें, क्यारें चारित्र विराधनामें, क्यारें मनो दण्डमें, क्यारें

वचन दण्डमे, क्यारें काय दण्डमें, क्यारे हास्यमें, क्यारे रतिमें क्यारें अरतिमें, क्यारें भयमें, क्यारें सोकमें, क्यारें दुगंछामें, क्यारें कृष्ण लेश्यामें, क्यारें नील लेश्यामें, क्यारें क.पोत लेश्यामें, क्यारें ऋद्धिगारवमें, क्यारें रसगारवमें, क्यारें माया सल्लमें, क्यारें नियांणा सल्लमें, क्यारें मिथ्या दर्शण में, क्यारें तेरें काठिया दोला आणि फिरैछे, क्यारें तेर अठारे पांप स्थान दोला आण फिरछै, रे तूं आत्मा महा दुष्टी, महा पापिष्ठ दुराचारी अरे तूं हीन तिश्रा जाया रे तुं हीण दृष्ठि रे तूं अघोर पापरा करणहार, रे तूं दुष्ट पापिष्ट जीव प्रायें तो थारे अनन्ता नुं वंधियौ क्रोध अनन्ता नुं वंधियौ मान माया लोभरी चौकडी वापडा थारे खपी नहीं गुणठाणो। आयो नहीं थारे धीर्य गुण पलट्यो नही तृष्णा दाह थारे मिटी नही आकुल व्याकुलता। थारे मिटी नही दरिया वरा वर किल्लोल ऊछल रह्याछै। तूं तो क्रिया करैछे सो सुन्य मन सुं करैछै धीर्य गुणसुं करीस सो लेखै लागसी सुन्य पणें करी जो क्रिया करै छै सो तो छार पर लीपणो सरीषोछै। ए चे-तन वापड़ा सांस लेनेंतो पापी भांजते महापापी तें अनन्त काय अभक्ष्य शील व्रत जरदो डोपली अमल भांग तमाखू रा सौस लेले भांजिया वापड़ा थारो कठे छुटनो होसी। हे चेतन तुं पूदगलरे वास्ते कितरी एक व्याकुल आकुलताई करे

छे अहो माहरै पारस पत्थर म्हारे नव निधान म्हारै रस कूंपौ, म्हारै रसायण चित्रावेल, म्हारै अमृत गुटकौ वा देवतानें वसकरूं वा पातस्या हुय जाउं वा राजा हुय जाउं वा सेठ हुय जाउं वा सेनापति हुय जाउं जिम तिम पुद्गल उपार्ज्जन करूंरे वापड़ा थारे तो ए वातां ऊपजैही ऊपजै दशमें गुण ठाना वालानै ही लोभनै परिहार नही तौरे वापरा थारी तौ गरज कठैसु सरै हे चेतन तूं यूं मनमें चिन्तव रह्यौछै म्हारौ घर म्हारौ पिता म्हारै माता म्हारौ पुत्र म्हारौ कलत्र म्हारै पुद्गल अरे चेतन चौरासी फिरतै लाषां घर कीया संसार में न किनारौ तूंछै न कोई थारो रे चेतन थारी तौ तुं उत्पत्ति देख केई वार पुत्रपणें केईवार मा पणें केइवार पुत्रीपणे केइवार स्त्री पणें अे थारा नाच तूं तौ देख । ठगरी वेटी कह्यौथौ हे माताजी हुं इतरा पाप करूछुं सो कुण भोगवसी तौ कै धिक्कार पड़े इण संसार में कोइ किनरौ नही औ मनुष्य जन्म आर्य कुल श्रावकरौ सौलियौ केवली भाषित धर्मतें पुन्यानु बंधी पुन्यसुं पायौ या घड़ि वापड़ा तें आजन्म दरिद्री व्राह्मण कागलानें वायर खोयो तिम तें चिन्तामणि रत्न रूप धर्म्म खोयौ थारी आत्मारी गरज कुंकर सरै अरे चेतन तूं कहै हूं रे तूं कुण विष्ठा मांहिली लट तूं हीज हुवौ मांन रूपिये गज चाढ़ वल चल्यौ अरे मंजलणौ मानथी

ब्राह्मी सुन्दरी बाई सिरिषा समझावण वाला जद समझ्या बापड़ा जिणरे औमानसो थारो कहिनें किसो हवाल हुसी ए चेतन देख तुं भरत महाराज जिणारे किती एक राज ऋद्ध सोभाग थौ तो कूं धिक्कार हुवो माहरै राज नों धिक्का०) चक्रवर्त्ति पदवीनें धिक्का०) माहरै विषे सुखानें धिक्का०) तो धनछैजे तीर्थंकर महाराजरो देश विरत धर्म पालैछै ध०) सर्व विरत धर्म पालैछै धन्य जे दान देवेछे धन्यछै जे शीयल पालैछै धन्यछै जे तपस्या तपैछै धन्यछै जे भावना भावैछै कें भावना भावतां भरतादि केवल तो ज्ञान केवल दर्शन पाम्या तो कै तुं आवरी वरीगे जीव मत करे उवेतो तेसठ सिलाकांरा चरमसरीरी चौथा आरेरा जीव तुं पंचम कालरो भरत क्षेत्ररो कीडलो किती एक वात ए चेतन कर्म अजीव वस्तु, रे चेतन तुं जीव वस्तु, रे चेतन जीव सुं जीव तो सदा परचौकरै पिण अजीव सुं क्युं करै तुं निर्बल कर्म महा सवलरे चेतन कर्म तो चवदे पूर्व धारी यौनें उपापट कीया इग्यारमें गुणठाणैराजीव भवन भावन केवलीजी कमल प्रभाचार्यजी महाविदेहरा मानवियानें डिगायदीया तूं पंचम कालरे जीव किती एक वात आठकरम आठावनसो प्रकृति प्रभु किमकर जीत्या जाय संग लगै प्रभु आय हमारी वीनती हे चेतन चारित्रकी फोजमां रहो सद्बोध मुहतेगी अराधे

रहि सदा आगम स्युं परचौ राष संतोष गुण ग्रहणकर तृष्णा रूपी दाहनें पूठी मार ज्युं थारी आत्मारी गरज सरै धन्यछै साधु मुनिराज पांचे सुमते सुमता तीनें गुप्ते गुप्ता छकाय ना पीहर सात महा भयना टालन हार आठ मदना जीपक नव विध ब्रह्मचर्य ब्रतनी वाडना राखण हार दस विध यति धर्म ना उजवालक इग्यारे अंगना भणणहार वारै उपांगना भणणहार कुक्षी संबल मल मलिन गात्र चारित्र पात्र धन्यछै जै मुनि प्रभु जीनी आज्ञा प्रमाणें धर्म पालै रे चेतन तनैं क दे उदै आवसी रे चेतण थारै उदै कठासुं आवै रे वापडा थारै संसाररी बहुलताइ संसाररी थिति घटीनही तिवारै तनें कठासु उदै आवै धन्य छे जिके देस विरती श्रावक जिके प्रभुजीनी आज्ञा प्रमाणें धर्म पालै प्रभात उठि सामायक करे पडिक्कमणो करै देव दर्शन करै प्रभु जीनी द्वादशांगनी वांणी सुणै देव पूजन देव वंदन गुरु वन्दन दांन तपश्या शील पासौ संझायें देवसी पड़िक्कमणौ धन्यछै देश विरती श्रावक प्रभु जिनी आज्ञा प्रमाणें जे षडावश्य करै मनेंई कदे उदै आ-वसी रेचतन तुं इसा षोटा कांम करे थारा खोटा परिणाम देखतां तौ थारै खोटी गति आवसी सामायक मन शुद्धेंकरो निन्दादि कथा सब पर हरौ पढ़ौ गुणौ वाचन खपकरै जिम भव सायर लीला तिरो थारी सामायक आछै सामाइक मन

असुद्धं करे निन्दा विकथा वहुली करै तनें वाचन पढणकी खप कठैछै तेंतौ श्रुत ज्ञाननों वहुमान नकीयौ श्रुतज्ञानजीरौ गुणनौ नकीयौ तारै थारै ज्ञानावरणीरौ अन्धकार पडल फिर गयौ श्रुतज्ञान जीरौ आराधन करैछै श्रुतज्ञान जीरा गुग णौ न करै तो वहु मान न करै छै ज्यारा ग्यांन दर्शन निर्मल न हुवैछै जी कांई रे ज्ञानरी प्राप्त हुवै जि कांईरे केवल ज्ञान दर्शनरी प्राप्त हुवै जिकांई जेरे मूक्ति रूपणी स्त्री पांणी ग्रहण करै कांइं दिवस प्रतें दियै सुजांण सोनाखण्डी लक्ष प्रमाण तेहने पुन्य न हुवे जेतलो सामायक कीधां ततलौ पिण चेतन तुं इण भरोसै भूलेमांरे चेतन आ थारो सामायक हुवा नही भाई आसामायकतो उत्तम जीवांरि छै भाई आ सामायक आनन्द कामदेव शङ्ख पूक्कलीरी पूरण दास सेठ चन्द्रावतंसक राजारी तुं इयै भरोसै भूलै मां रे चेतन थारी तो सामायक आछै कांमकाज घरणा चिन्तवै निन्दा विकथा करं खिज रहै आर्त्त रौद्र ध्यान मन धरै ते सामायक निष्फल करै सामायकतो आछै भाई । आप परा औसर ऋसौगिणं, कञ्चन पत्थर समवड़ धरै, साचै थोड़ौ गमतौ भणै, ते समायक सूंधे करै चन्द्रावतंसक राजा जै सामायक व्रत पाल्यौ तो अरे चेतन स्व आत्मानौ भलौ चाहे पर आत्मानौ भलाचाहे जेपर आत्मासौ वुरो न चाह्यौ स्व आत्मानो हीत चाह्यो रे चेतन

तुं कञ्चननीतौ वाञ्छा राखै पत्थरनें दूर करै थारै छातीपर पत्थर पड़सी कदेइ कञ्चनरी प्राप्त हुवे नहीरे चेतन तूं मृषा वादबोल रह्यौ छै रे चेतन तुं थारो गुण संभारे तौ तुं अवेदी अ फरसी अघाती अविनासी छै जै तुं थारा गुण संभारै तो अछै भाई अहो अहो औ म्हारा दुसमण औ म्हारा सज्जन हे चेतन कुण थारे दुसमण कुण थारे सज्जन हे चेतन थारै तौ आठ कर्म रुपीया शत्रु वैरीछै ज्यांनें तुं ग्यांन रूपी अगन सुं वाल भस्म कर दै ज्यूं थारी आत्मारी गरज सरै अहो हुं भव्य छुं कै अभव्य छुं कै दुर भव्य छुं कोइ मारै पोतै संसार घणौहीज दीसैछे मायें तौहूं भाई अभव्य दीसुं छुं पछै तो ज्ञानीयां भावदीठो तेखरो चेतन तुं सामायकतौ आ करै छै खुणेछै खाज मोडेछ करडंका उंघतणा लेवै सरडका तेरी सामायकतौ भाया ज्ञानी सकारसी तो लेखे लागसी । (दोहा) आतम निन्दा आपनी ज्ञान सार मुनि कीन । जेनर आतम निन्दा करै सोनर सुगुण प्रवीन । इति श्री आत्म निन्दा ।

॥ व्यसनि सिझाय ॥

पर उपगारी साधु सुगुरु इम उप दिसो, मीठी अमिरस वाणि, सुणी मन उल्हसे । व्यसन बुरा ए सात साता इण सुं नहीं, धर्म अर्थ ने काम विणासे ए सही ॥ १ ॥ प्रथम विसन जुआ खेल

बीजो मांस सुं रसी तीजो व्यसन सुरापान चौथा वेश्यावसी पांचमो आखेटक जाणि छटो चोरी तणा परनारी सुंसङ्ग व्यसन सातमागिणो ॥ २ ॥ चौपड पासा सार मांडी रम जूवटा मुखबोले मारो मार बांधे कर्म चींगटा, नल हार्‍यो निज राज नारि लेई नीसस्यो रह्या पांडव वनवास देस वटे दुख धरयो ॥ ३ ॥ अभक्ष मांस आहार अशुचि पिण्ड जीवरो खातां बहूला दोष कुजस आवे खरो, राजा श्रेणिक आऊ नरकनो बांधीयो विलपंतो वारोवार श्री वीर जिन थिर कीयो ४॥ राता माता मद पान रस जे प्राणिया तिणरा डेरा खरा जाण नरकने ताणिया,रडे लेडे पडे माखी मुख माहिते एहथी. यादव थया नास जली द्वारावती ॥५॥ वेश्या धुतारी नारी नही थिर नेहडो जाणि नेहली नारी उपाड्यो वेहचो । राता इणरे रग बूडाते वापड़ा, काढ्यो केवन्नो कूट पाधी धन नीजडा ॥ ६ ॥ जलचर थलचर जीव हणे पशु पंखीया ते भरे पाप पिंड देषे नही आंखीया, दसरथ जुं पापारंभ रहे रौद्र ध्यानमें जाय पड्यो कुण्डी खाड नरक निगोद मे ॥ ७ ॥ चोरी जारी महापाप तुरतते आयपडे, लागो दोष कलंक काजल जिम का पडे । परधन ने परिनारी ए सुख मधु विंदुवा, गयो रावणरो राज हूवा दुं दुया ॥ ८ ॥ विसन वुरा ए सात जाणीने परिहरो सूधो धर्म सुं ध्यांन खरो तप जप करो । जिम लंह स्वर्ग ने

मोक्ष सदा जिम गह गहे श्री पुन्य कलश गुर सीस रंगे जे रंग कहे ॥ ९ ॥ इति व्यसन सिझाय ॥

॥ अथ जिन राक्षित जिनपाल चोढालियो ॥

दोहा) अंनत चोविसी होई गई । वलि अनन्ती जान प्राक्रम जांरा अति घना मिठि जांरि वाणी ॥ १ ॥ पाप अठारे अतिबुरा जे गृहे महा अपराध । प्रीत मित्राई नागिणे सगला अपगुण लाध ॥ २ ॥ घरमें धनछे सामठो । तोहि न पुगी हाम । पछ रहछे प्राणियो, किम पामे शिवपुर ठाम ३ ॥ दुखदाई ए परिग्रहो मोटो माया जाल । दोन्या भाई दुख सह्यो, जिन रीषने जिन पाल ॥४ ॥ किन नगरी वसता हता, किम दुष सह्यो अपार । साव धान थई साभलो, तेहना कहु विचार ॥ ५ ॥ (ढाल) (रेजीव विषयन राचीये, एदेशी ॥ चम्पा नयरी सुहावनी, दीठा हरषित थायेरे । लोक घना सुखीया वसे, सेठ घना तिन मांहिरे ॥ धनरा लोभि प्राणियाः ॥ आकनी १॥ सेठ कांकदिना डीकरा, दोनु वड़ा वेपारी रे ॥ नांवा ले समुद्र माहिने उतर्‍या वार इग्यारीरे ॥२धनः॥ लाभ कमावन लोभीया माल अमामो भारीरे ॥ लोभे लागामन माहिलो वारमी वार हुवो त्यारीरे ॥ ३ ध० मात पिताने इम कहे मेतो जास्या लेवा भारोरे, मात पिता

वलतो कहै भली नहि वारमी वारोरे ॥ धन० ४ ॥ धन संच्यो छे एकलयो, वो कद लागे लेपेरे सात पीडा लगि नही निठई, अण हुवो दुष कुंण देषारे ॥ ध०५ ॥ मां वापां घणो पालीयो तोहीन रह्यो लिगारोरे, सांदो ले तिथ जोयने समुद्र चल्या निर धारोरे ॥ ध० ६ ॥ अनेक जोजन जातां थका हुईय उलका पातोरे देखिनें डरप्या घणा, अवें करली घातोरे ध० ७ ॥ अकाल गाजै वीजली हिव नावा कांपवा लागीरे वायरा सो हेठी पड़ी धरम कीधा रागीरे ॥ ध० ८ ॥ विद्या धर नी डीकरी विद्या वीसर पछतावैरे गुंडे देषी वासग छोड्यां डरता दर बाहिरे आयोरे ॥ ध० ९ ॥ नाव तणो विसतार छै सूत्र ज्ञांता माहिरे, हीन पुनीया जीवड़ा डूब रह्या जल माहि रे ॥ ध० १० ॥ हा हा रव थ्याया घनो एक कपाटो हाथे आयोरे बीजा थ्या सो सव डुवोया दोनुं भाई तरया जायरे ॥ ध० ११ ॥ रत्न धीप तिहां आवीया ध० मन मान्या फल तिहा खायारे नालेर भांजी तेल काढ़ीयो रे चोपट बैठा छायेरे ॥ ध० १२ ॥ दोहा ॥ रैणादेवी तिन अवसर रहे जो द्वीप मझार पाप करी हरषित हूवे सूली दे भय कार ॥१ ॥ नित नवा सुख भोगवें रहे है चिषेम लाग महिल आति रली-यामणा च्यारो कानी वाग ॥ २ ॥ दोय भाई चिन्ता करे पूरव वात विचार आरत ध्यान करता थका, देवी आवी तिन

वार ॥ ३ ॥ खड्ग तेहने हाथमें कीधा कोप करूर आख्यां राती झल फले मुडो खोटी दीसै नूर ॥ ४ ॥ अरे काकन्दी ना डीकरा वचन कहै निरधार थें मोसु सुख भोगवौ नहितौ खण्ड करु दोय च्यार ॥ ५ ॥ मान्यो वचन देवी तनो ले चल्ये आवास अशुभ पुद्गल काढीयो भोगवें भोग विलास नित अमृत फल भोगवै नित नित नवला वैस काल कितो यक नीकल्यो आयो इंद्र आदेश ॥ ७ ॥ (ढाल) धीर जीनन्द संमो सन्यां (एदेशी) हाथ जोड़ी नें इम कहै सां-भल मोरी वातरे (वालम मोरा) मुझ वीनती अवधार ज्यैरे लाल। हुं समंदर बुहारण जायरे ॥ वा० मो० १ ॥ ज्यो थाने नही ओलगे रे तो जाज्यो पूरव ले बाग। वा०। दो रुत ना फल पावज्यो रे कीज्यो मन रंग रागरे ॥ वा० २ ॥ तेफल खाधां तिण पिछेरे जागसी काम विकाररे काम दीपावण रोह छेरे लाल। मनसा पुरण अहाररे ॥ वा० मो० ३ ॥ रुंष घणा तिण बाग मेरे लाल। सषर घणा वखाणरे वा० डीडका मोरी न कोईलिरे लाल बोलेछे मीठी वाणरे ॥ वा० मु० ४ ॥ कदाच जो नही ओलगेरे तो बाग उत्तर ले जायरे. वासर दहे मरुत भोग वोरे लाल आनन्द करो मन माहिरे ॥ वा० मु० ५ ॥ वलि पछीम नो बाग छेरे वसन्त ग्रीष्म फल दोयरे वा० कीड़ा कन्यो तुम मन रलीरे थे

दक्षिण वाग मत जायरे ॥ मु॰ वा॰ ६ ॥ तिणमें सरप छ मोटकोरे चंड रुद्र काला नेंन रे, पछे पछतावो होवै तो भणीरे थे मन मांहि लासो एण रे ॥ वा॰ मु॰ ७ ॥ वैरी दुसमन जे हुवै रै तिनरी न रापो कांणरे वा॰ तिण कारण में पालियारे नातो हणैगा थारा प्रानरे ॥ वा॰ मु॰ ८ ॥ ए तीनोंही वाग मेरे सदा काल गृह कार रे । सुख साता घणी पाव ज्येरे जोय ज्यौं हमारी वाटरे ॥ वा॰ मु॰ ९ ॥ इणि शिखावण दे वलीरे' कहीं ने वारुं वार रे । दोनो भाई निकल्यारे लाल आया वागा मांहि रे ॥ वा॰ १० मु॰ ॥ दोहा) दोय भाइ चिन्ता करे पूरव वात विचार. किण कारण ईण पालिया चालो दक्षिण वाग ॥ १ ॥ तिणमें दूर गंध अतिघणी हाड घणा तिन मांहि, सूली पूरप ज देषतां अंग ज ढीला थाय.२ किण नगरी वसतो हतो क्यौ वसि पडीयो आय कुंण अपराध ज तै कीयो तो कूं सूली दीयो चढ़ाय ॥ ३ । हुं काकंदी को वाणियो धन वेचन को जाय नाव डूबी हू नीसन्यो देवी के वसि पडीयो आइ ॥ ४ ॥ संसारे ना सुप भोगवी काल कीतो इक जाय थे इनके वस ही पड्या मांने सूली दीयो चढाय ॥ ५ ॥ जे वंछो वचवा तणो, तो वाग पूरव ले जाय, सेलग जक्ष पग झालिज्यौ थाने देसी घर पहुचाय ६ ॥ ढाल ॥ अहो वीर तणी देशने॰) एतो डरपाह अति

घणोरे एतो भलिय न दीसे नारिरे लाल । आपरी जाणी कालतें मानें कुण हिव लै जाय पार रे लाल. नारीना नेह निवारिए एतो आव्या पुरव लें वागमें जक्ष आव्यो तिनवार रे लाल. केहनें तारुं इहा थकी केहनें उतारु पाररे लाल ॥ना० १॥ एतो हाथ जोड़ी नें इम कहै म्हैतो दोन्युं दुखीया भाइरे लाल, मयाकरी मुझ उपरें. अवला नें पार उतार रे लाल ॥ ना० २॥ एतो देवी तनो मोह मत आनज्यो.थ्येतोरे कांधे वेठो आय रे लाल, मै तो ज्यों मन, डोलो जानसूरे, नीचे नाखि देसों तत कालरे ॥ ना० ३ ॥ एतो धीरज दइ नें चालियो देवी आइ तिणवार रेलाल, हाथमे षड्ग डरामणा, मुखवोले मारो मार रेलाल ना० ४ ॥ एतो कटुक वचन कह्या घणा डरप्पा नहिय लिगाररे लाल, तव सिणगार सोलै किया घुंघट काढी तिणवार रे लाल ॥ ना० ५ ॥ एतो दीन वचन वोल्या घणा मोने काय मुको निरधाररे लाल, इणि अटवी में एकली मोंने कुण तणो आधाररे लाल ॥ना० ६॥ एतो संसार ना सुख भोगवी म्हाने इम दीजे छेहरे . लाल प्रीति चितारो पाछली मुझ अवला सामो देखीरे ॥ ना० ७ ॥ एतो अवधि ग्यान करि देखियों जिण रखियो चालियो जांणिने लाल. भाग्य भला रलियामणा एतो किण विध विचारें नारि लालरे ॥ ना० ८ ॥ एतो जिन पालियो कठोर छे हिये दया नहि दिल मांहिरे लाल एतो

अंतर दुख धरे घणाए आक्रंद करय अपार रेलाल ॥ ना०९ पग पूजानें चित धरय देखो थांरा जोवण हाररे लाल, एतो फुलां तणी वर्षा करय तिहा गंध चूर्णको मेहरे लाल ॥ ना० १० ॥ एतो रत्न घंटा वजाय नें, तिहा बोलय बोल सनेह रे लाल. एतो गुण गुणा ट करय घनां आंक्रद करय अप.र रे लाल ना० ११ ॥ एतो कंत तोने जरा देखती दख्यो थ्याहरां उन्हहार रेलाल, थ्येतो कांइ मोसु रुंखा थयया. म्हांरे हिवडो फाटो जायरे ॥ ना० १२ ॥ बचन कथन कह्यां घणा जिन रिखीयो पायो जाणरे लाल ॥ ना० १३ ॥ एतो वचन विपय रस सो भख्यो तिहां जाग्यो मोह विकार रेलाल, मनड़ो डाल्यो जक्ष जांणिनें नींचे नाख दीयो तिनकाल रे ॥ ना० १४ ॥ एतो आइ तिहा उतावली आकंद करय अपार रेलाल क्रोध करीनें मारियो एतो दिशौ दिशा दिया उछालरे ॥ ना० १५ दोहा) जिन रखियो दुखीयो थयो, जुवती राग प्रमांण, चम्पा नगरी पुहच्यो नहि, बीच विछोहा जाण ॥ १॥ वेरागय घर छोडिने विषय सांमा निहाल सिव नगरी पुहच्यो नहि विच-में कीधो काल ॥ २ ॥ रयणा देवी तिम कांमणी, सेवे बहु जन जण साथ, विषय रस मन डोल्यो नही त्यानें देसी पार उतार ॥ (ढाल) वृत नीयम न भाजे जांणी जिन पालज मन मेंधारी, एतो कपट मई दिसय नारी पूरव लो नेह नियाणां एतो

काचो सगपणा जांणो जक्ष उपर निरधारी, समुद्र थकी पार उतारी जिनपाल ना कारज सारो चंपानें वाग उतारो ॥ १ जिनपाल घरे जब आयो सगलो ही विरतंत सुणायो, जिन ऋषिको सोच ज कीयो जानें फाटण लागो हीयो ॥२॥ सुवा ना कारज कीना, संसार दुख सोबीना, एतले गुरु चम्पा आया सगला के मन भाया ॥४॥ जिन वांनी सुणी वैराग्यौ, घरसुं तेहनो मन भाग्यौ मन सिव रमणी सुं लाग्यौ संजम लियो वैराग्यौ ॥ ५ ॥ इग्यारमें अंगज भणीयो सोधर्म देवलोक उणीयो जप तप करि काया सोषी म्हा बिदेह जासी मोक्षे ॥ ६ ॥ इति श्रीजिन रखित जिनपाल चोढालीयो संपूर्ण ॥

अथ पंचेंद्रीकी चौपाइ ॥

श्री जिन वदन निवासनी वंदु सारद माय कविजन कुं सानिधि करें कविता पूरो ध्याय ॥ १ ॥ नमुं पंच परमेष्ठि कुं वंछित सूख दातार सेव्या इहं परभव मिलैं ऋद्धि घणे विस्तार ॥ २ ॥ गुरु दरियाव गुण लहर हें नमियें तेहना पाय, मंगल धुरि इत्यादि सब प्रणमुं सीस नमाय ॥ ३ ॥ इकादिन मनमें ऊपना अजब कुतूहल एक पंचेंद्री वर्णन करूं हूवा विवाद विशेस ॥ ४ ॥ आप आपणा मुख थकी वहुत बडाइ कीध, सो सब कहुं विस्तार पणं पाछें किण जस लीध

५ ॥ ढाल १ ॥ मेघ मुनि कांइ डम डोलेंरे ॥ (एदेशी) तिण काले ने तिन समेरे, इकादिन एक उद्यान । समव सर्या तिहां साधुरे, बहु गुण लब्धि निधान (साधुजी) तारण तरण जिहाज, सारें बंछित काज ॥ सा० १ ॥ नहि ममता समता विषे रे राचि रह्या दिनराति कारमी काया जानिने रें धरम ध्यान मइ रात ॥ सा० २ ॥ आगम साधु तणा सुण्यारे आया चौविह संघ, वंदण करिनें आगलें बैठा मन उछरंग ॥ सा० ३ ॥ विद्याधर तिन अवसरें रे क्रीडा करिवा काज आव्या तेहिज वन विषेरें वांद्या श्री मुनिराज ॥ सा० ४ ॥ जिम रंक मारग जावतांरे निधान मिल्यां सूखथाय तिम विद्याधर हरख थयारे आनंद अंग नमाय ॥ सा०५ । श्रावक सकल संघ हित कारणरे, द्ये देशना मुनिराज ॥ भव सागर थ्यी तारि वारे कहियें सांचि जिहाज ॥ सा० ६ ॥ सुर नर हित कारणे रे पंचेंद्री व्याख्यान, इन कुं पूछ करतां थ्यकारे देवें दुक्ष निदान ॥ सा० ७ ॥ अहि निस समरण करता थ्यकारे पालवी जे दिनरात, तौपिन दुख दायक अछेंरे नरकें निहचे पात ॥ सा० ८ ॥ जिम कोइ कुलट्टा नारियां रे पतिने बहु दुखदेय, तिणथ्यी अधिक ए जांणिज्यो रे मति संदेह करेय ॥ सा० ९ ॥ भणी पहेली ढाल मेंरे देशना अधिक रसाल कृष्ण मुनी दिव आगलेंरे । आधिको रुप विसाल ॥ सा० १०

(दुहा)इण अवसर देसन पछें, करि इंन्द्रि न को पक्ष विद्याधर बोले तवें विनय वंत बहु दक्ष ॥ १ ॥ भगवन हम क्या दुष्टहें हम मे क्या तक सीर हम विन जगमें को नही हमसें सवको सीर ॥ २ ॥ एकेंद्री आदिक सवें हम सब पें परतक्ष हमतें तप जप होतहें मति करौ खोटो पक्ष ॥ ३ ॥ जो कोई इंद्री हीनहें लोक बतावें खोड, इंद्री बीना सोभा नही कोन करे हम होड़ ४ ॥ (ढाल २) बाडी फुली अतिभली (एदेशी) हमही तें संजम पलें (सुणि साधुजी) हमतें क्रिया अनेक, सांभले साधुजी हमहे सवकुं वालही सु० हम विन होयन एक ॥ सा० १ ॥ नर नारि लक्षण कह्या सु० । सामुद्रिक के माहि सा० वत्तीस लक्षण सुभ कह्या सु० । पंचेंद्री के माहि ॥ सा० २ ॥ तीर्थं कर चक्रवर्त्ति तणा सु० । एक हजार नें आठ सा० । लक्षण सुभ इंद्री तणा सु० कह्या सिद्धांत में पाठ ॥ सा० ३ ॥ पंचकी वात माने सहु सु०, पांच कहें ते साच, सा० तीर्थं कर के वदनपें, सु० पांच इंद्री रही राच ॥ सा० ४ ॥ नाहक दोस न दीजिये, सु० ना वोलो अवरण वाद सा० निंद्या न करियें केहनी सु० तुम छौ गुणै अगाध ॥ सा० ५ ॥ नाक विना सोभा नही सु०, किम जाणें गंध भेद सा० कांन विना कुण साभलें सु० जीव अजी वना भेद ॥ सा० ६ ॥ नयन विना जग अंध हें सु० कुण देखे प्रभु रुप, सा० जीभ विना चाखें नहीं सु०, खट रसना

जि सरूप ॥ सा० ७॥ कठोर नें कोमल जांनियें सु० फरस ना लक्षण जोय सा० हम विन को जाणे नही सु० एहना जा लक्षण जे होय ॥ सा० ८ ॥ दोइ तीन पांच पांच हे फरसना आठ विचार सा० हम विना निर्णय कुण करे सु० वस्तु जे सार असार। सा०९। साधु कहें तुम पांच हो सु० तुम मांहे कुण सिरदार सा० चरचा तिणसूं कीजियें सु० कहियें अर्थ विचार ॥ सा० १० ॥ कृष्ण मुनी उत्तर तणी सु० पभणी बीजी ढाल ॥ सा० ॥ रूप रूपी कहे सांभलो सु० आगल वात रसाल ॥ सा० ११ ॥ (दुहा) नाक तणी पख होइ नें विद्या धर तव एक, बोलें अति हरपित थइ सांभलि ज्यां सुविवेक। १। ढाल, इम महिमा रोहिणी तणी (एहनीः) नाक कहें जगमें वडी मुझ सम औरन कोइरे, नाक रखण के कारणें जतन करें सहु कोइरे। ना० २। प्रथम वदन पे देखियें नाक सुंन्दर आकार रे, नाक विना अलखामणा रूप न दीसें सार रे। ना० ३। नाक नें कारण खर चिर, द्रव्य नी कोडा कोडी रे, नाक रह्या तो सहु रह्या, कुण करि सें मुझ होडीरे। ना० ४ बाहु बल जूध आदर्‍या, पणि न नम्या चक्र वर्तीरे, देस तज्यो दीक्ष्या ग्रही नाक सुजस सूणि पवर्तीरे। ना० ५। सगर चक्रवर्त्ति जे थयो छखंथी दीक्षा लीधीरे, नाक रखण के कारणे पिर नवि मनसा कीधीरे। ना० ६। रावण सीता आ हरी राम-

चंद्र जुद्ध कीनो रे, सीता आणी जोर सुं नाक रखण जस लीनो रे । ना०७ । धीज कियो सीता सती अगनि कुंड मांहि बैठी रे, नाक रखण कै कारणे संजम लीनो सेठी रे । ना० ८ । राय दशारण आदऱ्या संजम नाक नें काजेरे, इंद्र हाऱ्यो चरणें नम्यो स्तवनें सुर पति साजेंरे । ना० ९ । आज्ञा कारी श्रेणिक तणो अभय कुमर बुद्धि धारि रे, तात तूं कारो नविसह्यो ततखिण संयम धारिरे ॥ ना० १० ॥ नांम कहां लग में कहूं जीव घणा में ताऱ्यारे, नाक तणे परसाद थी दुरगति दुख्य निवाऱ्या रे । ना० ११ । सुगंध सकल ही जातिना नाक सकल आश्वादे रे, जिनपति देह सुगंध जे,लेवे नाक तनें आल्हाद रे । ना० १२ । मुख मंडण ए नाकछे जन मन मोहन हारी रे, कृष्ण मुनी तीजी कही, रूपें इण अधिकारी रे । ना० १३ । (दुहा) बीजो विद्याधरं कहै, नटकी बोलें बोल, क्यौ अभिमान एसा करे, हम आगें तुं गोल (ढाल ४) कपूर होवें अति उजलो रे (एदेशी) कान कहे सुणि नाक तुरें तूं क्या करे गुमानं, जो चाकर आगें चलेरे, तौ नाहि भुप समान रे, जगमें कान वड़ो शिरदार (एआंकणी) पानी झरें नित नाकसें रे बलगम वहें अपार, गुन २ कर बोले सदारे लाज न आवें गमार रे । ज० २ । तेरी छाक सुनें जिकेरे करेन उत्तम काज मूंदें तो हि दुरगंधे मेंरे, तौ हीन आवें लाजरे । ज० ३ ।

ऊंट बृषभ नारी तणीरे, रीछादिक जगमाही जिहां तिहां तो कुं छेदियेरे तौवी लजाती नाहिरे । ज० ४ । तीर्थ कर जिनराज नीरे वानी सुनें चितलाय जाके प्रसादें जीव कुरं निर्मल दरशण थायरे । ज० ५ । कर्म विपाक सुणी करिरे, वीहे भयथी जीव काने सुनि कर आदररे धर्म करें ते सदीवरे । ज० ६ । झूले कुंडल कान मे रे मणि मुक्ता फल सार, झग मग जोति होय रह्यो रे देखें सव संसार रे । ज० ७ । राग रागणी सांभलें रे, मीठे२ नाद अंग पूरव सहू सांभले रे, कांन तणें परसाद रे । ज० ८ ॥ कान सूनें खट द्रव्य कीरे चरचारे अधिक रसाल कृष्ण मुनी चौथी कही रे, रुपें एहवी ढालरे । ज० ९ । (दुहा) जे मे तारया तें कहूं, सांभलि ज्यो चित लाय सुझ सर वर कहो कुण करें आवूं सहूने दाय (ढाल ५ मी) धरम करो श्रावक तणो (एदेशी) द्वादशांग वांनी सूनी गणधर गिरुवा कहाया रे त्रिपदी दे जिनराज जी सुनिकर अंग रचाया रे, कानन सुनि ध्यान ध्याइ यें (आंकणी) ऋषभ जिणेसर पामियो निर्मल केवल ग्यानरे सूनि भरतेस महोच्छव कियो पीछें चक्र परमान रे । का० । वचन सून्या नारी तणा ततखिण धन्ना छाडी नारी रे, साल कुमर सूनि नीसन्या पडुत्या वन मझारी रे । का० ३ । साधु अनाथ थया इण परेजी श्रेणिक समकित पायारे पद्म नाभ जिनवर हुम्यें कान तणे स

प सायरे । का० ४ ।आज हमारे हाथें चढो चोर स्वर्ण खुर नाम रे वीर वचन थी उवऱ्या संयम ले गुण धाम रे । का० ५ । जे जीवा.ए सांभली कानें नेमजी नी वांनी रे,द्वारिका दाह थी ते वच्या चारित्र लीया गुण खाणी रे । का० ६ । नाग नागणी कानें सूण्या महा मंत्र नवकार रे पार्श्वनाथ परसाद थी सूख विलसें नाग कुमार रे । का० ७ । जंबू कुमर बांनी सूनी चोर नारि प्रति बुझ्यारे, कानन सुनी कानन गए सूरन मिलि सहु पूज्या रे । का० ८ । संघ चतुर विधि सहु तऱ्या नाम कहांलो भाखु रे काननके ऊपगार थी शिव सूखना फल चाखेरे । का०९ कृष्ण मुनि पांचामि कही ढाल इण आधिकार रे रूप ऋषी कहें सांभलो आगें जे विस्तार रे ॥ का० १० ॥ (दुहा) आंखि कहें रे कान सुनि, मुझ आगें तुं दीन, बिद्याधर तीजो कहें हु छूं परम प्रवीन । ए ढाल ६ । धना कहे निज मातनें (एदेशी) आंख कहें रे सूनि तूं कान कहाकरें अहंकार गरवन कीजे रे, तूं मेल सूं नित मुंध्यो रहें लाजें नाहि गमार । ग० १ । बात बुरी तें सुणी करी तत खिण तोडे प्रीति ग० तुझ सम दुष्ट न दुसरो रीति सें करें अन रीत । ग० २ कान थी वात सूणी करी उपजें क्रोध तत काल । ग० नर नारी भिडि भिडि मरे कान सुनी धें गाल । ग० ३ । नर नारी के कान जो पहिलें वींध्या जाय ग० वड वड वोल न बोलि-

यें क्यौं एतौ गर वाय । ग॰ ४ । वांता सुनें जो कांनसें सां-
षी झुटी थाय ग॰ आंख्या देखी बात जो फेरन तामें कहाय
। ग॰ ५ । इन आंखन सें देखियें तीर्थंकर को रूप ग॰ राम
राय हरखें घणो सुख पावे चिद्रुप । ग॰ ६ । सुरपति दरसण
कारणे कीधा नयण हजार ग॰ गणधर साधु नें देषवा आवें
सकल संसार । ग॰ ७ । जीव दया मुझ थी पलें ऊपजें पुन्य
अपार ग॰ आंखिन के परसाद थी पहुचे भव दधि पार ।
ग॰ ८ । देव गुरु मारग देखियें मात तात सुत भ्रात हीरा
लाल सहु परखियें सांझ अनें परभात । ग॰ ९ । जेमे तान्या
ते फहुं कहिस्यौ मुझ स्यावास ग॰ कृण्ण मुनि छठी कहि
वस्तु जे सार असार (ए ढाल ७ मी) तप सरिखो जग को
नहि (एदेशी) आगम सुत्र सिद्धांत जे, और जो ग्रंथ अनेक हो॰
मुनिवर॰ ॥ भेद ते आंखिथी जाणियें और जो वस्तु विसेष हो
मु॰ (जन मन मोहन आंखडी) समव सरण ऋद्धि देखियें
नाटिक बत्तिस बद्ध हो । मु॰ । लक्षण गज घोडा नर तणा तुझ
विन कुण देखेंज हो ॥ मु॰ २ ज॰ ॥ नव निधान मांहें
अछें सास्वता पूस्तक जेह हो मु॰ बांची विधि जांणे सहु, चक्री
होवें तेह । मु॰ ३ ज॰ । इर्या सुमति निहालता मारग चालें
साध हो मु॰ आद्र कुमर वेश्या देखिनें तत खिण संजम लाध
हो । मु॰ ४ ज॰ । प्रत्येक बुद्ध चार्यो भया देखीनें अणगार

हो० मु० दरसण वीर जिणंद ने वंदन थइ सुखकार हो । मु ०५ ज० । मान स्थंभ देखी करी ततखिण जाय मान हो । मु ०४ पूरव भव देखी करी श्रेयांस दीया दान हो । मु, ६ ज० । अंगुली भरथ निहाल ने पाम्यो केवल ज्ञान हो मु० बांदर स्व रुप देखी करी संयम ले हनु मान हो । मु० ७ ज० ॥ सूर-पति रूप बखाणियो चक्री सनत कुमार हो० मु०मलिन रूप देखी करी लीधा संयम भार हो ॥ मु० ८ ज० ॥ नाघनि खाधु बिदारतां दांतें दृष्टि निहार, हो० मु० पूरव भव तस सांभऱ्यो ए मुझनो उप गार हो । मु०९ ज० । नाग कहा ले लीजीयें जीव अनेक में ताऱ्या हो० मु० कृष्ण मुनी सातामि कही रुप जे कारज साऱ्या हो । मु० १० ज० । (दुहा) विद्याधर चौथो कहें जीभ तणी पख होय मुझ आगलि नें बापडी किसे करम की जोय (एढाल ८ मी बनारसी की) धीज करें सीता सतीरे लाल (एदेशी) जीभ कहें सुणि आं-खडी रे लाल झुठा गर्व मकार हो कजलोटी काजल करि काली रहे रे लाल तौ वि नाहि लजंत हो । क० १ जी० । छोटे मुख वडी बातडी रे लाल बोलतां हासी थाय रे क० सरम नहीं कुलटा भणी रे लाल आपुही गायें जाय रे । क० २ जी० । कायर ज्यौं डरती रहें रे लाल धीरज नाहि निटोल रे क० बात बात में रोवती रे लाल बोलें गरब ना बोल रे

। क० ३ जी० । जिहा तिहां मटका करे रे लाल, गटका रूप ने देखिने क० पद्मोतर हरी द्रोपदी रे लाल रुप चित्राम नो पेखि रे । क० ४ जी० । रूप अधिक देखी करी रे लाल रावण हरियो सीत रे क० रावण राम हण्यो तवें रे लाल त करे बहु अन रीत रे । क. ५ जी० । आछो रुप वस्तु देखिने रे लाल तूं मनमें ललचाय रे क. दुष्ट न को तुझ सारिखो रे लाल ते कन्या वहूत अन्याय रे । क. ६ जी० । जीभ कहें मो ते सवेरे लाल जीवत हें संसार रे क. षट रस भोगी में अछुंरे लाल पालुं सब परिवार रे । क.७ जी । मो विन आंखिन खुलि सके रे लाल कांन सुनें नहि चेन रे क. नाक न सूघें सुगंधि कुंरे लाल मो विन नहि कछु चेंन रे । क. ८ जी० । मंत्र जपत हें जीभसूं रे लाल आवें सूर नर धाय रे क० चाकर थइ सेवा करेरे लाल जीभ तणें सुपसाय रे क. ९ जी० । जीभहि लें जिन नाम कुंरे लाल जपता लहें गुन माल रे क. कृष्ण मुनी आठमी कही रे लाल रुप ऋषी ए ढाल रे । क. १० जी० । (दुहा) मीठा वोले कोयली झीणी राति मझार विरहण मदन जगावती कोन सहें खग धार । १ । सवको लगे सुहामणा केकी नो किंकार आदर पामें पाहुणा जीभ वडा संसार । २ ।(ढाल)आठमी, ईडर आंबा आंवली रे (एदेशी) अंग उपांग भणें जीभ सूंगे, ओर जे

पूरन सार, जीभ हि अर्थ करे भलारे समझें सहु नर नारी (जीभ डली बोलें मीठा बोल । जी० १ । वेण अमीरस सारिखारे, जिनपति नें मुनि राज समझावें सब जीवने रे सारे आतम काज । जी० २ । जीभ जगत सब जीतिये रे जीभ हितें सब हार जीभ हितें सब पद मिलेंरे गणधर आदि क सार । जी० ३ । जीभ हितें सब गाइये रे जीभते पठिये वेद रागं रागणी स्वर तंत्रि मिलेरे, ताल तणा वहु भेद । जी० ४ जीभ तें जीव खमाइ ये रे लख चौरासी जाण जीभ हि पडि कमणा करेरे आलोयण मन आण । जी० ५ । वल-देव वनना जीव नेरे पडि बोध्या दिन राति उपगारी जीभ करें घणारे प्रभु सुमरण परभात । जी० ६ । ढुंडक नें चंड पिंगल रे शिवा नाम कुमार सोपा आदिक थइरे जपा मंत्र नवकार जी० ७ । चित्रा स्वारथी व्रत लीया रे परदेशी राजान केशि गुरु प्रति बोधियारे थयो ते सुख निधान । जी० ८ । राज ग्रह नगरीमे थयारे जंबु नाम कुमार, कहिने कथा रमणी तनें रे प्रति बोध्यो परिवार जी० जीव अनेक तऱ्या अछेरे जीभ तणे सुप साय, कृष्ण मुनी नौमी कही रे, ढाल अधिक सुख दायरे । जी० १० । (दुहा) फरस तणी पख होय ने विद्याधर बोलंत, रे जीभडली तुं बापडी काहे बहुत झखंत । १ । तुं नारी में नर अछुं क्यौ गरवावें तोय नारी नें नर सबल हें

जौ अंगुठा, चारि नारि को पीय ॥ २ ॥ (ढाल १० मी) हिवें कुमरे इसो मन चिंतवें (एदेशी) हिवें फरस कहें सुनि जीभडी तुझे बोलतां लाज न आवे रे, तुंतो इक कोने पडी रहें तुझने कहो कुण बतलावे रे ॥ हि० १ ॥ तुतो बचन कहें कर कस बुरे तिण थी थाय बहुत कलेसो रे, क्रोधागनि अति ही ऊछले भिडि २ मरे सकल नरे सा रे ॥ हि० २ ॥ दुर्योधन मरि नरकें गया। कौरव सहु बंस खपाया रे, इण जीभ तणे परसाद थी कहां लग गिणती गिणाय रे ॥ हि० ३ ॥ इस जीभ हि कारण कीजीयें आरंभ अनेक प्रकार रे, खट कायना जीवणे दुख दियें एहवो करें पाप अपार रे ॥ हि० ४ ॥ राति दिवस निन्दा करे विकथा करतां दिन जांवेरे। इस जीभ तणे जे वस पड्या, तिणे पाधरा नरक पहुचावे रे ॥ हि० ५ ॥ मुनि कुंडरीक जीभ ने वस पड्या, चारित्र क्रिया करि हीन रे इण जीभडि बहु पापड वड्या, जैसी वस पडि मरे मीन रे हि० ६ ॥ झुटे आगम उपदेस थी भव कोडा कोडी रुलावे रे, हम थावर मे जिण दिन रहें तिन दिन कोइ नजर न आवे रे ॥ हि० ७ ॥ तुम नाक कांन जीभ आंखडी काहे [illegible] मे गवाये रे। सहु कोइ मिलि शिर नायकें लागत हो मेरही पाय रे ॥ हि० ८ ॥ झुंठी २ सहु को कहे साची तो [illegible] भाखे रे, इस काया के विन तप तपे शिव फल कहो कुण चाखे रे

हि॰ ९ ॥ मुनि कृष्ण ढाल दशमी कही ए फरस तणै अधिकार रे । ऋषि रुप कहें सहु सांभलो आगल छै फरस विचार रे ॥ हि॰ १० ॥ (दुहा) सहें परीसा बीस दो, करें कठिन व्यवहार तवतौ कर्म षपाय के पहुचत हें भव पार । फरसण कर सु दिजिये तीर्थंकर मुनिराय पंच सवद तिहां होत हें दान तणे सूपसाय (२ ढाल) हाजी मेरी वेहनी कहो कांई अचरिज वात (एदेशी) ब्राह्मी सून्दर आदि जे रे सतिया नि कोडा कोडि । शीले पाली जंग सुजस लह्योरे कुण करि स्ये मुझ होड । मेरी बहनी फरस वडो संसार । करें बहुला उपगार रे ॥ आ॰ १ ॥ विजय सेठ सेठानि ये रे कच्छ देस के मांहि षङ्ग धान्या शील आदर्या रे, पहुच्या मुगति के मांहि ॥मे॰ २ ॥ पाडलि पूरमे जे थयो रे नाम सुदर्शन सेठ, सूलि फीटि सिंघा सणे रे शील सहाइ थया नेट ॥ मे॰ ३ ॥ तप करि काया सोखवी रे लेवें निरसा हार, वीर प्रसंस्या मुख थकि रे धन धन्नो अणगार ॥ मे॰ ४ ॥ सोमल सीस प्रजालियो रे दुख सह्या अति जोर' पूरव वंध छुटे नहिरे घटि गए कर्म कठोर ॥ मे॰ ५ ॥ प्रण्णचंद शिर फरस तारें फिरि गए सुभ परिणाम नरक थकी शिव गति लही रे फरस तणो थयो नाम ॥ मे॰ ६ ॥ नर नारी व्रत आदरो रे फरस विना नवि होय फरस गरीव नि वाज हें रे देषो तुम सहु कोय

मे० ७ ॥ काया विन किरिया नहीरे ज्ञान विना क्रिया हीन ज्ञान विना मुकति नहीरे चेतो चतुर सुजान ॥ मे० ८ ॥ मुकति गए वलि जायगें रे फरस तणें उपगार कृष्ण मुनि ग्यारमी कहीरे ढाल अधिक सुख दाय ॥ मे० ९ ॥ दोहा) मन विद्या धर बोलियो सुणिरे फरस विचार क्यों अभिमान इसा करे तोमे नही कछु सार ॥ १ ॥ सडन पडन अरु जलन ए, एह तुमारी रीत तुमही तें दुख उपजें तुमही तें अन रीत ॥ २ ॥ च्यार प्रकार आहार जो और सकल ही स्वाद, षिणमे तूं मल करत है एह वडौ विख वाद ॥ ३ ॥ इक अंगुल परमाण में रोग छिनावें थाय, देखत ही षिरजात हें बादल जेम विलाय ॥ ४ ॥ जब लग हम इण देह में तव लग सव को मान हम निकसत तुम जलत हो कहा करत हो तान ॥ ५ ॥ (ढाल १२ मी) कर्म परीक्ष्या रे करण कुमर चल्यो रे (एदेशी) मन राजा मन चक्री मन शिरदार हं रे मन सम नही संसार मनही तें सव जाने जग तनी वातडी रे। जीव विना सहु छार ॥ म० १ ॥ मनही ते करुणा कर पुन्य उपाइये रे मन इन्द्रीन को स्वामी, चेतन रहतां रहती मानमें रे जीव विन न मिले ठाम ॥ म० २ ॥ हूं शिव गामी केवल धामी में अछु रे तुम संसार नी मुल, तुमही तें यह चेतन कर्म कमावतो रे, तुम विन रहे सदा शूल ॥ म० ३ ॥

नाके भमरा वांदे मिरगला रे रूपे देखी पतंग जीभें स्वादें फरसें हाथी यो एह थया अंग भंग ॥ म० ४ ॥ इक २ इन्द्री ने वस पडा जीवडा थायें जीव विणास जे जीव पांचोही के वस पड्या तिणरी केही आस ॥ म० ५ ॥ पांचौ इन्द्री रे दासी माहरी, ए नारी में नाह, मुझ थका एही सुरा कुण हो रही जीव विन सुन्न ही थाय ॥ म० ६ ॥ मन विन कुण सुभ भावन भाव स्यें ध्यावें सुक्क कोण, पांचो ज्ञान ते मन मेरा मे रह्या मुझमे अनंतो ज्ञान ॥ म० ७ ॥ मुनि वर अरणक मनमे लाजियो पडियो मायने पाय धर्म रुचि मन मांही विचारतां केवल ज्ञान लहाय ॥ म० ८ ॥ ढंढण मुनिवर मोदक चुरतां पांम्यो निर्मल ज्ञान आनंद श्रावक अवधि ऊपना मन धरता सुभ ध्यान ॥ म० ९ ॥ चंड रुद्र ने नव परणीज ते पांम्यो ज्ञान विसाल, मन हीतं सुभ भावना अनित्यादि थइ वारें ढाल ॥ म० १० ॥ (दोहा) तव मुनिवर जी वोलियो मन सुनि एक विचार, काहे गर्व करत हो तुमहो दुख दातार १ (ढाल १३ मी) सुनि बहनी पिवडो परदेशी : (एदेशी तव वोले मुनि मधुरि वांणी सुनि मन तुं अभि मानीरे तेरी वात सकल हम जानी किम करे टाना टानी रे ॥ त० १ ॥ तंदुल मच्छ तंदुल सम काया मन वहु पाप उपाया रे पाथरा सातमी नरकें जाया मनही के सुप साया रे ॥ त० २ ॥

क्षालि सुकर अधिक थयो पापी महिष पांचसें कापी रे। श्रेणिक राय कुप के मध्य थापी तिहां पिण मनसा व्यापी रे॥ त॰ ३ तूं खिण २ दौड्या जावै इन्द्री बेठी रहावे रे असुभ नियाणो तुंही करावे मन चञ्चल ही कहावे रे॥ त॰ ४॥ इम जांणि कोइ गर बन कीजे ठामे बेठि रहीजे रे। ठामे २ सहु को कहीजे काम सहु थी सीझें रे॥ त॰ ५॥ तौ पिण अधिको मनही कहीजै जिण थी सहु सुख लहियें रे, जीव गया बृथा इन्द्री कहीयें काज न एको बहियें रे॥ त॰ ६॥ इम साधु सवकुं परचाया सहु को हरख भराया रे वन्दन करि विद्या धर राया सहु कोइ घर आया रे॥ त॰ ७॥ एह संवाद इन्द्री नो कीनो बहु गुण रस कर भीनो रे भणतां गुणतां जीव ने चीनो मुकति मारग जिन दीनो रे॥ त॰ ८॥ संवत् अठारा तिहो त्तर कहियें सुकल बैसाख ज्ञु लहियें रे, सुर्य वार आठम तिथि सहियें विजय जोग सुभ पइयें रे॥ त॰ ९॥ गुजराती लौंका गछ गाजें वरते श्री जय सुरि स्वर राजे रे, तिनके साथ प्रेम मुनि साझें कृष्ण मुनि सुख काजें रे॥ त॰ १०॥ बंग देस देसामे नवीनो मकसुदा बाद नगीनो र राज फिरंग तणो तिहां चीनो अमल चेंन सुख लीनो रे॥ त॰ ११॥ पञ्चन्द्री नो चरित्र रसाल कीनो अधिक विसाल रे। रुन ऋखी ए तेरमी ढाल थइ पूरण मंगल माल रे॥ त॰ १२॥ इति संपूर्ण॥

॥ अथ अध्यातम बार खड़ि लिप्यते ॥
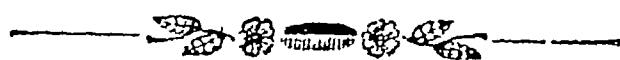
दोहा

करम भरम सब छोड़ कै, धर्म्म ध्यान मन लाव ।
क्रोद्धादिक च्यारौ तजौ, तो अविचल सुख पाव ॥ १ ॥
काया थिर नहि जानियै, माया अपनी नाही ।
पाया पुन्य प्रभावसु, थित पूरै सब जाहीं ॥ २ ॥
किसके मात रु तात सुत, भ्रात बहिन परिवार ।
स्वारथ के सब जानियै, धरम उतारै पार ॥ ३ ॥
कीरत जगमे बिस्तरे, तीरथ कर निज रूप ।
किरिया व्रत चित धार कै, कीजै ध्यान अनूप ॥ ४ ॥
कुल की लज्जा राखियै, कीजे उत्तम काम ।
जगत भरम सब छोड़ के, जप पर मातम राम ॥ ५ ॥
कूस अणी जल बिन्द जूं, तिम जीवन परिमाण ।
खिरत न लागे वार कछु, समझो आप सुजान ॥ ६ ॥
केवल ज्ञान प्रकाश हो, जब पावै शिव धाम ।
लख चौरासी भरमना, छूटे पुदगल नाम ॥ ७ ॥
कैसे पावै परम पद, संगत बिना सुजान ।
सद गुरुके परसाद सुं, पावै अविचल थान ॥ ८ ॥

कोई काहुं का नहीं, सवे स्वारथी जान।
तन धन योवन थीर नही, संझा रंग समान॥ ९॥
कौतुक जग का देख के, चेतन भये उदास।
एकाकी रहते सदा, समता सुख है पास॥ १०॥
कंचन कामिनी पर हरो, सत्य क्षमा गुण धार।
तौ पावै सुख सास्वता, भव दधि उतरै पार॥ ११॥
कहते सो करते नही, झुठे बडे़ लबार।
भव सागरै मै आयकै. सांचा उतरै पार॥ १२॥
खबर नही है आजकी, कल परसो क्या होय।
धर्म काम कीजै तुरत, ज्ञाता जगमे सोय॥ १३॥
खाली आया जगत मे, जाता खाली आप।
हाली समझो चेतना, तौ छुटे सब पाप॥ १४॥
क्षीन होय वसू कर्म जब, तब पावै निरवान।
नहितो जगमै भरमना, लख चोराशी जान॥ १५॥
खुन शन कीजै काहुसूं, सबसूं कीजै प्रीत।
सत्य शीयल समता रखो, एह धर्म की रीत॥ १६॥
खिन इक सूखके कारने, खोया जनम तमाम।
एह सूख दुख की खान है, समझ करो निज काम॥ १७॥
खुबी कर जग आयके, पाये नर अवतार।
जनम जनम के पाप सब, छुट जाय निरधार॥ १८॥

खलै मत संसारमे, खल अलोकी खेल ।
जब पावै पर मातमा, जगत खेल सब ठेल ॥ १९ ॥
खे होगा जब पाप सब, तब पावे सुख चैन ।
दिव्य नयन सुं देखिये, घटमै साहिब अैन ॥ २० ॥
खोए मति तुं आपको, अबकै पाया दाव ।
मानव भव फिर ना मिले, धरम ध्यान मन लाव ॥ २१ ॥
खौर तिलक बिंदी दीयैं, अंग छाप और माल ।
यामे तो प्रभु ना मिलै, पेट भराइ चाल ॥ २२ ॥
खन्ती सुख को मुल है, क्षिमा धर्म को कन्द ।
जे मन धारैं आपने, छुट जाइ जम फन्द ॥ २३ ॥
खड्ग क्षमा कर धारके, मोह वली को जीत ।
तो पावै अविचल नगर, मिठे मरण की भीत ॥ २४ ॥
गरब न कीजै प्राणियां, तन धन जौवन पाय ।
आखर को थिर ना रहैं, थित पूरे सब जाय ॥ २५ ॥
गाड़े रहियै धरम मे, करम न आवै कोइ ।
अन होनी होनी नहीं, होनी होइ सु होइ ॥ २६ ॥
गिर पर चढते जायके, जिहां तीरथ तिहां जांहि ।
तेरो प्रभु तुझ पास है, पे तुझ सूझत नाहि ॥ २७ ॥
गीत गान प्रभुको करे, अन्तर ध्यान लगाय ।
तो पावै पर मातमा, सकल पाप मिट जाय ॥ २८ ॥

गुरु सम दाता को नहीं, गुरु बानी चित धार।
गुरु दीओ गुरु देवता, गुरु उतारे पार ॥ २९ ॥
गुढ़ अर्थ इक जानियो, जुग चेतन जुग हाथ।
तिथ रसना युग पग निरख, सदा न वाऊं माथ ॥ ३० ॥
गेह छोड़ वनमें गये, सरेन एको काम।
आसा तिसना ना मिटी, कैसे मिलि है राम ॥ ३१ ॥
गैन राज जवही मिलै, मैन फैन कर मार।
रैन दिवस सुष चैन व्है, बोल बैन विचार ॥ ३२ ॥
गोरे गोरे गात्त पर, काहे करत गुमान।
एतो कल उडि जांहिगें, धूवो धवलर जान ॥ ३३ ॥
गौन करै जब जीवडा, कौन रखेगा प्रान।
जगमे तेरा को नहीं, सबी स्वारथी जान ॥ ३४ ॥
गंदी देही पाईकै, मत कर मान गुमान।
चेतनता शुद्ध कीजियै' पावै अविचल थान ॥ ३५ ॥
गहरे गोता खायगा, जो नहि समझै आप।
टेक नामकी राखिये, छुट जाई सब पाप ॥ ३६ ॥
घट मे है सूझे नहीं, भटकै सकल जिहान।
मन वस कीजै आपना, तो पावै भगवान ॥ ३७ ॥
घात बचन नहि बोलिये, लागे दोप अपार।
कोमलतामे गुण बहु, सबको लागे प्यार ॥ ३८ ॥
घिण नहीं कीजे प्राणियां, सब जिय एक समान।
दया धरम चित राखिये, पावै अविचल थान ॥ ३९ ॥
घीसैगें जम आयकै, जब नहि राखे कोइ।
चेतनता सुध कीजिये, सुख स्वाम्यता होय ॥ ४० ॥

घुर आए गत च्यार में, पायो नर अवतार।
अबकै चेतै चेतना, तौ पावै भव पार ॥ ४१ ॥
घूमें मत संसार में, थिर मन कीजै ध्यान।
जगत जालको तोड़कै, जीव चलै शिव थान ॥ ४२ ॥
घेरे गा जम आयके, राखन हार न कोइ।
मनुषा देही आइकै, चेतो तो सुख होइ ॥ ४३ ॥
चैन चढि तुझ मोहकी, रहन विगारी आप।
दहन करो मद कामको, छूट जाइ सब पाप ॥ ४४ ॥
घोर पापको छोड कै, कीजै पुन्य सुधर्म।
तप जप संजम धारियै, दूर जाइ सब कर्म ॥ ४५ ॥
घोर पुन्य फल लागते, तप तरु वर निर धार।
समता रस चाखै सदा, आपा आप विचार ॥ ४६ ॥
घंटा अनहद बाजते, तन मन्दिर मे देख।
आतम देवत स्वास्वता, अपने घटमे पेष ॥ ४७ ॥
घटै पाप तप जापमें, बाढै पुन्य भण्डार।
चेतन चेतो ज्ञान में, तुरत जाय भव पार ॥ ४८ ॥
नर देहिको पाइकै, मत षोवै गुनवन्त।
धरम ध्यान कीजे सदा, सुमरो श्री भगवन्त ॥ ४९ ॥
नारी नेह निवारिए, सारी कीजे काम।
भारी करमन कीजियै, तुरत मिलै शिव धाम ॥ ५० ॥
नित उठ प्रभुको समरियै, जग नायक जिन देव।
मन वच काया शुद्ध व्है, कीजे निस दिन सेव ॥ ५१ ॥
नीत न छोड़ो धरम की, कर मन लागे कोय।
सरम रहै संसार में, भरम टलै सुख होइ ॥ ५२ ॥

नुगुरा कुछ जानै नही, आगम सास्त्र विचार।
सुगुरा गुर सेवन करै, जिन सूं उतरे पार ॥ ५३ ॥
नूर पाय नर रूपके, दूर करे अठ कर्म।
धर्म ध्यान मे नित रहो, छोडो जगके भर्म ॥ ५४ ॥
नेम धरम चित राखिये, समता कर पर नाम।
सत्य सील संतोष रष, पूरे वंछित काम ॥ ५५ ॥
नैना वही सराहियै, दिव्य नैन जो होइ।
अन्तर मुरत आपनी, ज्ञान ध्यान सूं जोइ ॥ ५६ ॥
नो कन कीजै काइसं, लोक लाज मन धार।
सव जिष एक समान है, पाप पून्य अवतार ॥ ५७ ॥
नौकर वाली फेरिये, थिर मन ध्यान लगाइ।
जीव दया चितमे धरे, सकल पाप मिट जाइ ॥ ५८ ॥
नन्दन नाभि नरिन्द के, आदि नाथ भगवान।
कृपा करो जन दीन पर, सेवक अपनो जान ॥ ५९ ॥
नहिं पावे गो ज्ञान विन, अविचल थान सुजान।
चेतनता सुध कीजिये, तौ पावे भगवान ॥ ६० ॥
चरण कमल गुरदेव के, सेवो मन वच काय।
जीव दया प्रति पालियै, पाप पङ्क मिटि जाय ॥ ६१ ॥
चाहे जाकों चाहिये, नहिं चाहे नहिं चाह।
पर मातम सूं प्रीति कर, आगै होइ निवाह ॥ ६२ ॥
चित परसन नित राखियै, हितकी कहिये वात।
वित्य खरचो सुभ काममे, पून्य होइ विष्यात ॥ ६३ ॥
चीखेगा जो प्रेम रस, ध्यान अमल लव लाय।
अनुभव ज्ञान प्रकास है, अन्धकार मिट जाय ॥ ६४ ॥

चुप व्है रहिये जगत में, बहु बोलै दुख होइ ।
जैसे शुक पिंजर पडै, काग न राखै कोइ ॥ ६५ ॥
चूर होइ वसु कर्म जब, तब पावै शिव थान ।
सुख अनन्त बिलसे, तिहां शुद्ध चेतना जान ॥ ६६ ॥
चेतन चेतो आपकों, पाप तजो सब दूर ।
जाप करो सुध होइके, सुख पावै भर पूर ॥ ६७ ॥
चैन होइ जब मैन बस, रैन दिवस सुख होइ ।
बैन शुद्ध बोलै सदा, उत्तम प्राणी सोइ ॥ ६८ ॥
चोरी पाप निवारियै, करले उत्तम काम ।
जगत जाल में आयके, भजले आतम राम ॥ ६९ ॥
चौरासी लक्ष भरम के, पावै नर अवतार ।
अबकै चेतो चेतना, तौ पावै भव पार ॥ ७० ॥
चंचल मन थिर राखिये, ज्ञान ध्यान मन लाय ।
तौ पावै सुख सास्वता, आवा गमन मिटाय ॥ ७१ ॥
चहुं गत भरमै जीवडा, लक्ष चौरासी रूप ।
अबकै चेतै चेतना, पावै ज्ञान अनुप ॥ ७२ ॥
छल नहि कीजे प्राणियां, सरल भाव चित धार ।
निहचै पावै परम पद, धरम उतारे पार ॥ ७३ ॥
छाडौ विषय विकार कों, पंच इन्द्रीको भोग ।
रसना इन्द्री जीतिये, तब है तेरा योग ॥ ७४ ॥
छिन छिन छीजे आउखो, समझो चेतन राय ।
धरम ध्यान कर लीजिये, मानव भवकों पाय ॥ ७५ ॥
छीलै दुर मति कन्द कों, पोखै समकित मूल ।
अविचल फल पावै सदा, सो चेतन अनु कूल ॥ ७६ ॥

छुवैन रामा पार की, लागै दोष अपार ।
अपजस पावै जगतमें, बुरा कहै संसार ॥ ७७ ॥
छुटैगा जब पाप सब, तब तुटैगा कर्म ।
छुटै अविचल सुख सदा, कर लेगा जब धर्म ॥ ७८ ॥
छेदै मत किन जीवको, सूक्षम बादर जोइ ।
कीजे दया छकाय की, पाप न लागै कोइ ॥ ७९ ॥
छेल सङ्गत तज दीजियै, गैल सन्त के जाय ।
मैल न लागे आपकों, जगमे जस अधिकाय ॥ ८० ॥
छोड करमके फन्द को, जगत बन्ध मिट जाय ।
सदा रहै आनन्द में, चिन्ता दुर पलाय ॥ ८१ ॥
छय रस पोषै प्राणियां, छोडै नही लगार ।
रसना रसके स्वाद में, पावै दुख अपार ॥ ८२ ॥
छोडै दुरगति चाल को, डंडै इन्द्री पांच ।
मंडै धरम सु सुध्यान में, शिव सुख पावै सांच ॥ ८३ ॥
छकाया प्रतिपालियै. पंच महाव्रत पाल ।
चेतनता सुध कीजीयै, हावे आप निहाल ॥ ८४ ॥
जगमें अपना को नहीं, सबे स्वारथी जान ।
पर भव जाता जीवनै, कोइ न राखै प्रान ॥ ८५ ॥
जागो आप सुजान नर, लागो प्रभु के ध्यान ।
जो संवेगा चेतना, तौ सही पावै ज्ञान ॥ ८६ ॥
जिन साहिब को सुमरियै, तिनकै ज्ञान अपार ।
राग दोषको परि हरो, तौ पावै भव पार ॥ ८७ ॥
जीतै इन्द्री पांच जब, पावै पंचम ज्ञान ।
फेर न जगमें अवतरै, शुद्ध चेतना जान ॥ ८८ ॥

जुग कर जोरै वीनवुं, अरज सुनो भगवान ।
आवा गमन निवारिये. साहिब कृपा निधान ॥ ८९ ॥
जुवा मांस सुरा तजो. परिहरो गनिका नारि ।
सिकार चोरी पर तिया. सातो व्यसन निवार ॥ ९० ॥
जेता लंबा सौड है, तेता पांउं पसार ।
आप अन्दाजे चालियै, कभि न आवै हार ॥ ९१ ॥
जैनी दया जु पालते, भगती में शिव भेख ।
मुशलमान आकीन में, तीनौ इक चित देख ॥ ९२ ॥
जो इह तीनों मन धरै, दया भगति आकीन ।
तौ पावै सुख सास्वता, चेतन सो परवीन ॥ ९३ ॥
जौलौं ज्ञान न ऊपजै, तौलौं काम न होइ ।
लक्ष चौरासी भरमना, कैसें छुटे सोइ ॥ ९४ ॥
जङ्गल में वासा किया, मन्दिर दीना त्याग ।
आसा तिसना ना मिटी, यह झुठा वैराग ॥ ९५ ॥
जप्प तप्प किरिया करै, नेम धरम चितलाय ।
मन अपना बस ना किया, सबी अकारथ जाय ॥ ९६ ॥
झगडै मत जग आयकै, क्षिमा धरम कर धार ।
रगडै करम कठोर को, आवा गमन निवार ॥ ९७ ॥
झाडै कासब करम कों, धर्म ध्यान फल पोख ।
चाखै समकित बीज कों, तब पावै सुख मोख ॥ ९८ ॥
झिल मिल जोत विराजते, सो साहिब को पेख ।
घटके पटकों खोलके, दिव्य नयन सुं देख ॥ ९९ ॥
झीलै समता तोय में, पावै ज्ञान तरङ्ग ।
विलसै अविचल सुख सदा, सिव सुन्दर के सङ्ग ॥ १०० ॥

झुरियै मत दुख पायके, सहियै आप विचार।
किया करम नहि छुट है, सूख दुख रहते लार ॥ १०१ ॥
झुठ बचन नहि बोलियै, लागे दोष अपार।
जगमे अपजस बिस्तरे, परभव दुख निरधार ॥ १०२ ॥
झेलै मारग धरम को, ठेलै बिसय बिकार।
नर भव लाहो लीजियै, भला कहे संसार ॥ १०३ ॥
झुजै एक समान है, झुठा जुठा जान।
सांचा साहिब सुमरियै, तौ पावै शिव थान ॥ १०४ ॥
झोली कीजै उदरको, हाथ पातरा जान।
दिग अम्बर धारे सदा, सो साधु गुन खान ॥ १०५ ॥
झोड़न कीजै काहुसू, क्रोध प्रीति को हान।
मान बिनय गुन नास है, कपट लोभ तज जान ॥ १०६ ॥
झंखै मत तुं आपको, चिन्ता कीजै टाल।
समता गुनको धारियै, छुट जाय भव जाल ॥ १०७ ॥
झड लागै प्रभु नामके, भागै मिथ्या चाल।
जागै अनुभव ज्ञान में, चेतन होइ निहाल ॥ १०८ ॥
नमस्कार गुरू देवको, कीजै सीस नमाय।
पावै मारग मोक्ष को, जब गुर होइ सहाइ ॥ १०९ ॥
नागा मुठी बांधकै, तुं आया निरधार।
अन्त समै नागा चलै, दोनो हाथ पसार ॥ ११० ॥
निस बासर सुमिरन करो, हरो पाप घन घोर।
सील क्षमा चित राखियै, भागै करम कठोर ॥ १११ ॥
नीब न मीठो होइगो, जो सींचै गुड घीव।
जिसका जोइ सूभाव है, कैसे फिरे सदीव ॥ ११२ ॥

सुकृती में तौले गये. कनक घूंघची सङ्ग
मान गुमान न कीजिये. देख २ निज अङ्ग ॥ ११३ ॥
नूतन बागा पहरते. चोया अतर लगाय ।
रैण दिना सुखमें रहै. सोभी जम घर जाय ॥ ११४ ॥
नेह जगत को छोड़के, लीजै अविचल गेह ।
अबके चेतो चेतना, पाये मनुषा देह ॥ ११५ ॥
नेह राखो इक धरम नो, बीजे नै कर दूर ।
जीव दया चित राखिये, सुख उपजै भर पूर ॥ ११६ ॥
नो जिय जीव अजीव छे, समझो चतुर सुजान ।
तत्वा तत्व विचारकै, सुमरो श्री नवकार ॥ ११७ ॥
नोवत बाजे द्वार मे, हय गय बहु असवार ।
धर्म्म ध्यान करते नहीं, सो किम उतरे पार ॥ ११८ ॥
नन्दा भद्रा फुनि जया, रित्का पूर्णा जान ।
एकम दूज अरु तीज है, चौथ पंचमी मान ॥ ११९ ॥
नहि विद्या नहि दरव है, कैसे सरि है काम ।
एक नामको आसरो, जामे लगै न दाम ॥ १२० ॥
टहल करै गुरु देव को, पावै ग्यांन अपार ।
जगमैं सोभा विस्तरै, भला कहै संसार ॥ १२१ ॥
टाल करम के फंद को, पालै आपनो धर्म ।
सरम रहै संसार में, छूट जाय सब भर्म ॥ १२२ ॥
टिके आय संसार में, रहे मोह लप टाय ।
निकसे प्रभुके नामसूं, आवा गमन मिटाय ॥ १२३ ॥
टीका प्रभुको दीजिये. नीके कीजे ध्यान ।
जिन सरूपहि मङ्ग वसे. उपजैं केवल ज्ञान ॥ १२४ ॥

टूक धीरज मन राखिये, समता सील सुभाव ।
मानव भव में आयके, मत चूकै तें दाव ॥ १२५
टूटे जग के जाल जब, छूटे पंछी जीव ।
लूटै अविचल सुख सदा, पावै अपने पीव ॥ १२६
टेक नाम की राखिये, छोडो काम विकार ।
धरम ध्यान कीजै सदा, तो पावै भव पार ॥ १२७
टैड वैड छोडो सबी, जोडो प्रभुसुं प्रीत ।
तोड करम के जालको, लीजे अपनी रीत ॥ १२८
टोना टामन टालकै, पालो अपने धर्म ।
भरम टलै संसार के, छुट जाय सब कर्म ॥ १२९
टौवा उडै वातास में, गगन पंथ की ओर ।
जगमें चेतन खेलते, सुरत लगाये डोर ॥ १३०
टंकार ध्वनि बाजत सदा, अन्तर से लप जीव ।
ज्ञान विना नहि साभले, चेतन आप सदीव ॥ १३१
टप भव सागर पार जा, अद्भुत महिमा देख ।
मिलै जोतमें जोत व्है, रूप रङ्ग नहि रेप ॥ १३२
ठग तेरे अंतर बसै, कहै काठिया नाम ।
बचे नाम परताप सूं, चोर न पावै दाम ॥ १३३
ठाम ठाम डोले मती. करो ध्यान इक ठोर ।
तब पावै परमातमा, बात नही है और ॥ १३४
ठिकरी हाटक एक सम. जो जाने सो साध ।
तिन को कीजै वन्दना, मेटे सकल उपाध ॥ १३५
ठीक रखो मन आपना, चंचल चित कर दूर ।
घट में साहिब निरखिये, सुख उपजे भर पूर ॥ १३६

टुमक२ मग चालते, निरख२ पग धार ।
जीव दया पालै सदा, सो साधु भव पार ॥ १३७
ठूंठ वृक्ष सोभे नही. कोइ न पूछै तास ।
सफल फलै सब कों भला. करै छांहकी आस ॥ १३८
ठेलै मदन विकार को. झेलै समता शील ।
मेलै दुर मत पाप सब. तौ पावै सिव लील ॥ १३९
ठहर रहै संसार में. निकसन की सुध नाहि ।
भव भव भरमे जीवडा. लख चौरासी मांहि ॥ १४०
ठोला बहु ते खायगा. जो नहि समझै आप ।
समझ बूझ कै चेतना. छोड दीजीयै पाप ॥ १४१
ठौर २ भटकै मती. राखो एक की आस ।
शिव सुख विलसै प्राणिया. पावै अविचल बास ॥ १४२
ठंडा पानी देखकै. मत तरसावै जीव ।
ऊना वारि अचित्त है, पीवै साध सदीव ॥ १४३
ठगनी माया जगत में. सबकों ठगा नीसंक ।
इन से को इन ऊवरा, क्या राजा क्या रंक ॥ १४४
डरियै दुरजन लोगसूं, करियै अपना काम ।
हरियै आठों कर्म कों, तौ पावै शिव धाम ॥ १४५
डामा डोल न कीजियै, अपने मन को आप ।
थिरता कर कै सुमरियै. जब छूटै सब पाप ॥ १४६
डिगै न अपने धरम सूं, सो साधु अनुकूल ।
दया सील समता रपै. विनय धरम को मूल ॥ १४७
डोल झोल सब पायकै, नर भव लाहो लेय ।
सुभ कारज कर लीजियै. बुरा फैल तज देय ॥ १४८

डुले डुलाये सें मिलै, ज्यु पंखे में पौन।
उद्यम कीजै प्राणियां, वैठा देगा कौन ॥ १४९
डूबै मत तूं जीवडा. भव सागर में आय।
नाम नाव चढ पार जा, सुष पावै अधिकाय ॥ १५०
डेरा आद निगोदमे, सव जीवन को जान।
करै कर्म को निर्जरा, पावै मोक्ष निदान ॥ १५१
डैना विन कैसै उडै, पंछी जीव सुजान।
शुकल ध्यान के पक्ष कर, लीजै तव शिव थान ॥ १५२
डोरी लागी प्रेमकी. भागी दुरमल काल।
जागा घटमें ज्ञान जब. चेतन भए निहाल ॥ १५३
डौल कौन तेरा वना. देखो हृदय मझार।
मनुषा देही पायकै, मती जमारा हार ॥ १५४
डडै इंद्री पंचजो, छंडै मदन विकार।
खंडै ममता मोह को. तौ पावै भव पार ॥ १५५
डग धरियै मग देखकै. चालियै राह सुचाल।
तव पावै अपना धणी. बिलसै अविचल माल ॥ १५६
ढलक पडे जब जीवडा, सुध नहि रहै लगार।
पाप पून्य जे बांधिया, ते पावै निरधार ॥ १५७
ढाल धरम कर लीजियै. क्षिमा खडग धर हाथ।
मोह वलीको जीतियै. तौ पावै शिव नाथ ॥ १५८
ढिग नहिं जइयै दुष्टके. नहि कीजे विश्वास।
सङ्गत कीजे साधकी. पूरे मनकी आस ॥ १५९
ढील न कीजे धर्म में. तुरत पून्य कर आप।
दुख दोहग दूरे टलै. छुट जाय सब पाप ॥ १६०

ढुले जीव तनसूं जवै. कोइ न राखन हार ।
मात पिता भाइ सजन. जो करते बहु प्यार ॥ १६१
ढुंढेगा पावै सही. घटमें देख निहार ।
बिन देखे पावै नही. सत्य बचन उर धार ॥ १६२
ढेर दरब तें पायकै. किए न उत्तम काम ।
घेरै जम जब आयकै. धरे रहैं सब दाम ॥ १६३
ढै पडिया जोवन जबै. कोइ न पूछै बात ।
पूंजी होय तो खाइयै. नहि तो दुख बिष्यात ॥ १६४
ढोक दीजियै देवको. दरसन कर निज रुप ।
अन्तर निरखो आपने. घटमें देव अनुप ॥ १६५
ढौर छोड बक वाद की. गौर करौ सब जीव ।
दया धरम कीजै सदा. पावै अपना पीव ॥ १६६
ढङ्ग सीखियै धर्म को. छोड कुढङ्ग कुचाल ।
सब जनमें सोभा बधै. पर भव होइ निहाल ॥ १६७
ढकी बात नहि खोलियै. घटै माल अरु तोल ।
पड्दे में परमातमा. देखो घट पट खोल ॥ १६८
नरक तिर्यंच देव गति. तीनों में नहि मोख ।
मानव भवसें मुकत है. जो छुटै सब दोख ॥ १६९
नाता तोडो जगत सुं. जोडो प्रभुसूं हेत ।
मोडो मन वच कायकों. तो पावो शिव खेत ॥ १७०
निर्मल समकित वंत है. निर्मल केवल ज्ञान ।
निर्मल चेतन होइगो. जब पावै सिव थान ॥ १७१
नीच सङ्ग नहि कीजियें. कीजि सज्जन भेट ।
[illegible] आप विचारके. अनन घटमें पेट ॥ १७२

नुकसान द्रव्य न कीजियै. पूंजि राखियो पास ।
करले उद्यम धर्मको. वहुत नफा व्है तास ॥ १७३
नूतन तन जीरन भए. मन न भए अब थीर ।
किस विध कारज होइगें. ज्ञान विना गुन धीर ॥ १७४
नेकी जगमे कीजियें. वदी दीजियै छोड ।
जगमें सोभा विस्तरें. भला कहै लख कोड ॥ १७५
नेरी मुक्त सुहावनी. पार ब्रह्मको राज ।
पट राणी समता भली. करे जीव को काज ॥ १७६
नोच जगतके जालको. करम भरम टल जाय ।
पञ्चम गति पावे सही. सुध कर मन वच काय ॥ १७७
नौकर जिनवर के भए. जो सबके सिर ताज ।
औसे साहिब पायकै. कौन करे बद काज ॥ १७८
नंदीश्वर यात्रा करै. सुर विद्याधर आय ।
लब्ध वन्त साधु तिहां. दरसन को नित जाय ॥ १७९
नगन आय संसार मै, नागा जागा आप ।
दया धरम कीजे सदा, छुट जाय सव पाप ॥ १८०
तन तेरा नहि प्राणियां, छोड चलेगा प्राण ।
जोतें पोषे आपको, सो नहि रहै निदान ॥ १८१
तात मात परिवार सब, कोइ न आवे काम ।
एकाकी तैं जाइगा, साथ चले नहि दाम ॥ १८२
तिल तिल छीजे आउखा, उमर विहानी जाय ।
जो तुं समझे आपको, सुख पावै अधिकाय ॥ १८३
तीन तत्व को धारिये, दरसन ज्ञान चरित्र ।
तो पावै परमातमा, आपा होइ पवित्र ॥ १८४

तुरत धरम कर लीजिये, मती लगावो वार ।
मनुवा देही पायकै, आपा आप विचार ॥ १८५

तुठैगा साहिव जवै, सेवा कर नित मेव ।
मन वच काया सुद्ध है, पूजो अपना देव ॥ १८६

तेरा जगमे को नही, मात पिता परिवार ।
एकाकी तें जायगा, टको न चालै लार ॥ १८७

तें जाने सव आपना, तन धन जोवन पाय ।
जातें वार न लागि है, समझो चेतन राय ॥ १८८

तोड करम के जालको, पालो अपना धर्म ।
सद् गुरुकी सेवा करो, छुट जाय सब भर्म ॥ १८९

तौलों ज्ञान न ऊपजे, नहि पावे विसराम ।
च्यारों गतमे भरमना, लख चौरासी ठाम ॥ १९०

तन्त्र मन्त्र अरु यन्त्र जो, सरैन इनसे काज ।
एक नाम चित धारिये, पावे अविचल राज ॥ १९१

तप जप संजम कीजिये, मोह ममता को टार ।
सत्य सील संतोष रप. तौ पावै भव पार ॥ १९२

थके न मारग धरम को. थांभ नाम की डोर ।
पहुंचे शिव नगरी तुरत. छांडै करम कठोर ॥ १९३

थाती राखिये आपनी. दीजे नहीं पर हाथ ।
सुभ कारज में खरचिये. सो धन तेरे साथ ॥ १९४

थिरता मनमें राख के. धरम ध्यान नित पाल ।
करम तुझे लागे नही. पावे अविचल माल ॥ १९५

थीर होइ इक चित्तसुं. सुमरन करो सुजान ।
तो पावैगा परम पद. पहुंचैगा शिव थान ॥ १९६

थुनियैं प्रभुके गुननको. भाव भगत उर आन ।
तौ पावै सुख सास्वता, समता मनमें ठान ॥ १९७
थुल पंच व्रत आदरै. छोंडै विषै विकार ।
शुद्ध चेतना होइ जब. तौ पावै भवपार ॥ १९८
थेट जायगा जीव जब. मेट कर्मके जाल ।
क्रिया वरत चितमें धरों. पंच महाव्रत पाल ॥ १९९
थैली अपनी खोलकै. खरचो दर्व सुधर्म ।
परभव जातां जीवको. कोइ न लागे कर्म ॥ २००
थोंडे सुखके कारणे. क्यों खोवै अवतार ।
तप जप संयम कीजियै. तौ पावै भवपार ॥ २०१
थौंगी धुन धुधु कट वजै. तन मृदङ्ग धौंकार ।
लख चौरासी जोनिमे. जिय नाचै निरधार ॥ २०२
थंभ नही आकासमे. धरती नहि आधार ।
ए अनादके भाव हैं. चौदह राज उदार ॥ २०३
थर हर जीव न कीजिये. कर निश्चल मन ध्यान ।
करम अष्टको जीतके. लीजे केवल ज्ञान ॥ २०४
दरसन ज्ञान चारित्र को. अपने उरमे धार ।
समकित पावै प्राणियां. अविचल सुख निरधार ॥ २०५
दान शील तप भावना. मुक्ति राह इह च्यार ।
लीजौ चितमें धारके. तब उतरे भव पार ॥ २०६
दिन दिन छीजे आउखा. अंजुली नीर समाण ।
जो अबके चेतै नही. तौ होगा हैराण ॥ २०७
दीना नाथ अनाथ की. सुध लीजे भगवान ।
सेवक अपनो जानके. दीजे अविचल थान ॥ २०८

दुरमत अपनी परि हरो. रखियो समता भाव।
मानव भव तें पायके, मत चुके इह दाव ॥ २०९
दूत पना कीजे नहीं, लागे दोस अपार।
अपजस जगमें विस्तरे, बहु भरमें संसार ॥ २१०
देना रखे न काहुको, करज महा दुख देत।
इह भव परभव बीगडै, लेवै ब्याज समेत ॥ २११
दैव करे सो होयगा, सोच न कीजे कोइ।
देवी देव मनावतें, करम लिखा फल होइ ॥ २१२
दोस न दीजे काहुको, दुख सुख भाग्य प्रमाण।
आप किया फल पाइयै, पाप पुन्य जिय जान ॥ २१३
दौलत थिर नहि काहुको, योवन वी थिर नाहि।
अन्त चलेगा एकला, समझ देखि मन माहि ॥ २१४
दंभ न कीजै प्राणियां, बंभ वरत चित धार।
सत्य सील सन्तोष में, भव दधि उतरे पार ॥ २१५
दश विध धर्मज पाल तें, पंच महाव्रत धार।
सुमति गुपति मनमें रखे, ले निरदोस अहार ॥ २१६
धरम ध्यान कीजै सदा, दान सील तप भाव।
अबके तो चुके मति, नर भव पाये दाव ॥ २१७
धारो अपने चित्तमें, निज मुरतको आप।
जहां तहां नित भटकके, काहे करत कलाप ॥ २१८
धिग जीवन है तासको, जोनहि कीना धर्म।
मनुखा भवमें आयके, क्यों बांधे तें कर्म ॥ २१९
धीरज मनमें राखिये, कीजे नही उताल।
पावेगा तें प्राणियां, लेख लिखा सो भाल ॥ २२०

धुनि राखौ इक नामकी, अवर वात सब त्याग ।
मनुषा देहि पायकै, बुरा फैल सूं भाग ॥ २२१
धूम धाम कीजे नहीं, राखो समता भाव ।
तौ पावै सुख सास्वता, धरम ध्यान मन लाव ॥ २२२
धेनु जगमे सरस है, काम धेनु जो होइ ।
मन इच्छा पूरण करे, जिन आगम को जोइ ॥ २२३
धैर्य वन्त हुय जे सदा, सरि है तेरा काज ।
चेतन्नता सुध होइकै, लीजे अविचल राज ॥ २२४
धोवैगा जब पाप सब, उज्जल होगा आप ।
तौ पावै परमातमा, छूटै सबी कलाप ॥ २२५
धौरा घरमे वैठके, करते नाना भोग ।
सोभी यम घर जाहिंगे, देखेंगा सब लोग ॥ २२६
धंधे जगके छोडिये, भजियै श्री भगवान ।
राग दोष नहि राखियै, पावै अविचल थान ॥ २२७
धन दवलत कों पायकै, काहे करत गुमान ।
एतो थिर नाहि रहै, संध्या रंग समान ॥ २२८
नही टरै सिर लेषजो, करै जु कोट उपाय ।
होतव सोतौ होइगो, सो क्यों मेटा जाय ॥ २२९
नाम एक चित धारियै, दुविधा दीजै छोड़ ।
तौ कारज सब सिद्ध व्है, जगत जालकों तोड ॥ २३०
निकलैगा भव कूपसूं, तब पावै सुख चैन ।
फिर नहि जगमें अवतरै, ज्ञानी कहते वैन ॥ २३१
नील फूल चांपै नही, लागै दोष अपार ।
जीव दया प्रति पालियै, तौ पावै भव पार ॥ २३२

नुकसा सिद्ध स्वरूप को, सुनियो चतुर सुजान।
पञ्च महाव्रत सेवियै, उपजै केवल ज्ञान॥ २३३
नूतन को जीरन करै, काल कहावै सोइ।
समझ लीजियै प्राणिया, अजीव तत्व में जोइ॥ २३४
नेत्र अपना खोलकै, दिव्य दिष्ट सूं देख।
घटमें साहिब निरिखियै, ज्ञान ध्यान में पेष॥ २३५
नैन वैन अरु नाशिका, श्रवण अंग सुख भोग।
इनके लालच फरस है, तिन कौ नहि है जोग॥ २३६
नो चल मारग पापकै, लागै दोष अपार।
धर्म राह में जो चलै, पावै सिव भंडार॥ २३७
नौकार मंत्र जप सदा, चौद पूर्व को सार।
एक चित्त सूं जप करै, सो पावै भव पार॥ २३८
नंदीषेण सु साधु को, वंदो सदा तिकाल।
मन वच काया शुद्ध है, पंच महाव्रत पाल २३९
नमो अरिहन्त देवको, सिद्ध सूरी उपझाय।
सकल साधको वंदना, पाप सबी मिट जाय॥ २४०
परम जोति परमातमा, परमेश्वर पर धान।
नमस्कार ताको करे, सुद्ध चेतना जान॥ २४१
पाप छोड़ तप जप करे, फलै मनोरथ माल।
दया धरम चित राखियै, शील व्रत को पाल॥ २४२
पिता धर्म माता क्षिमा, भाइ संजम जान।
सांच पूत्र भगनी दया, तिय संतोष बखान॥ २४३
पीवै पानी छाणकै, सो जैनी कुल वन्त।
जीव दया चितमें धरै, सुमरै श्री अरिहन्त॥ २४४

पुन्यवंत जे प्राणियां, विलसै सुख श्री कार ।
पापी दुख पावै सदा, भरमें बहु संसार ॥ २४५
पूजा प्रभुकी कीजिये, द्रव्य भाव दो भेद ।
जिनवर की भगती करो, मन आनो मति खेद ॥ २४६
पेट भरणके कारनें, करते कोड़ि उपाय ।
कर्म लेख मेटै नहीं, समझो चेतन राय ॥ २४७
पैसै जाइ समुद्र में, गिरसें पडिये धाय ।
मुरख मीत न कीजियै, जनम झुरतां जाय ॥ २४८
पोखै मत तु देहको, सोखै तप कर काय ।
तौ पावे सुख सास्वता, आवा गमन मिटाय ॥ २४९
पौन ऊरग पीवे सदा, दुर्वल नही सरीर ।
मुनि रूखा भोजन करे, मनमें राखै धीर ॥ २५०
पंच परम पद सुमरियै, पाले पंचाचार ।
पंच विषैको परिहरै, पावै सुख निरधार ॥ २५१
पर सङ्गत को छोडके, निज आतम को जान ।
तौ पावै परमातमा, धर्म ध्यान उर आन ॥ २५२
फरस रस घ्राण चक्षुका, श्रवण इन्द्रीका पंच ।
गज झख अली पतङ्ग है, नाद कुरङ्ग त्रियंच ॥ २५३
फासु भोजन कीजिये, सचित करो परिहार ।
साधु को इह पंथ है, भक्ष अभक्ष विचार ॥ २५४
फिर फिर गरभा वासमें, लख चौरासी रूप ।
ज्ञान विना भरमें सदा, नहि छुटै भव कुप ॥ २५५
फीके जगसूं होइके, सीखे उत्तम चाल ।
जीव दया चितमें धरै, पंच महाव्रत पाल ॥ २५६

फुरके नैना दाहिने, ऊपर को सुख जान ।
नेत्र बाम नीचे भलो, नरको होइ कल्याण ॥ २५७
फुलै मत संसार में, झुलै करम हिन्डोल ।
लख चौरासी पेंगमे, जीव सदा डम डोल ॥ २५८
फेरै मनकों आपनें, जीतै विषय बिकार ।
तौ पावै सुख आतमा, भव दधि उतरै पार ॥ ५९
फैल वुरा सब छोडके, भले पन्थ में आव ।
मानव भव खोये मती, अवके पाये दाव ॥ २६०
फोकट गरब न कीजियै, नहिं विद्या नहिं दाम ।
छोटे सवसैं होइकै, कीजै अपने काम ॥ २६१
फौज जीतिये माहकी, तव चेतन शुध होइ ।
शिव मगमें पग दीजियै, पला न पकडै कोइ ॥ २६२
फन्द करमके तोडकै, जीव चले शिव थान ।
फिर भवमें आवे नही, सुद्ध चेतना जान ॥ २६३
फसै न जगमे आयकै, विसय सुखौं कौं पाय ।
धरम ध्यान कीजै सदा, तौ अविचल सुख थाय ॥ २६४
वहुत वोल वोले नही, वोलै समें विचार ।
वोल यथारथ वोलिये, सवकों लागे प्यार ॥ २६५
वालापनमें खेलते, तरुण भए रस रङ्ग ।
वृद्ध समें नहि चेतिया, तीनो खोये अङ्ग ॥ २६६
विन दीये लेवे नही, साध विराना माल ।
दान अदत्ता छोडियें, पंच महाव्रत पाल ॥ २६७
वीते आप सरीर कों, सुख दुख जेता होइ ।
धरम ध्यान कीजे सदा, शिव सुख पावै सोइ ॥ २६८

बुद्धि पायके प्राणियां, कीजै तत्व विचार।
द्रव्य मिलै तौ दान दे, अङ्ग सार व्रत धार॥ २६९
बूडै मत संसार में, जग सागर विस्तार।
धर्म नावमे बैठिये, तब उतरै भव पार॥ २७०
बेर बेर समझावते, समझै नही गमार।
भव सागर में आयके, कैसे उतरे पार॥ २७१
बैठो सङ्गत साधुको, दूर जागा सब व्याध।
बुरे सङ्ग नहि बैठिये, निस दिन होइ उपाध॥ २७२
बोलो बात सुहावनी, सब कों लागै प्यार।
खोटी बात न भाषियै, बुरा कहै संसार॥ २७३
बौरे से दौरे फिरे, ज्ञान विना इह जीव।
जिनको समकित ऊपजा, पहुंचै मुकत सदीव॥ २७४
बंदों सीस नवायकै, सकल साधके पाय।
देव धरम गुरु सेविये, सबी पाप मिट जाय॥ २७५
बरस मध्य इक बार जो, करै धर्म चित लाय।
पर भव जाता जीवको, सोई धर्म सहाय॥ २७६
भविजन भज भगवन्त को, तजियै मोह विकार।
जीव दया चित में धरो, तौ उतरै भव पार॥ २७७
भाग्यवन्त ये प्राणिया, पग पग होइ निधान।
जोजन में रस कूपिका, मिलै पुन्य सुं आन॥ २७८
भिडे न काऊ जीवसों, भाषै नही विपरीत।
सील दया चित राखियै, कीजै सबसूं प्रीत॥ २७९
भीतर घटमे देखियै, दिव्य नयन को खोल।
तौ पावै परमातमा, अवर ठौर मत डोल॥ २८०

भूवन पती रीझै जवै. तौ दवै इक गाम ।
तुम त्रिभुवन पति नाथ जी. रीझ देउ शिव धाम ॥ २८१
भूल रहे संसार मे, विषयन सुख लपटाय ।
जो नही चेतै प्राणिया, सो जग आवै जाय ॥ २८२
भेख धरै जो साधको, तौ ममता मत राख ।
जीव दया प्रति पालियै, असत बैन मत भाख ॥ २८३
भै नही कीजे प्राणिया, निर्भय कीजे ध्यान ।
मन वच काया वस करौ, उपजै केवल ज्ञान ॥ २८४
भोग किए बहु रोग है, जोग किये सुख चैन ।
चेतनता शुद्ध होइ कै, ध्यान करै दिन रैण ॥ २८५
भौ सागर मे आयकै, बुडे मत संसार ।
नाम नाव पर बैठकै, उतर जाय भव पार ॥ २८६
भञ्जो आठौ करम को, जग भर मन छूट जाय ।
पावै शिव शुख सास्वता, आवा गमन मिटाय ॥ २८७
भरम जगत के छोड़के, धरम ध्यान मन लाव ।
छूटै करम अनाद के, तौ अविचल सुख पाव ॥ २८८
मन वस रख नित धरम धर, करम भरम तज दूर ।
भजन करत नर परम पद, मिलत मुकत सुख पूर ॥ २८९
माया काया कारिमी, जैसे संध्या रंग ।
जाता देरी ना लगै, छोडो याको सग ॥ २९०
मिलै सुगुरु सांसा मिटै, जगै ज्ञान घट बीच ।
भगै करम के फन्द सू, पडै नहीं भव कीच ॥ २९१
मीत तीन है जीवको, देही अरु परिवार ।
तीजै मित्र सु धर्म है, चेतन नित मे धार ॥ २९२

मुनिवर को नित बंदियै, भाव भक्ति उर आन ।
मुनि सम जगमें को नही, मुनिजन है गुन खान ॥ २९३
मूठा बांधै आवता, जाता हाथ पसार ।
दिया लिया सङ्ग जायगा, पाप पुन्य है लार ॥ २९४
मेरे मन पर तीत है, जिन आगम की वात ।
अवर बात मन ना बसै, किहां दिवस अरु रात ॥ २९५
मै मैं कै बिल्ला वगे, मै नही छोंडे जीव ।
ममत में न जब छूटियै, तब पावै निज पीव ॥ २९६
मोक्ष होइ जब जीवडा, तब छुटै सब व्याध ।
नहितो जगमें भरमते, आवा गमन उपाध ॥ २९७
मौनी वन बोले नही, मांगै सान बताय ।
पेट भरण के कारणें, करते कोड उपाय ॥ २९८
मंगलिक प्रभु नाम है, मत विसरो गुन खान ।
चेतनता शुद्ध होइके, लीजै अविचल थान ॥ २९९
मनुषा भवमै आयकै, भूलै मत गुण वंत ।
धरम ध्यान कीजै सदा. सुमरो श्री अरिहन्त ॥ ३००
यती धर्म दश जानियै, खंतादि गुण खान ।
पंच महाव्रत पालते, जीव दया चित आन ॥ ३०१
याचक गुण लघुता धरे, कामी धरै कलंक ।
दुष्ट विराणा दोष तक, बोलै बात निसंक ॥ ३०२
यित तित तुम डोलै मती, निज घट देख विचार ।
पर संगत को छोडके, आपा आप निहार ॥ ३०३
पीत भीत सब दूर कर. निरभय सुख शिव वास ।
फिर नहि जगमें भरमना. शुद्ध चेतना तास ॥ ३०४

युगम जातके जीव हैं. त्रस अरु थावर भेद ।
इन की रछ्छा कीजियै. पाप करम को छेद ॥ ३०५
यू वे योगी ज्ञान में. ध्यान करै नित मव ।
घटकै पटकों षोलकै. देखे अपना देव ॥ ३०६
जेष्ठ भ्रात्रको देखकै. करै विनय प्रणाम ।
तौ सूख पावै जीवडा. पूरै वञ्छित काम ॥ ३०७
यैसा पूरव पुन्य है. तेसा उपजै ज्ञान ।
सोच न कीजे प्राणिया. कीजै निर्मल ध्यान ॥ ३०८
योग वहै सब मुनिवरा. क्रिया करै दिन रात ।
निरदूखन भोजन करै. जीव करै नहि घात ॥ ३०९
यौन सवी फिरी आइकै. पाये नर अवतार ।
अवके समझो चैतना. तौपावै भव पार ॥ ३१०
यन्तर कर देखे सवी. मन्तर पढै अनेक ।
तन्तर में कुछु ना भई. राखो नामकी टेक ॥ ३११
यस वाधै जो काम में, सोई कीजे काम ।
खोटी वात न कीजीयै. होवेगा वदनाम ॥ ३१२
रतन तीन मनमें धरो. दरसन ज्ञान चरित्र ।
तो समकित सुख उपजै. चेतन होइ पवित्र ॥ ३१३
राग दोष सव परिहरो. समता रख परनाम ।
मोह ममता कीजे नहीं, तौ पावै शिव धाम ॥ ३१४
रिद्ध पाय भुले मती, धन खरचो सुभ काम ।
दीजे दान सुपात्रकों. पावै शिव विसराम ॥ ३१५
रीस न कीजे काहू पर. सब जिव एक समान ।
जैसा दुख है आपनें, तैसा पर दुख जान ॥ ३१६

रूलै जीव गति च्यारमें, लख चौरासी रुप ।
ज्ञान विना भरमे सदा, नहिं छुटै भव कूप ॥ ३१७-२८
रूप देख निज रूपको, घटमें रुप सरुप ।
अन्तर ध्यान लगाय कैं, देखो रुप अनुप ॥
रेखा लिखी ललाट में, सो नहि मेटै कोइ ।
सोच न कीजै प्राणियां, करम लिखा फल होइ ॥
रैण समें बासा करै, प्रात भयें उठ जाय ।
इण विधि किरिया जो करे, सो जन साध कहाय ॥
रोक दाम लाए इहां, नफा करणके हेत ।
सो तैं हारे जात हैं, तनक रहो ए चेत ॥
रौला जगमें मत करे, होलें कहियै बात ।
मीठा वोल सुहावने, भला कहे सब जात ॥
रंचक सुखके कारने. लपट रहे संसार ।
एही सुख दुख होइगा, समझे नहीं गमार ॥
रस इन्द्री को जीतिये, धरम ध्यान मन लाय ।
लघु भोजन रूखा करे, तप कर सोखै काय ॥
लख चौरसी योनिमे, जिवडा आवे जाय ।
ज्ञान विना भरमे सदा. मिले ज्ञान सुख थाय ॥
लाख वार विनती करों. सुनियो श्री भगवान ।
अबके किरपा कीजियै. दीजै अविचल थान ॥
लिखा लेख लल्लाट में. सुख दुख जेता होइ ।
तेता फल पावे सही. अधिक न उछा कोइ ॥
लीजै मारग धरमके. कीजे ज्ञान विचार ।
भीजै समकित तोयमें. सुख पावै निरधार ॥

लुलता सब दूरैं हरो. रखो सत्य सन्तोख ।
एक ध्यान कीजै सदा. तौ पावैगा मोख ॥ ३२९–४०
लुटे धन सब जात है. जो लायाथा साथ ।
बाकी रही सु राखियै. धरम मित्रके हाथ ॥
लेकै कुछु नहि जावगे. जो नहि कीन्हा धर्म ।
पून्य नफा करकै चले. रहै जगतमे सर्म ॥
लै लागी प्रभु नामकी. बिसर गये सब काम ।
आनन्द घटमे ऊपजी. पाए शिव विसराम ॥
लोचन अपने खोलकै. देखो दृष्ठ पसार ।
छाया अपनी देखियै. उज्वल है सुख कार ॥
लौ राखो इक नामकी. सबी बात दे छोड ।
तौ पावै सुख सास्वता. करम बन्धको तोड ॥
लम्पट को आदर नहीं. करे न को विसवास ।
सील वन्त जो प्राणियां. सब बैठावैं पास ॥
लगा रहै बद काममें. छोडे नहीं गमार ।
अन्त समें सुख ना मिलै. पावे दुख अपार ॥
वजन रहै तेरा जबै. पूरा पावै ज्ञान ।
तोल घटै बद काममें. कोइ न देवै मान ॥
वाको दरसन कीजियै. जाके रुप न रेख ।
निज घटके पट खोलकै. दिव्य नयन सूं देख ॥
विष अमृत सम होइगा. जो पालैगा सील ।
विघन टलै सुख ऊपजै. मिलै सदा शिव लील ॥
बीते दिन सब जात हैं. आऊ उछा होइ ।
जो नहि चेतै प्राणियां. जनम जायगा खोइ ॥

बुतसे काहे हो रहे. करो ज्ञान घट मांह ।
शिव पूर जातां चेतना. कोइ न पकडै बांह ॥ ३४१-५२
बूठा अमृत मेह जब. निज घट आपा जोइ ।
चेतनता सुध होयगो. झीलै समकित तोइ ॥
बेद तीन छुटै जबै. तब जीव पावै चैन ।
तीन रत्न घट ऊपजै. शिव पूर जावै अैन ॥
बैन बोलियै समझके. दोष न लागै कोइ ।
जीव दयाके कारनें. चलियै मारग जोइ ॥
बोसराबियै पाप सब. निस दिन कीजै ध्यान ।
राग दोष नहिं राखियै. उपजै केवल ज्ञान ॥
दौरे से दोरे फिरैं. लख चौरासी माहिं ।
ज्ञान बिना थिरता नहीं. फिर आवै फिर जांहि ॥
वंस पाय उत्तम जबै. करता मध्यम काम ।
कुलकी लाज गमाय कै. होवे जग बदनाम ॥
वसी करन जग दर्ब है. जिनसूं सब व्हे काम ।
जो तुं चाहे मुकत सुख. जप परमातम नाम ॥
शरण आय भगवान के. तजै करण सुख जीव ।
तौ पावै परमातमा. शिव पूर जाय सदीव ॥
शास्त्र अनेकन जो पढै. पन्डित जग बिच सोय ।
राग दोष छोडै नहीं. मुकत कहांसै होय ॥
शिव पूर अविचल राज है. भव्य जीवकों होय ।
अभव्य जगमें भरमते. पार न पावै सोय ॥
शील वन्त यो प्राणिया. तिनको राग न दोख ।
मगन रहै संतोष में. तब पावै सुप मोख ॥

शुकल ध्यान में मुक्ति है, धर्म ध्यान सुर होइ ।
समता मनमें लायकै, करो ध्यान सब कोइ ॥ ३५३-६४
शूली सम जग जानियै, भूलै सब संसार ।
भव्य जीव जो चेतिया, ते उतरै भव पार ॥
शेष नाग वसुधा धरै, इम कहते संसार ।
भाव अनादि जानियै, तन घन वात आधार ॥
शैली रख इक धरम की, मैल न लागै कोइ ।
निर्मल चेतन होइकै, शिवपूर लीजै जोइ ॥
शोभा पावै धरम में, पाप-कर्म दे छोड़ ।
शिव सुष विलसै आतमा, अष्ट करम कों तोड़ ॥
शौकन कीजै विषय को, पावै दुक्ख अपार ।
धरम ध्यान कर लीजिये, सुख उपजै निर धार ॥
शंष बजै बहरा निकथ, वह देखै फल खाइ ।
ज्ञान हीन जो प्राणिया, सदा विवेक न थाइ ॥
शशी कलंक कंटक कमल, निरधन है दातार ।
धन वन्त कृपणता धरै, दोष सबन के लार ॥
षट काया प्रति पालते, जीव दयाके काज ।
तिनको दोष न लागि है, पावै अविचल राज ॥
खाना पीना पहरना, जिनको मिलै अगार ।
पुन्यवन्त नर जानिये, दुख नहि होइ लगार ॥
षिरै करम आठों जबै, तब पावै शिव थान ।
नहितो जगमें भरमना, लख चौरासी जान ॥
षीजै मत कोिग जीवसूं, कीजै धर्म सनेह ।
चेतन चेतो आपको, फिर नहि मनुष्य देह ॥

खुसी रहै मन में सदा, दिलगीरी कर दूर ।
समता गुण चित लाइये, सुख पावे भर पूर ॥ ३६५-७६
खूटेगा जब आउषा, तब थिरता नहि होय ।
जीव चलै तनसूं निकल, राखन हार न कोय ॥
खेती उत्तम कीजियै, धर्म भूम सुख कार ।
रोपो समकित बीज को, फलै पुण्य निरधार ॥
खैर जान के होइगा, जब सुमरैगा नाम ।
सकल व्याध दूरे टलै, सुफल होइ सब काम ॥
खोटी बात न कीजियै, जिनसै होइ उपाध ।
भलै भलाई ना तजै, ज्यौं दुख पडै अगाध ॥
खौप न कीजै प्राणिया, समता मनमे लाव ।
जो अबकै चेतै नही, फेरण ऐसा दाव ॥
खण्डन मनको कीजीयै, छंडो विषय विकार ।
डंडो इंद्री पांच जब, तब पावै भव पार ॥
खपै करम जब मुक्ति है, जपै नाम चित लाय ।
बुरे फैल कीजे नही, आवा गमन मिटाय ॥
समकित पावे प्राणिया, पहुंचे अविचल थान ।
फिर नही जगमे भरमना, छूटै करम निदान ॥
साचा को सब चाहते, झूठा को नहि मान ।
बोल यथारथ बोलिये, चेतन होइ कल्याण ॥
सिद्ध बराबर सुख नही, दुख नहि नरक समान ।
सुद्ध चेतना होइकै, लीजै शिव पूर थान ॥
सीखे वेद पुरान सब, सीखे जोतिक सार ।
एकै दया न सीखिया, गए जनम को हार ॥

सुनकै कथा पुरानकों, हियमें उपजी ज्ञान ।
राग दोष कौ छोडकै, सदा करै शुभ ध्यान ॥ ३७७-८८
सूम दरब खरचे नहीं, जोड जोड मर जाइ ।
सखी जीव धरमातमा, धन खरचै और खाइ ॥
सैरी सैरी भरमते, काहे चतुर सुजान ।
घटमें देख निहारके, तब पावै भगवान ॥
सैना सनमुख मोहके, करै जुद्ध जिय साथ ।
ज्ञान कटक समता लियैं, जीत भइ जिय नाथ ॥
सोना रुपा देखकै, भुग भुग लये सब जात ।
च्यार दिनांकी चांदनी, फेर अंधारी रात ॥
सौले पासे डालकै, चले जु अवलेस चाल ।
विना समझे हारे सदा, समझे जीते लाल ॥
संयम मारग कठिन है, जो पालै सो सूर ।
सत्य सील समता धरै, करम करे चकचूर ॥
समझो चेतन आपको, सदा करे तप जाप ।
शुभ करनी मनमें धरे, दूर जाय सब पाप ॥
हस हस कर मन बांधिये, नहि छुटेगा रोय ।
समझो समता ज्ञानमें, चेतनता सुख होय ॥
हारे मत जग आयकै, सारे आतम काज ।
टारै राग अरु दोषकों, तौ पावै शिव राज ॥
हित कीजै सब जीव सूं, बैर भाव तज देय ।
जो तु आया जगतमें, शुभ करनी कर लेय ॥
हीनें सू नहि बोलिये, हीन होइ सब ज्ञान ।
जो तूं चाहे आपकों, तो करिये शुभ ध्यान ॥

हुकम बडेको राखियै. शीख वडे की मान ।
कीजै काम बिचारके. पाप पून्य पहिचान ॥ ३८९–४००
हूवा मनुखा देहतें. पूरव पून्य प्रभाव ।
अबकै चेतो चेतना. धरम ध्यान मन लाव ॥
हेलेगा भव सिंधु जब. तब उतरेगा पार ।
मेलै कर्म कुचाल कों. सुख पावे निरधार ॥
है तुझम परमातमा. नहि सूझे दृग हीन ।
दिव्य नयन सूं देखियै. जो होवे परवीन ॥
होन हार सो होयगा. अन होनी नहिं होइ ।
लिखा लेख जो भालका. मेट सके नहिं कोइ ॥
होले होले साधिये. विद्या अरु अभ्यास ।
मिहनत सूं सब सिद्ध व्हे. पूरे मनकी आस ॥
हंसा जब उड जायगा. पिंजर रहै निदान ।
तब बसाय कछु ना चले. समझो आप सुजान ॥
हलकी बात न बोलिये. अपने मुखसूं वैन ।
धर्म ध्यान की बारता. सदा कहो दिन रैन ॥
लगन लगी प्रभु नामसूं. विसर गइ सब काम ।
समता मनमें उपजे. पावै शिव विसराम ॥
लाज करो बद फैलसूं. लपटो मत संसार ।
अपना जगमें को नहीं. झुंठा मोह विकार ॥
लिव लगै जिन वातमें. सो नहिं कहिये वात ।
भली वातमें जस वधे. सो कहिये विख्यात ॥
लीला कछु कीजे नहीं. लीला दोष विलास ।
लीला जगकी छोडिये. तब पावे शिव वास ॥

लुब्ध रहै संसारमें. कुबुध किये सब काम ।
सुबध ध्यान आवै जबै. तव पावै विसराम ॥ ४०१-१२
लुखा सूखा खायके. निर्मल पानी पीव ।
परकी चुपडी देखिके. मत तरसावै जीव ॥
लेखा जो खासा फरस. मत करियै नुकसान ।
पूंजी रखियै आपनी. तौ सुख पावै जान ॥
लैली नारी मोखकी. मजनू जीव समान ।
चेतन ऐसी प्रीतिकर, तौ पहुंचै शिव थान ॥
लोंचै मूंडै केसको, भावै जटा वधार ।
ममत मान मेटै नही, नहि पावै भव पार ॥
लौके अनुभव ज्ञात जव, घटमें जोत प्रकाश ।
उपजै समकित वासना, पूरै मनकी आस ॥
लंघै भव सागर विकट, कटक मोहकी जीत ।
पहुंचै अविचल थानमें, छोड़ जगतकी रीत ॥
लपटै मत संसार में, कपट दीजियै छोड़ ।
जो चाहै सुख सास्वता, तौ समता गुन जोड़ ॥
क्षमा खडग कर लीजियै, करौ मोहसूं युद्ध ।
जीत निसान बजाय के, पहुंचै अविचल शुद्ध ॥
क्षायिक समकितवन्त जो, सो पावै भव पार ।
लख चौरासी भरमना, छूट जाय निरधार ॥
क्षितमें आप अवतरे, मनुष रूप ह्वै आप ।
पाप करम को छोड़के कीजै तप अरु जाप ॥
क्षीर नीर सम प्रीत कर, मिलै जोत सूं जोत ।
सुद्ध चेतना कीजियै, तौ अविनाश सुख होत ॥

क्षुधा परीसह जीति कै. तप कीजे गुन खान।
लबध अठा वीस उपजै. किरिया व्रत मन आन॥ ४१३-३४
क्षुद्र पना कों छोडकै. सरल भाव मन आन।
क्रोध मान माया तजो. तौ सुख उपजे जान॥
क्षेत्र विदेह सुहावनो. जनमें श्री भगवान।
विहर मान जिनवर तिहां. सी मंधर गुन खान॥
क्षै होगा जब कर्म सब. तब पावे शिव राज।
फिर नहिं जगमें अवतरे. छुट जाय सब काज॥
क्षोभ न कीजे प्राणियां. समता मनमे आन।
धरम ध्यान कर लिजियै. पावै अविचल थान॥
क्षौर कर्म कर लीजियै. शुभ नक्षत्र शुभ वार।
तौ सुख पावै आतमा. लगे न दोस लगार॥
क्षंचो मनकों आपनें. संचे समता भाव।
मनुष जनम को पायकै. मत खोवे तें दाव॥
क्षम है धरम ध्यान कर, पावै केवल ज्ञान।
अविचल सुख विलसै सदा. शुद्ध आतमा राम॥
अकल सरूपी अगम गत. परम जोत भगवान।
इन साहिब के ध्यान धर. मेटो ममता मान॥
आपा आप विचार कें. देखो घट पट खोल।
अन्तरमें परमातमा. अवर ठौर मत डोल॥
इत आवत उत जात है. जनम चवन कई वार।
नर भवमें जो चेतिया. सो उतरे भवपार॥
ईनमें भीत लागे नही. धरम समता अरु सील।
सत्य वचन भाखे सदा. तौ पावे शिव लील॥

उत्तम करनी कीजियै, मध्यम दीजै टाल।
दान सील तप भावना, कीजै मन उजमाल ॥ ४२५-३६
ऊगैं अनुभव ज्ञान जव, निरमल आतम होय।
जग वंधन सव छोडकै, शिव पद पावै सोय ॥
एक नाम चित धारियै, दुविधा दीजै त्याग।
तीनो तत्व विचारकै, जोग जतनमें जाग ॥
ऐश्वर्य मिलेगा पून्यसुं, पाप सदा दुख देत।
पून्य पाप सुख दुख सकल, मंटै शिव सुख हेत ॥
उपजैं अनुभव ज्ञान जव, रोपै समकित मूल।
अविचल फल चाखे सदा, सो जिव है अनुकूल ॥
ऊवल वात सुहावणी, सवकों लागे प्यार।
वुरा वात नहि वोलियै, दुख पावै संसार ॥
अंग पवित्र जव होइगा, सत्य सील मन धार।
जिय पवित्र जिनके भये, सो चेतन भवपार ॥
अध्यातम वारै खडी, पूरी भई सूजान।
सव सैंतालीस अङ्कके, चेतन भाख्यो ज्ञान ॥
अङ्क अङ्क दोहे धरे, वार वार गुन खान।
सव च्यारसैं वत्तीस है, वारखडी के जान ॥
संवत ठारे त्रेपने, सुकल तीज गुरु वार।
जेठ मासको ज्ञान यह, चेतन कीयो विचार ॥
यामें जो कछु चुक है, ते वकसो अपराध।
पण्डित धरो सुधार कै, जो गुण होई अगाध ॥
ज्ञान हीन जानों नहीं, मनमें उठी तरङ्ग।
धरम ध्यानके कारणें, चेतन रचे सुचङ्ग ॥ संपुर्ण।

❀ साधुवंदना ❀
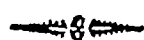
(ढाल)

नमो अनंत चौवीसी ऋषभ आदि महावीर । आरज खेतर में घाली धरम नी सीर ॥ १ ॥ महा अतुल वली नर सूर वीर नें धीर । तीरथ वर वरतायो । पहुंता भव जल तीर २ ॥ सिरि मन्दिर परमुख जघन तीर्थ कर वीस । छै अढाई द्वीपमैं जय वन्ता जगदीस ॥ ३ ॥ इक सौनें सत्तर उत कृष्टा पद वीस । धन मोटा प्रभुजी ज्यानें नमाऊं सीस ॥ ४ ॥ केवली दोइ कोडि उताकिष्टा नव कोडि । मुनि सहस दोय कोड उताकिष्टा नवजोडि ॥ ५ ॥ भावै करि वंदु टालै भवनी कोड़ि । विचरै विदिह में मोटा तपसी घोर ॥ ६ ॥ चौवीसें जिणना सगलाइ गणधार । चौदैसै बावन ते प्रणमुं सुखकार ७ ॥ जिण सासण नायक धन सिरि बीरजिणंद । गौतमादिक गणधर वरताया आनन्द ॥ ८ ॥ सिरि ऋषभ देवना भरथादिक सौपूत । वैरागें मन आण्यौ संजम लियौ अदभूत ॥ ९ केवल उपजायौ कर करणी कर तूत । जिण मारग दीपायो सगलाई मुकत पहुंत ॥ १० ॥ सिरि भरथेसर जीना पाटादर हुवा आठ । अदीत दमादिक पहुंता शिव पुर पाट ॥ ११ श्री जिन अन्तर ना हुआ पाट असंख । मुनि मुकति पहुंता

टाली करमनी बङ्क ॥ १२ ॥ धन कपिल मुनीसर नमि नमू अणगार। जिण ततखिण त्यागो सहस रमणि परिवार ॥ १३ मुनिवर हरिकेसी चित्त मुनीसर सार । सुद्ध संयम पाली कर दियौ खेवौ पार ॥ १४ ॥ वलि इखुकार राजा घर कमला वति नारि । भग्गुनें जस्सा तेहना दोइ कुमार ॥ १५ ॥ छहों ऋद्धि छांडीनें लीधो संयम भार । इण अलप कालमें पाम्या मोक्ष सुखसार ॥ १६ ॥ वलि संजती राजा हिरण आहेडै जाय । मुनिवर गर्द्धभाली आण्यौ मारग ठाय ॥ १७ ॥ चारित लेईन भेट्या गुरां ना पाय । खत्री राज ऋषीसर चरचा करी चित लाय ॥ १८ ॥ भिन्न भिन्न करीनें संदह राख्यौ नाहि दोनो संयम आराधी गया मुकति गढ माहि ॥ १९ ॥ दसोंहीं चक्रवर्त्ति राज रमणि ऋधि छांडि । मुनि मुकत पहुंता कुल नें सोभा चाढि ॥ २० ॥ इन सरपणि मांहें आठ राम गया मोक्ष । बलभद्र मुनीसर गया पांचमें देव लोक ॥ २१ ॥ दसारण भद्र राजा वीर वांद्या धरमान । पाछै इन्द्र हटायौ दियौ छ काया नें दान ॥ २२ ॥ कर कंडू परमुख चारोंही परतेक बुध । मुनि मुकति पहुंता जीत्या करम महा जोध ॥ २३ ॥ जिन मोटा मुनिसर सिरगा छत्र जगीस । मुनिवर अनाथी जीत्या राग नें रीस ॥ २४ ॥ धन समुद्र पाल मुनि राज मती रह नेम । केसीनें गोतम पाम्या शिव पर खेम ॥ २५

धन विजय घोष मुनि जय घोष वलि जाण । श्री गिरिका चारज पंहुता छै निरवान ॥ २६ ॥ श्री उत्तरा ध्ययनमें जिनवर कियो वखाण । सूधै मन धारौ मनमें धीरज आण ॥ २७ ॥ वलि षंधक सन्यासी राख्यो गौतम नेह । श्री वीर समीपे पंच महाव्रत लेय ॥ २८ ॥ तप कठिन करीनें झुसी अपणी देह गया अच्यु देव लोकै चवि लेसी भव छेह ॥ २९ ॥ वलि ऋषभ दत्त मुनि सेठ सूदरसण सार । शिवराज ऋषीसर गाङ्गयो अनगार ॥ ३० ॥ सूध संजम पाली पाम्या केवल सार । च्यारौंही मुनिवर पहुंता मोक्ष मंझार ॥ ३१ ॥ भगवंत नी माता धन२ सती देवानंदा । वलि सती जयवंती छोड दिया गिरिफंदा ३२ ॥ सती मुकति पहुंती वले वीर नां नंद । महासती सुदरसणा घनी सत्यांरा वृंद ॥ ३३ ॥ वलि कातिक सेठें पडिमा वही सौवार । जिण मुहरां ऊपर तापस कियो आहार ॥ ३४ ॥ पाछै चारित लेईनें मंत्री पांच सै भार । मरि हुवौ शकेंदर चवि लेसी भव तीर ॥ ३५ ॥ वलि राय उदाई दियो भाणजानें राज । पोतें चारित लइनें सार्यो आतम काज ॥ ३६ ॥ गंगदत्त मुनि आणंद तारण तरण जिहाज । कुसला मुनि रुवौ दियौ घणानें साज ॥ ३७ ॥ धन सुनखत्र मुनिवर सर्वानु भुति अणगार । अैरादिक होइनें गया देवलोक मझार ॥ ३८ ॥ वलि मुकत्यां जासी वल-

सीयौ मुनिसार । बीजा हुवा मुनिवर भगवती अधिकार ३९ ॥ श्रेणिक ना वेटा मोटो मुनिवर मेघ । तजि आठ अंतेवर आण्यौ मन संवेग ॥ ४० ॥ वीर पैं व्रत लेइनें वांधी तपनी तेग । गया विजय विमाणमें चवि लसी शिव वेग । ॥ ४१ धन थावच्चा पूत्तर तजी बत्तीसों नारि । तिण साथें निकल्या पूरखां एक हजार ॥ ४२ ॥ सुक देव संडासी एक सहस शिखलार । पांचसै सूं सेलग लीधो संजम भार ॥ ४३ ॥ सरव सहस अढाइ धणा जीवाने त्यार । पूंडरिक गिरि ऊपर कर पादोप गमन संथार ॥ ४४ ॥ अैरादिक होइने करादियो खेवो पार । हुवा मोटा मुनीसर नाम लियां निसतार ॥ ४५ ॥ धन जिनपाल मुनिवर दोइ धन्ना हुवा साध । गया प्रथम देवलोकें मोक्ष जासी आराध ॥ ४६ ॥ मल्लिनाथ जीना मित्तर महावल प्रमुख मुनिराय । छहों मुकति सिधाया गणधर पदवी पाय ॥४७॥ वलि जित शत्रु राजा सुबुद्धी परधान चारित लेइने पहुंता मोख निधान ॥ ४८ ॥ वलि ततली मुनिवर दियो छकायाने दान । पोटिला प्रति बोध्या पाम्यो केवल ज्ञान ॥ ४९ ॥ धन पांचांइ पांडवा तजी द्रोपदी नारि थिवरांरे पासे लीधो संयम भार ॥ ५० ॥ श्री नेम वांदणने योहीं अभिग्रह कीधो । मास मास खमण तप सेत्रुंजे जाय सीधो ॥ ५१ ॥ धरम घोष तणा सिख धरम रूची अणगार

कीज्यांनी करूणा आणी दया रससार ॥ ५२ ॥ कडुवा तूंबानो सगलोइ कीधो आहार । स्वारथ सिद्धि पहुंता चवि लेसी भवपार ॥ ५३ ॥ वलि पुंडरीक राजा कुंडरीक डिगियो जाण । पांतें चारित लइने न घाली धरमनी हाण ॥ ५४ ॥ स्वारथ सिद्धि पहुंता चविलसी निरवाण । श्री ज्ञाता सूत्रमे जिणवर कथा बखाण ॥ ५५ ॥ सूधे मन ध्यावौ मनमे धीरज आण । समकित सुध धार्यां होसी अविचल ठाण ॥ ५६ ॥ गौतमादिक कुमर सगा अठारै भाइ । सहु अंधक विष्टिना सुत धारणी ज्यांरी माइ ॥ ५७ ॥ आठ २ अंते उरि तजि दिक्षा लीनी वाथ । चारित लेइने कियो मुक्ति नौ साथ ॥ ५८ ॥ श्री अणी सेणादिक छहोंइ सहोदर भाइ वसुदेव जीरा नंदन देवकी ज्यांरी माइ ॥ ५९ ॥ सुलसा घर वधिया सांभलि नेमजीनी वाणी । बत्तीस २ अंते उर छोड नीकल्या जाणी ॥ ६० ॥ नल कुवेर समान भेट्या नेमना पाय । कर छठ छठ पारणौ मन वैरागज ल्याय ॥ ६१ ॥ इक मास संथारै मुकति बिराज्या जाय । वालि दारण सारण दुमुक सुमुक मुनिराय ॥ ६२ ॥ कुमर अणादित गया मुकति गढमांहिं । जिण आठ करम री दावो राख्यो नांहिं ॥ ६३ वसुदव जीरा नंदन धन धन गज सुकमाल । रूपें अति सुंदर कलावंत वय वाल ॥ ६४ ॥ श्री नेम समीपें छांडी मोह

जंजाल । भीषुरी पडिया गया मसाण महाकाल ॥ ६५ ॥ देखी सोमल कोप्यो मस्तक बांधी पाल । खैराणा खीरा सिर ठविया असराल ॥ ६६ ॥ सुनि नजर न खंडी मेटी मन नी झाल परीसो सहने मुकति गया ततकाल ॥ ६७ ॥ धन जालि मयालि उवयाली दिक साध । संभु नें परजुन अनरूद्ध साध अगाध ॥ ६८ ॥ सच नेम दिढ नेमी करणी कीणी वाध । दस मुकति पहुंता जिणवर वचन अराध ॥ ६९ ॥ धन अर जुन माली कियौ कदाग्रह दूर । वीर पै व्रत लेइने सतवादी हुवा सूर ॥ ७० ॥ कर छठ २ पारणै क्षमा कीधी भरपूर । छम्मासी माहीं करम किया चकचूर ॥ ७१ ॥ धन कुमर अईवंता दीठा गौतम स्याम । सुणि वीरजीनी वाणी कीधौ उत्तम काम ॥ ७२ ॥ चारित लेइने पहुंच्या शिव पुर ठाम दुर आद मकाइ अनंत अलख मुनि नाम ॥ ७३ ॥ वलि किसन रायनी अग्गर महिषी आठ । वलि पुत्र वहु दोइ संचि या पुन्यना ठाठ ॥ ७४ ॥ चारित लेइने पहुंची शिव पुर पाट । शुभ संयम पाली ने करमनो कियौ दचाट ॥ ७५ ॥ श्रेणिकनी राणी काली आदि दस जाणि । दसौ पुत्र वियोगें सांभली वीरजीनी वाणि ॥ ७६ ॥ चंदन बालापै संयम लेइ जाण । तप कर देही सुखी पहुती छे निरवाण ॥ ७७ नंदादिक तेर श्रेणिक नृपनी नारि । मगली नंदपार्प लीधी

संयम भारि ॥ ७८ ॥ इक मास संथारे पंहुती मुकति मझार यों नव्वे जणानो अन्त गढमें अधिकार ॥ ७९ ॥ श्रेणिक ना वेटा जाली आदि तेवीस । वीर पै व्रत लेइने पाली विसवा वीस ॥ ८० ॥ तप कठिन करीने पूरी मनरी जगीस । देव लोक पहुंता मोक्ष जासी तजि रीस ॥ ८१ ॥ काकंदी नो धन्ना तजी वत्तीसां नारि । श्री वीर समीपे लीधो संयम भारि ॥ ८२ ॥ करि छठ छठ पारणो आंविल उचित आहार श्री वीर वखाण्यो धन धन्नो अणगार ॥ ८३ ॥ इक मास संथारे स्वारथ सिद्धि पहुंत । महा विदेह खेतर मे करसी भवनो अंत ॥८४॥ धन्ना नी रीतें हूवा नव्वै सन्त । अणुत्तरो वाइ मे आप गया भगवन्त ॥ ८५ ॥ सव्वाऊ पर सुख पांच पांचसे नारि । तजिकै व्रत लीयो पंच महाव्रत धारि ॥ ८६ चोखो-सुध चारित पाल्यो निरती चार । देव लोक पहुंता सुख विपाक अधिकार ॥ ८७ ॥ श्रेणिक ना पोता पद्मा दिक हुवा दस । वीर पै व्रत लेईनें काल्यो देहीनो कस्स ॥ ८८ संयम लेइने देव लोकांमे वस । महा विदेह खत्रमे मोक्ष जासी ले जस ॥ ८९ ॥ वलिभद्र जीरा नन्दन निपडादिक हुवा वार । पचास२ अन्ते ऊर, त्याग दिया संसार ॥ ९० ॥ श्रीनेम समीपे च्यार महाव्रत लीध । महा विदेह खेतरमें संयम लेइने सीध ॥ ९१ ॥ धन धन्नो सालि भद्र मुनी सरां

री जोडि । नारचां ना वंधण तडदे नाख्या तोडि ॥ ९२ ॥ घर कुटंव कवीलो धन कंचण री कोडि । मास मास खमण तप टाली भवनी खोडि ॥ ९३ ॥ सुधर माना सिख धन २ जंवु स्वामि । तजि आठ अंते उर मात पिता धन धान ॥ ९४ प्रभवादिक ताया पंहुता शिव पुर ठाम । सूतर पर वरतायौ जगमें राख्यो नाम ॥ ९५ ॥ धन ढंढण मुनीसर कृष्ण राय ना नंद । सुद्ध अभिग्रह पाल्यौ टालि दियो भव फंद ॥ ९६ वलि पंधक ऋखिनी देही उतारी खाल । परीसो सहनें मुकति गया ततकाल ॥ ९७ ॥ वलि पंधक रिपिना हुवा पांचसौ सीस । घाणीमें पील्या मुकति गया तजि रीस ॥ ९८ । संभूत विजय सिख भद्रवाहु मुनीराय । चौदे पूरव धारी चंद गुपति आण्यौ ठाय ॥ ९९ ॥ वलि आद्र कुमर मुनि थुलभद्र नंदिषेण । अरणक अहवंता मुनी सरीरी श्रेणि ॥ १०० ॥ चौवीसे जिण ना शिख अठाईस लाख । सहस अड तालीस ऊपर सूत्र परंपराय भाख ॥ १ ॥ धन मोरा देवी माता ध्यायौ निरंजन ध्यान । गज होदे पाम्यो निरमल केवल ज्ञान ॥ २ ॥ आदी सुरनी पुत्री ब्राह्मी सुंदरी दोइ । चारित लेईने मुकति गई सुध होइ ॥ ३ ॥ चोवीसें जिणनी वडी सिखणी चौवीस । सती मुकति पहुंती पूरी मनरी जगीस ॥ ४ ॥ चौवीसें जिणना सरव साधवी साथ । संतालीस लाख

आठसै सतर हजार ॥ ५ ॥ चेडा नृपनी पुत्री राखीं धरम सूं प्रीत । राजमती नें विजयां मृगावती सु विनीत ॥ ६ ॥ पदमा वती मैणरेहा द्रौपदी दमयंती सीता । इत्यादिक सतीयां गई जमारो जीता ॥ ७ ॥ चौवीसे जिणना सरव साधवी साध । गया मोक्ष देव लोकें हिरदे धरौ अगाध ॥ ८ इण अढाई दीपमें गरडा तपसी वाल । सुध महा व्रत धारी नमो नमो तिरकाल ॥ ९ ॥ उत्तिम जिय वांचे मुहडे जय णा राख । उघडै मुह वोल्यां पाप लागै ततकाल ॥ १० ॥ सरव साध साधवि वंदु नित धरि भाव । कहै रिप जैमल जी यौंही तरणको दाव ॥ ११ ॥ इति स.धु वंदना संपुर्ण ॥

अथ श्रीकरण कृत गौतम स्वामीनी सिझाय ।

समव सरण सिंहासणे जी वीरजी करे रे वखाण, दसमें उत्तरा ध्ययन मांजी दे उपदेश सुजाण । समयमें गोयम मकरे प्रमाद, वीर जिणेसर सीखवेजी परिहर मद विपवाद ॥ सम० गो० १ ॥ आंकणी) जिमतरु पंडुर पांनडोजी पडतां न लागे जी वार, तिम ए मानस जीवडोजी थिर न रहे संसार ॥ स० २ ॥ डाभ अणिजल उसनोजी पिण एक रहे जलविंद, तिम ए चंचल जीवडोजी न रहे इन्द्र नरींद ॥ स० ३ ॥ सुक्ष्म नि

गोद भमी करीजी रासी चढयो विवहार, लाख चौरासी जीवा योनी मेजी लाधो नर भव सार ॥ स० ४॥ सरीर जराये जाज रोजी सिर पर पलीयाजी केस, इन्द्री बलहीणां पडयांजी पग पग पखे कलेस ॥ स० ५ ॥ भव सायर तरवा भणीजी चारीत्र प्रवहण पूर, तप जप संयम आकरोजी मोक्ष नगर छे दूर ॥ स० ६ ॥ इम निसुणि प्रभु देसनाजी गणधर थया सावधान, पाप पडल पाछां पडयांजी पाम्यो केवल ज्ञान स० ७ ॥ गोतम ना गूण गावतांजी घर संपत नी जी कोडि, वाचक श्री करण इम भणेजी प्रणमु बेकर जोडि ॥ स० ८ ॥ इति ॥

—•••—

॥ ※ अथ शीलका कड़ा ※ ॥

धरमनां छे अनेक प्रकारक, व्रत मोटा कह्या पांचुंही सारक, शील समानो जी को नहीं (सूत्रपुराण कुराण विचारक शील समानो जी को नहीं) शील सुं मांड ज्यो प्रीत अपारक पर रमणी जननी गिणो । आंख्यां भीन्नि मत करो अंधारक फोल हो परभव पुंछनणो । इम देखो छलो काम विकारक आवरे अंत नहीं लागमो, संवलो लज्यो जो समकित सारक शील संघातें जो मिलें, रतन जडित सोमें भोजनो हारक तो हिणनार सुहांमणो । शील समो नहीं कोई आधारक ॥

शील अखंडित सेवज्यों । जेहवो चंचल कुंजर कांनक, वेग पडै जिम पाकांरे पांनक, जेहवी चंचल बीजली । अथिर होवै जिसो संध्यानो भांणक । डाभ अणीजल बिन्दुवो । जेहवो योवन सूं अभि रामक, खिण खिण जायछे छीजतो । विषय से मत राचज्यौ बिष समानक, फल किंपाक नीं उपमा । सुख नहीं छै आ दुखांरी खांणक । त्रिपत होइ मुवां नहीं । इंद्र नरेंद्र बड बडा राजांणक, आश्या अलुझाही चल्या गया । परभव में हुयी घणो हैराणक । रमणी के सुख मतो राच ज्यो, सूत्र में भाख्यौ छै श्री भगवांनक ॥ २ शील० ॥ शुध शील पाल्यां कुल कलंक न होयक, जिन धर्म साचो करि जांणज्यो, सोय इन पापनें मुल थी परिहरो । एम विचार करो मन मांहिक । देव देवी तणों पूजनींक होइक, तीन लोक जश होवे घणों । रोगनें आपदा तेहनें कोइक, मोक्ष गांमी हुवे शील सूं । अगनि शीतल होवै शील सुं जोइकै । शील सूं विष अमृत हुवै, शील सुं सरप होवै फुलनी मालक । हाथी होवे बकरा सारिखो, शीलसुं सींह हुवै मृग समांनक, आपदा टलै संपद मिलै, कांमण दिष्ट नष्ट देवै टालक । समुद्र थाह देवै तेहनें, मेरु टीबो हुवे ततकालक वीर जिणेसर इम कही । ए गुण जांणी शील शुध पालक ॥ ३ शील० ॥ चौथे जी संवर दशमें जी अंगमें अरथ कहु तुम सुणो मन रङ्गक, अङ्ग सुं आलश परिहरो । बारोंही परषदा

तेहनें सङ्गक। वांणी योजन गांमिनी। श्री वीर वखाणी यों शील सु चङ्गक, सुगण माणस मन मानज्यौ। जिणै आदर्यौ घणां शील उछ रङ्गक। ते तिरया संसार समुद्रमें, सेश बाकी रही नदी जी गङ्गक, जतन घणा करी राखज्यौ एक भागां सहु व्रत नों भङ्गक। ते भणी ब्रह्म चार्य मोटको। मोटो कह्यौ छोटारैं पर सङ्गक, वत्तीस उपमा बरण वी, एक एक सूं सुणो अधिक मन रङ्गक ॥ ४ शील० ॥ ग्रह गण माहैं वडो जिम चंदकै, रतना कर आगरां माहैं समुद्रक, रतनामैं वैडुर्य मोटको, भुषणें मोटको मुकुट सोभंत क। वस्त्रां माहैं कपाशनों फुलांमें मोटको अरविंद फुलक, चंदनमें गोशीश वखाणीयें, हिम वन्त मोटको उपजें वृंदक। नदीयांमें शीतोदा मोटकी समुद्रांमें मोटको सयं भु रमण समुद्रक, रुचक पर्वत मोटो वींटलो, हसतीयां माहैं ऐरावण गंधक। चौपदामें सींह केशरी सोवन कुमारमें देव देवेंद्रक, धरणी धर नाग कुमार में, सर्व्व व्रतामें ब्रह्म व्रत इंद्रक ॥ ५ शील० ॥ देव लोकामें मोटा पांच मां जांनक, सभा में सौ धर्मा सभा वखाणक। थिन में लवधि थितमां कही, दानामें वडो अभय जी दांनक, रङ्ग में किरमचि मोटको, संघयणां में मोटको पहिल्डो जांणक, सम चौरस मोटको संठाण में। ध्यान में मोटो छै शुक्ल ध्यानक। ज्ञान में केवल दीपतो। लेश्या नही शुक्ल समानक, मुनिवरां माहि तीर्थं

करू । क्षेत्रमें मोटको महा विदेह जांणक । पर्वता में मेरु ऊचों कह्यौ, बनामें नंदन बन बखाणक, रथांमें महारथ मोटको व्रतांरो अधिपति शील बखाणक ॥ ६ शील० ॥ सुगुण मांण स तुमे सांभलो । रासक जायछै जोवन तूटै धन आशक, ज्यूं शरल रहज्यौ सही । इण युग मुगध नें मांडीयो फांसक बिषय बिलाश मांते राचज्यौ । इण जुग दलपति थया छै दासक, आंख आंणी किम ऊघडै, मोडैछै अङ्ग करै मुख हासक । इण भव दास सम राखसी, बलै धन यौवन रो करै विनाशक, नाम छै अवला नारिनो । इंद्र नरेंद्र करया सहू नासक त्रिभुवन पाय लगावीया, निगर पड्यां करै शील नां नांशक विषय बधावन बावली, दूर तज्यां मिले शिव पुर बासक ॥ ७ शील० ॥ अथिर होवै जिसी आभानी छांहक । अथिर होवै जिसी कायर बांहक, अथिर कन्या धन जेहवो । अथिर हुवै जिसो धुंहर रो मेहक । अथिर राजा जि सो दूवलो । अथिर धनुख आकाश नो जांणक, अथिर धजा देवल तणीं । अथिर जांणो जि सो ग्रीषम मेहक । अथिर छै फुसणो तापणो अथिर जाणो जिसी मांनव देहक, अथिर होवै कुम्भ माटी तणां । फुट जावै लागै थोडासी तेहक । अथिर हो रङ्ग पतङ्ग नों, अथिर जाणो जिसो नारि नो नेहक, प्रांण दे आपरा जेह नें, छडीयां नारि देपा ली छेहक ॥ ८ शील० ॥ नारि

चरित्र नो न लभे अंतक । ऊंदरो देख होवे भय भ्रांतक, सरप नें शीश लेइ सूवे । देह लीडलेंच तां दुख धरंतक । कांम पडयां गिरवर चडे । सीक लपाय कपिल धुरंगक, कथ आंणी धरणी धुरा । कांमणी रे संग दुख अनंतक । धरणी नाथ धुजा वीयो खिणमांहें रंग विरंगज थायक, मुंज राजा तणो क्षय कीयो नरक सुं नारियां देह बुझायक । नीरख जाने वरां पीडता पाश पड्या थकां कांई छुटंतक, थे पहिला आपो संभालज्यो मत करो रमणी सुं रमवा की खंतक ॥ ९ शील० ॥ नारी अरथें हुवा सबल संग्रामक । वड वडा भूपति रह्या छे ठांमक. कट कट मुवा छे अति घणां । कुण २ देश नें नगर कुण ग्राम छे । कहुं छुं थोडी सी वांनगी, चित्त लगाय सुणो तेहनां नांमक, द्रौपदी रे पर संग सुं । कृष्ण पाडी पद्मोत्तर नीं मांमक । रावण सीतानें अपहरी । भारत कीयो छे लिछमण रांमक, रुपमणी नें पदमावती कृष्ण जी परणीयां करी संग्रामक । उदाई चंड प्रद्योतनें, ते पिण स्वर्ण गुलि कारे काजक, अर्जुन जुद्ध कीया घणां, रंगन सुभद्रा परणवे काजक ॥ १० शील० ॥ मयण रेहा तणें कारण जांणक, मणि रथ हणीयो छे बंधव प्रांणक, मरनें गयो नरक मानवी । चंद प्रद्योतन तेहिज जांणक । मृगा वती कारण सोभल्यो । कांनी ल आणीयो मोटे मंडाणक, पदमनी नगरी घेरी दीयो, नांमी

रो कीयो घणो धम सांणक। रोहिणी परणवा कारणे, वसुदेव राजा कियो जुध तानक, वले राणी पदमावती. कौणिक वचन कीयो प्रमाणक। दश भाई दु मात मरावीयो, नानेरी मूलन राखि जी कांणक। एक कोडी अशी जी लाखनो, मिनिष मराय कीयो घम सांणक ॥ ११ शील० ॥ कांमकला इयांलो पजी कारक। कुल तणो केडै उडावै जी छारक। टलट रहै मद सुं छकी, ऊंच छोडे करै नींच सूं आचारक। विखारियां बावण सुं बुरी, इण जग चित्यनी चोरण हारक छल छिद्र रहै जोवती, रहै काम कटक में नायका नारक, नयण नां वांण बर सावती, वहै नित तीपां तरवारक, लक्ष जनाने आगें आगें लूंटीया, अरणकादिक नें आद्र कुमारक। मोटा ऋषिशर त हनें, संजम धर इणे षोस्यौ धूतारक। नरक देवी जिनवर कही, नारीनीं संगत वरजी वांरंवारक ॥ १२ ॥ शील० ॥ औरनो रूप जोवै शिणगारक, औरसु भोगवै भोग विलाशक वचन सुं औरने रीझवै, औरसुं चित ढुवै चित्त मझारक, आल देवै शिर औरकै, कूटरी कोथली कपट भंडारक. कलङ्क काजल तणी कूपली। कांमणी मूंसीयो सकल संसारक, मधुर वचन विस्वास दे, विरचतां लागे नहीजी कांई वारक स्वारथ दीशै नहीं पजतो, नारीजी विणसीयो निज भरतारक. सुंरी कंता राणी सांभलो, तेहनों नेह जिस्यो नीपनो ढारक।

रालनें दूरक । काच ग्रही कुमती लहै. विष्टा में सूंढों घाले गंड सूरक । कण सहित कूंडो जी छोडनें, आंव नें दाडिम छोड बीजूरने, काग नीबोली ग्रहण करै. विषय सेव्यां चोथा व्रत चक चूरक अकल बिना जीउ बापड़ा. नरक नीगोद में वह-गया पूरक । शास्वता सुखांनी होवै चाहना. तो पालज्यो शील नारी तजो दूरक ॥ १६ ॥ शील० ॥ इति श्री शील रा कडा सोलै संपूर्णम् ॥

॥ * ॥ अथ षंधक मुनि राजनो चो ढालीया ॥ * ॥

(ढाल) नमुं वीर सासन धणी जी. गण धर गोयम स्वामी कथा अनुसारे गाय सूं जी, षंधक ना गुण ग्राम (क्षमावंत जोय भगवन्त नो जी ज्ञान ॥ १ ॥ अति क्षमा अधिकी करी जी संजम धारी जी जान । शिव मारग ने कारणे जी रहेता धरम ने ध्यान २ क्ष० ॥ त्वचा उतारी देहनी जी रहेता समता जी भाव । जिन धर्म कीधो दीपतो जी. मोटा ए मुनिराय ॥ ३ क्ष० ॥ सावत्थी नगरी सोभती जी. कनक केतु तिहां भूप. राणी मलया सुंदरी जी, षंधक कुमार अनूप ॥ ४ क्ष० ॥ सगला अंगे सूंदरे जी, इंद्री नही इक हीण, प्रथम वये चढती कलाजी चतुर कला प्रवीण ॥ ५ क्ष० ॥ विजय सेन गुरू आविया जी, साधु तने परिवार, ज्ञान गुणे करि आगलाजी नरसी

१३ ॥ शील० ॥ सगलीहो नारि नही चंचल होइक, पुरुष भला सहु मत कोइ कहो। इक नार ज्यूं नर पिण जांणज्यो, आपणो दोषण जांण ज्यो सोयक।सेवतां विषय दोन्यां बुरो शीलसुं शिव पुर दोनाने होयक। नार कुलछणी किम होयैं, पुरुष कोई सुलषणो होयक। बाजेहो तालीजी किण विधं, एकण हाते बाजै नहीं कोयक। पुरुष कोइ पर नारसुं सेवै कुशील जन्म देवै षोयक। पाप उदै हुवा इण भवै, राय लूंटै खोसै सूली देवै पोयक। पर भव में दुख होवे घणों, इण समों फांस बंधण नही कोइक॥ १४ ॥ शील० ॥ नारी हुवै केई शीलनी खाणक। वीर जिणंद कीया त्यांरा वखाणक कष्ट पड्यांजी कायम रही, चंदन वाला वले चेलणां जाणक। राजे मती वली द्रौपदी, सुभद्रा शतीनों शील वखांणक। श्रीमती नें पदमावती, दवदंती अंजणा शीलनी खांणक। मेन रेहा कमलावती. मृगावती शील में सुध परणामक। सतियांरा नांम केता कहुं. जिन धर्म दीपायो राखीं कुल कांणक. जन्म सफल कर जश लीयो. सुध मन पालवै जिनवर आंणक. धन धन त्यांहरे विरत णे, शीलरे कारणे भाज दें प्रांणक ॥ १५ ॥ शील० ॥ सुरतरु आंगणै ऊगछै सूरक। उपणी रोपै जी आक धत्तूरक. कुष्ट करै अङ्ग वासनां, छोड़नें शील करे भख पूरक। हाथी सदै खर संग्रहै. रतन चिंतामण

रालनें दूरक । काच ग्रही कुमती लहै. विष्टा में मूठों घाले गंड सूरक । कण सहित कूंडो जी छोडनें, आंब नें दाडिम छोड पीजूरने,काग नीबोली ग्रहण करै. विषय सेव्यां चौथा व्रत चक चूरक अकल विना जीउ बापड़ा. नरक नीगोद में वह- गया पूरक । शास्वता सुखांनी होवे चाहना. तो पालज्यो शील नारी तजो दूरक ॥ १६ ॥ शील० ॥ इति श्री शील रा कडा सोलै संपूर्णम् ॥

॥ * ॥ अथ पंथक मुनि राजनो चो ढालीया ॥ * ॥

(ढाल) नमुं वीर सासन धणी जी. गण धर गोयम स्वामी कथा अनुसारे गाय सूं जी, पंथक ना गुण ग्राम (क्षमावंत जोय भगवन्त नो जी ज्ञान ॥ १ ॥ अति क्षमा अधिको करी जी संजम धारी जी जान । शिव मारग ने कारणे जी रहेता धरम ने ध्यान २ क्ष० ॥ त्वचा उतारी देहनी जी रहेता समता जी भाव । जिन धर्म कीधो दीपतो जी. मोटा ए मुनिराय ॥ ३ क्ष० ॥ सावत्थी नगरी सोभती जी. कनक केतु तिहां भूप. राणी मलया सुंदरी जी, पंथक कुमार अनूप ॥ ४ क्ष० ॥ सगला अंगे सूंदर जी, इंद्री नहीं इक हीण, प्रथम वये चढती कलाजी चतुर कला प्रवीण ॥ ५ क्ष० ॥ विजय सेन गुरू आविया जी, साधु तने परिवार, ज्ञान गुणे करि आगलाजी नगरी

मारग सार ॥ ६ क्ष० ॥ नरनारी बहुते मिली जी, साधु वांद्
ण कोड । केइ पाला केइ पालख्यां जी वंदे होडा होड ॥ ७॥
क्ष० ॥ खंधक कुमर पिण आवियो जी, बेठो परषदा मांहे।
मुनिवर दीधी देसना जी सगलाने चित लाग ॥ ८ ॥
क्ष० ॥ आगार ने अणगार ना जी धर्म तणो दोय भेद
समकित सहित व्रत आदरो जी राषो सुगति उमेद ॥
९ क्ष० ॥ डाभ अणी जल विंदुवो जी पाको पीपल
पान अथिर तनधन आउषो जी तजो कपट नेमान ॥
१० ॥ क्ष० ॥ विहडे सुतने बांधवो जी विहडे सज्जन पर्म
कुटंव पिण विहडे सहुजी, नवि विहडे जिन धर्म ॥ ११ क्ष०
आयोछे जीव एकलो जी, जातो एकलो जी जाय । बांध्यां
जीव कर्म जिसा जी, तिसा उदे हुवे आय ॥ १२ क्ष० ॥
पून्य योगे नर भव लह्यो जी सद गुरु नो संयोग । हिवे पछे
राषो मता जी तजो जहर जिम भोग ॥ १३ क्ष० ॥ चारुं गत
संसारना जी लग रहि खांचा जी ताण चलवस्तु सगली कही
जी निश्चलतछे निरवाण ॥ १४ क्ष० ॥ ओछ्छा जीतव ने कारणे
जी स्युं घो ऊंडी रांग, भव भव मांहि काढिया जी नटवे
वाला सांग ॥ १५ क्ष० ॥ अथिर सुख संसारना जी कांइ
अलुझो जाल, वचन सुणी सत गुरु तणा जी चेतो सूरत
संभाल ॥ १६ क्ष० ॥ पंच महाव्रत आदरो जी श्रावकना-

अतवार कष्ट पड्या गाड्या रहो जी जिम पामो भव पार ॥ १७ क्ष० ॥ धन धान घर हाटडी नी ममता मकरो जी कोय, काचा सुखने कारणे जी, हारयो जनम मखोय ॥ १८ क्ष० ॥ सग पिण सहु संसारना जी थया अनंता जी वार मिल मिल मिलने बिछड़ी गया जी करमज लागा लार ॥ १९ क्ष० ॥ सगापिण सहु संसारना जी स्वारथ ना छेजी एह जी स्वारथ पूगे नही जी तटके तोडे नेह ॥ २०क्ष० ॥ नरक निगोद मे दुख सह्या जी छेदन भेदन अनेक, केता पिण थिटा जीवने जी सुरत नहीछे कोय ॥ २१ क्ष० ॥ ठग बाजी मांडी घणी जी चाडी चुगली जी पाय, करम उदे आया थका जी, पडे गला मे आय ॥ २२ क्ष० ॥ इसा दुख सू डरपे नही जी चेतो तुम भव्य जीव, ज्ञानादिक आराधने जी तुम द्यो मुगत नि नीव ॥ २३ क्ष० ॥ दिल मे दया विचारने जी, छाड़ो जी खांचा ताण, आज्ञा सहित किरिया करो जी, ए जीवित परमाण ॥ २४ क्ष० ॥ मुगति तो निश्चे मिले जी, कदा उरे रहे जाय । देव लोक वासा वसे जी, सुख घणा तिण ठाय ॥ २५ क्ष० ॥ वांणी सुणी साधां तणो जी कुंवर जोड्या वेहूं हाथ । वचन तुमारा सर दह्याजी भला किया कृपा नाथ ॥ २६क्ष० ॥ मात पीता ने पूछने जी, लेसूं संजम भार वसता मुनिवर इम कहे जी मकरो ढील लिगार ॥

२७ क्ष०॥ घर आवि माता ने कहे जी द्यो अनुमत आदेस संजम लेई हूं सुखी जी, काटुं करम कलेस ॥ २८ क्ष० ॥ वचन सुण्या सुत ना इसाजी धरण ढली छे जी माय, सावधान हुयने कहे जी इसी म काढो वात (कुमर जी संजम विषम अपार ॥ २९ क्ष० ॥ संजम छे वछ दोहिलो जि सा षांडा नी जी धार. पाय उवारणै चालवो जी, लेवो सुद्ध आहार ॥ ३० स० ॥ सुवचन कुवचन लोकना जी, सहणा पडसी जी मार. राज कुमर सुकमाल छो जी. देहन करणे सार ॥ ३१ कु० स० ॥ साध पणो दोहिलो कह्यो जी. तिण मे फेरन कोय कायरने छे दोहिलो जी. सूराने नहि होय ॥ ३२ कु० स० ॥ उत्तर पडुत्तर बहू हुवा जी. बाप बेटा ने जी माय. सूत्रा में विस्तार छे जी, देजो चतुर लगाय ॥ ३३ कु० स० ॥ हित सूं दिधी आगन्या जी, कर मोटे मंडाण, सिवि कामे वेसाडणे जी, सूंप्पो साधाने आण ॥ ३४ कु० ॥ इस टंकत वालो हुतो जी स्वामी माहरे ए पूत्र डरियो जामण मरण थी जी. सूंप्पो हे कर-तूत ॥ ३५ क्ष० सिंव पणे व्रतजे आदर्या जी, पाले सिंहज जेम, घणो पराक्रम फोर जो जी. माता पिता कहे एम ॥ ३६ क्ष० ॥ इम सीषावण देइ करी जी. आया जिण दिस जाय. खंधक ने भले भाव सूंजी दीक्षा दिवि मुनि राय ॥ ३७ क्ष० ॥ आग

न्या मोगी साधां तणी जी सूत्र अरथ लिया धार । जिन कल
पी पणो आदरयो जी एकल मल अणगार ॥ ३८ क्ष० ॥
मिलि सरदार रायने कह्यो जी ए नानाडि यो जी बाल ।
सिंहादिक ना भय तणा जी करवा वो रखवाल ॥ ३९ क्ष० ॥
पांचसें जोधा बोलाय ने जी दिया कुमरने जी लार । साधुने
खबर नहीं जी साथे वहे सिरदार ॥ ४० क्ष० ॥ सावत्थी
नगरी सुं चालियो जी कुंती नगरी जी जाय । नगरी वह
नोई तणी जी संकन आणी काय ॥ ४१ क्ष० ॥ (दूहा) पांचसें
तिण अवसरे खावा पीवा काज । वलो वली चलता रह्यो
एकल रह्या मुनि राय ॥ १ ॥ हिव किम उठे गोचरी उपसर्ग
व्यापे केम । एक मना थइ सांभलो मुनि करेछे जेम ॥ २ ॥
ढाल) तिण अवसर मुनि राय, कुति नगरी मांय । सु कों
मल साधु विहरण गिरिया पांगुरया ए ॥ १ ॥ वाजे लुवर
झाल, दाझे पग सुकमाल सु० दो पहेरा ने तावडे ए ॥ २ ॥
निरमोही निरपाय, इरजा जोवंता जाय सु० गउलणी परे
गोचरी ए ॥ ३ ॥ सुसन उतावला नाहि, धीरज धरे मन
मांहि सु० गय वरनी परे मल पता ए ॥ ४ ॥ राय राणी
तिण वार, रमता पासा सार सु० महिला तल मुनि आवि
या ए ॥ ५ ॥ पड्योहे राणी नो दीठ, पंथक महिला हेठ सु०
एतो हुवे मा हरो बांधवो ए ॥ ६ ॥ चिना आनी पिहोर,

नयण छुटो नीर सु॰ विरह व्यापि चिता थइ ए ॥ ७ ॥ राजा
साह मोजोय, राणी इम किम रोय सु॰ सुख माहे दुख किम
हुयो ए ॥ ८ ॥ साधुने जावतो देख, राजाने जाग्यो द्वेख
सु॰ एए करम एणे किया ए ॥ ९ ॥ राणी हूंति सुख माँहि,
रोवाढी इण आय सु॰ तोहि खवर साधु तणी ए ॥ १० ॥
राय विचारी गेर, जाग्यां पूरब बैर सु॰ पाछल भव कावर
तणो ए ॥ ११ ॥ माठी विचारी मन माँहि, मसाण भुम ले
जाय सु॰ त्वचा उतारो एह नि ए ॥ १२ ॥ राजा नफर
घोलाय, घगा जावो धाय सु॰ इण साधु ने पकड ल्यो ए ॥
१३ ॥ मत कर जो कांइ काण, ले जाय जो मसाण सु॰
सगली खाल उतार जो ए ॥ १४ ॥ नफर सुणी इम वाण, करली
धी परमाण सु॰ अजाण चक राजा जायने ए ॥ १५ ॥
पकड्या मुनि ना हाथ, मसाण भुम ले जाय सु॰ खाल उतारो
देहनी ए ॥ १६ ॥ तिनसुं माहरो नही छ दोस, मुनि मकरो
कोइ रोस सु॰ डरप्या ऋषी भसमी करे ए ॥ १७ ॥ मसाण
भुमि का माँहि, काया दीधी वोसराय सु॰ चारुं आहार
त्यागी दिया ए ॥ १८ ॥ करडो आवि वहि यो काम, न
कह्यो अपणो नाम सु॰ सग पण को दाख्यो नहि ए ॥ १९
राख्या समता भाव, संजम ऊपर चाव सु॰ मन कारिने
डोल्या नहि ए ॥ २० ॥ तीखा पाछना निधार, मस्तक ऊपर

महार सु० खाल उतारि देहनि ए ॥ २१ ॥ पगांज सूधी खाल, रहिता संजम माहे भाव सु० नाके सल घाल्यो नहि ए ॥ २२ ॥ रह्याज रुडे ध्यान, पाम्यो केवल ज्ञान सु० करम खपावी मुगते गया ए ॥ २३ ॥ केवल महिमा होय, धन २ करे सहु कोय सु० जिन मारग कियो दीप तो ए ॥ २४ ॥ दोहा) कुंति नगरी ने मधे हुवो ज हाहाकार । देखो राय मराविया विना गुने अणगार ॥ १ ॥ लोक हुवा सहु आगला पिण जोर न चाले कोय । मुनि ने मोक्ष सिद्धा वणो पिण वैर न छोडे कोय ॥ २ ॥ किम तुझे पांचसे सुभट वलि राणी ने राय । वैर खवर किण विध पडे ते सुण जो चितलाय ॥ ३ ॥ (ढाल) धरम हिये धरो (एदेशी) अजे साधु आयो नहि रे, जोवे पांचसे वाट । भोलावण दिवी राय जी रे खिण खिण करे उचाटा रे, धन मोटा मुनि, नित कीजे गुण ग्रामो रे ॥ ध० ॥ सीझे सगला कामो रे ॥ १ ध० ॥ नगर गली फिरे जोवतां रे किहां इन दीठो रे साध, सुण्यो साधु मारयो गयो रे तब परमारथ लाधो रे ॥ २ ध० ॥ राजा पूछे कुंण तुमेरे तब चलता कहे जोध, कनक केतु ना रजपूत छारे, तुमे करि वात अजुक्तो रे ॥ ३ ध० ॥ संधक कुमर दिक्षा लिवी रे म्हे रखवाला जी लार । सो मुनिवर तें मारियो रे माहसुं नमरी गरज लिगारो रे ॥ ४ ध० ॥ वचन सुणी

जोधा तणा रे राय हुवो दिलगीर, हाहा पाप जाडा किया रे मारयो राणी नो वीरो रे ॥ ५ ध० ॥ राणी वात सुणी तिसे रे लागो मरम प्रहार, मुरछा गत धरणी ढली रे छुटी आसुंडानि धारो रे ॥ ६ ध० ॥ बंधव भव सफलो कीयो रे तोड्या मोहना रे फन्द, हुं पापण किम छुटस्युं रे इम वेन करे बिला पातो रे ॥ ७ ध० ॥ लोही खरडि मुह पती रे समली महिला मे राल, बहिन सुनन्दा देखने रे ऊठे मोहनि झालो रे ॥ ८ ध० ॥ जिम जिम भाइ सांभरे रे आणे राग ने द्वेष, वीरा वेगो आवजे रे हुं निजरा लडं देखी रे ॥ ९ ध० ॥ कुण वीरो कुण वेनडी रे जो जो मोहनीरे वात, इण भष मुगति सिधावणो रे एम करे विला पातो रे ॥ १० ध० इम जाणी ने मानवी रे मोह न कीजो रे कोय, मोह कियां दुख ऊपजे रे करम बंधे माहा जोरो रे ॥ ११ ध० ॥ सालो सगो नवि जाणियो रे तपसी मोटोरे साधु, पुरस सेण राजा सुरे रे बहोत लाग्यो अपराधो रे ॥ १२ ध० ॥ पांचसे जोधा इम चिंतवे रे मारयो गयो मुनि राय, कनक केतु राजा कने रे काहा सुं कहेला जायो रे ॥ १३ ध० ॥ चारित्र ल्यो हिव चुंपसु रे किसो सास विसवास, काल कितो इक जीवणो रे राखो मुगति नी आसो रे ॥ १४ ध० ॥ निश्चें करि संयम लिय्रो रे पांचसे जोधा सिरदार, चोखो पालि सुर गति लह्यो

रे करसी खेवो पारो रे ॥ १५ ध० ॥ (दोहा) हिव राजा मन चिंतवे एहवो खुनन कोय, साधु मारण मने ऊपनीए ए संसय छे मोय । १ । इम विचार वंदण गयो साधु भणी कहे एम, विनय गुने मोटो मुनि, में मारयो कहो केम । २ । ढाल) वीर सुणो मोरी वीनती (एदेशी) साधु कहे राय सांभलो तुंतो होतो हो काचर नो जीव, ए खंधक मानव हुंतो चतुराइ हो धरतो रे अतीव ॥ सा० ॥ कर मन छोडे केहने भीख्यारी हो कुण राणो राव, कुण साधु ने कुण चोर टो भला भूंडा हो सहू होवे सम भाव ॥ २ क० ॥ केतला भव इण खंधके ऊतारी हो काचर नी खाल, विचलो गिर काढी लिये सरायो हो घणी करिय किलोल ॥ ३ क० ॥ पछे हि पछतायो नहि बंध पडियो हो तिनरे उण ठाय, तिन करमे कर खालडी उतारी हो ते साधु नी राय ॥ ४ क० ॥ वचन सुणी राय डरपियो करमारी हो घणी विषमी वात, राय राणी दोनुं कहे घर मांहे हो घडी निफली जाय ॥ ५ क० ॥ पुरष सिंह राजा तिहां सुनन्दा हो राणी सुविनीत, राज छोडि चारित्र लियो आराध्यो हो दोनुं रुडी रीत ॥ ६ क० ॥ करम खपाय मुगते गया वधारी हो जग धरमनी सोभ, अजर अमर सुख सास्वता एहवी करणी हो करजो सहु कोय ७ क० ॥ अठारे से इग्या रोत्र रे चैत्र मासे हो सुदि सातम

जोय, लाडणू ग्राम सुखी सदा उछो अधिको हो मिछामि दुक्कड होय ॥ ८ क० ॥ इति श्री खंधक जीनो चौढालीयो सम्पूर्ण । * ।

कूड़ कपट कर माया मेली नीठ नीठ कर संची । पाव पलक मै परभव पहुंतो, पडी रही सब खरची सुकृत कर लेरे सुंजी, थारी धरी रहैली पुंजी ॥ सु० १ ॥ कूड़ कपट करनै चतुराई घणीज माया जोडी, आलो दोलो काल झपके आते निकसी सीडी ॥ २ सु० ॥ अधीको लेवें ओछी तो लै बोले मधूरी वांणी, अंडा मारे धडा उठावै कर कर अंतर कांणी ॥ सु० ३ ॥ करमा दान अकारज करनै धन मेल्यो नही खुटै, कदेल्च काले रावल रोकै तौ पिण इणनें रोवै सु० ४ ॥ निखरो खावै पहरै निखरो सुख भरि नींद न सोवै, नर सुखियो दीठो नही इणसुं तौ पिण इणमे लुंभव्यो ॥ ५ सु० ॥ दान शीयल तप भावना भावो ज्ञान हीयामे धरलै, आनन्द घन कहैं सुन भाई चेतन मुगती रमणी तुं वरले सु० ॥ थारी धरी रहैली पुंजी ॥ ६ ॥ इति सम्पूर्ण । * ।

॥ * अथ लावणी * ॥

मन सुनिरे थारी सुफल घड़ी श्रावग की हाथ सूं जावें, सुत्र कौन मानैं सीख पिछै पछितावे । मन सुनिरे तुं परभव को डर राखि प्राण मत लुटे, कुगति से करे तुं हेत सुगति मे रुठे । मन सुनिरे थारी जोवन आनी छोल छिनक नहि छुटै, इंद्री सुं लगावो तार कहो किम तुटे । मन सुनिरे थारी हियै वधी विख वेल नही कुमलावे ॥ सु० १ ॥ मन सुनिरे ते सें ठी सीख सुतर की हियै नही आंणी, थारो खरो खजानों खाय कु गुरु की वांणी । मन सुनिरे थारी कुमति कलेसण मारि लियो हे तोये ताणी, दुर्गति की बिछाइ सेज घणी पटराणी । मन सुनिरे तु सूतो कुमत की सेज पार नही पावे ॥ सु० २ ॥ मन सुनिरे पोसाख पापकी पहीर मांन तो रे खुवी, थारै गल मद मोत्यांकी माल सीस पर लुंवी । मन सुनिरे थारै हे राण हुइ मीहसी हजुरीउ संगे, सिर वंध्यो मिथ्याति मोड वात तेरी डुवी । मन सुनिरे थारै हिंस्या होया को हार जहर क्यों पीवे ॥ सु० ३ ॥ मन सुनिरे सुकृत वात सुपना मे मोही रती न सुझै, मेरू को वणती को जीव दास कुंण वुझे । मन सुनिरे मेरे घर छुटे दुर्गति सी कांम धेनु दुजे, भो लप दूनिया मै वोहत मुजे क्यों छुजे । मन सुनिरे जिण दास कपट की म्यांग मान नहि मावे ॥ संपुर्ण ।

॥ अथ सीझाय ॥

नर चतुर सूजान, पर नारीसूं प्रीत कबु नवी कीजीए । रात पडै दिन आथमै, तेहनो जिव भम रारि पर भमै । ले घरनो कारज नवि गमें ॥ १ ॥ पर नारी सूं प्रीतडलि, खीण एक लागे मीठडली, पछै तोडै भवनी प्रीतडली ॥ २ ए तोने मोहना प्यालया पाय देशी, थारा हाथमें हांडी दे देशी । थारा सस्त्रर वस तर खोस लेशी ॥ ३ ॥ थारा जोवन लेसी लुटीने, थारा धन लेशी सब खोसीनें । पीछे रोसी हीय डो कुटीनें ॥ ४ ॥ जोवन हारी ने काइ करसी, कद हिरी देख तुम हरस्यो । पीछे अव गति माहि जाय पडस्यो ॥ ५ उदेय रत्न कहै सीखड ली, तुम चाखो अनुभव सूखड ली, एथी भाजै भव भव भुखड ली ॥ ६ ॥ इति ।

पुनः

परदेशीरो कांइ पतीया रो । प । जब लग तेल दीयामै बाती मंदिर भयो उजीयालो ॥ प० १ ॥ वल गयो तेल पीगल गई बाती, मंदीर भयो अंधियालो ॥ २ प० ॥ गुद गीरी को साठो मीठो, गाठ गाठ रस नास्यो ॥ ३ प० ॥ वेलुं की भीत वीखर गई छीनमें, मोटी में मील गयो गारो ॥ ४ प० उठ गयो बनीयो धरी रही हटीया, वीन कुंची लग गयो तालो ॥ ५ प० ॥ काया नगरमे हाक पडीछे, चेतन दीनो

नगारो ॥ ६ प० ॥ पींजर को हंसराज जो बोल्यो, अन्त होयगो न्यारो ॥ ७ प० ॥ कर सूध ध्याण प्रभुजीका ज्ञानी आवा गमन नीवारो ॥ ८ प० ॥ इति संपूर्ण ॥

॥ अथ स्तवन ॥

भटकत आतम क्या डोलैरे, तुं खोज हीयाके मांहि । आवै न कबहु न जाय हैरे, है तेरा तुझ मांहि ॥ भ० १ ॥ घटमै काशी द्वारका रे, घटमै है सब धाम । घटमै तीरथ व्रत सही रे, घट घट आतम राम ॥ भ० २ ॥ अलख निरंजण देव हैरे घटमै ज्योति सरुप । जो खोजै सो पाय हैरे, अक्षय राज अनुप ॥ भ० ३ ॥ इति संपूर्ण ॥

पुनः

सुनरे मनुवा मीत, ऐसी नहीं करणी रे । मरणो पगल्यां रे हेठ आखर डरणा रे ॥ सु० १ ॥ सुमति रे कुमति नार दोनु थारे घरमै रे । तुं ममता सुं मनवाल उवासुं चित भरमै रे ॥ सु० २ ॥ कुमति कुबुद्धि नार है चिर ताली रे । थारो करसी जनम खुवार चौरासी मै राली रे ॥ सु० ३ ॥ सुमति सुबुद्धि नार सद मतवाली रे । थारो देसी जनम सुधार चतुर गति टाली रे ॥ सु. ४ ॥ पहिली बोल्या बोल तेकिम चुकुं रे । फरसुं कापुं सीस आगल मुकुं रे ॥ सु. ५ ॥ सुर गुण मिसरी

खांड सब जग भावै रे । निरगुण कडुवो नींब कोई न खावै रे ॥ सु० ६ ॥ जाकु पाउं प्रेम सोइ उठ भागै रे । जाका हिरदा कठोर सबदन लागै रे ॥ सु० ७ ॥ पीयो जो पीयाला प्रेम अवसर जावै रे । सन्त उतर गये पार मुनी गुण गावै रे ॥ सु० ८ ॥ इति संपूर्ण ॥

॥ अथ त्रेसठ सलाका पुरुष सिझाय ॥

चरण कमल मन धारं, त्रेसठ उत्तम नर अधिकारं । पभणिसू श्रुत अनु सारं, जेहनै नाम लीयै निसतारं । आपण सफल हुवै अवतारं, पांमी जै भव पारं ॥ १ ॥ ऋषभ अजित संभव अभि नन्दन, सुमति पद्म प्रभु नयना नन्दन सप्तम तेम सुपासं, चन्द्र प्रभ सुविधि शीतल जिन, श्रेयांश वासु पूज्य जिन सुरमणि विमल विमल गुण वाशं ॥ १ ॥ अनन्त धर्म श्री शांति जिणेशर कुंथु नाथ अरमल्लि सुहंकर । मुनि सुव्रत नमि नेमि पार्श्व वीर ए जिन चौवीश । जग वछ्छल जग गुरु जगदीश, प्रणमी जै धरि प्रेमं ॥ २ ॥ (ढाल प्रथम सुपन गज निरख्यौ (ए देशी) प्रथमें भरत नरिंद बीजो सगर सुरिंद, मघवा तीजो उदार चौथो सनत कुमार । पांचम शांति चक्रीश छठो कुंथुं गणीश सातमो अर नर नाथ । आठमो सुभुम नाथ, नवमो पद्म नरेश, हरिषेण

दशमो केहेस, इग्यारम जय नाथ बारम ब्रह्म दत्त नाथ ॥ ६
एह चक्रीशर बार क्षेत्र भरत शिणगार, मघवा सनत कुमार
पोहता सनत कुमार ॥ ७ ॥ सुभुम अने ब्रह्म दत्त सातम
निरय निरत्त, आठ थया शिव गामी ते प्रणमुं शिर नामी
८ ॥ (ढाल ३) मुनिवर आर्य सुहस्ति (एदेशी) पहिलो
त्रिपृष्टि जाण, द्विपृष्टि दूसरो तीजो स्वयंभु जाणीयें ए ॥ ९
पुरुषोत्तम ए चोथ पंचम पर गडा पुरुष सींघ प्रमाणीये ए ।
छठ्ठो पुरुष पुंडरीक दत्त तिम सातमो, लछमण नामे आठ
मो ए। नवमो कृष्ण नरेश ए नव केशवा मह ऊठी ए पिण
नमों ए ॥ १० ॥ तिहां पहिलो वासुदेव नारकी सातमी
आगला पांच छठी गया ए । सातमो पंचम नेर चौथी
आठमो नवमो त्रीजी नेरया ए ॥ ११ ॥ अचल विजय ने भद्र
सुप्रभ सुदर्शन आनन्द नन्दन सुभ मती ए । राम चन्द्र बल
भद्र बलदेव ए नव आठ थया तिहां शिव गती ए ॥ १२ ॥
बल भद्र गयो देव लोक काल उप सप्पणी जास्ये शिव कृष्ण
सासणे ए । अथवा निपुलाक नाम तीर्थंकर हुस्ये चवदमो
इम बहु श्रुत भणे ए ॥ १३ ॥ (ढाल ४) कुमर पदे प्र० (एदेशी
अश्व ग्रीवने तारक मेरुक बलि मधु तिसा ए । निशुंभ बल
प्रल्हाद रावण जरासिंध जसा ए । ए नव प्रति वासुदेव
नरय नरक गति गांमीया ए । तो पिण भाव जिणेंदा केइक

प्रणमुं सया ए ॥ १४ ॥ (ढाल ५) सफल संसारनी (एदेशी शांति ने कुंथु अर एह भव एकही, चक्रधर तीर्थ कर दोय पदवी लही । वीर बासुदेव अरिहन्त भव जु जुवा, देह तिण साठ पिण जीव गुण सठि हुवा ॥ १५ ॥ बासुदेव वलि वलदेव केरा पिता, एक हिज थाय नव एण लेखैं छता । तीन चक्रधर तणा मिलीय वारै टल्या, एम त्रेसठिनां तात इगवन मिल्या ॥ १६ ॥ तीन चक्र व्रत तणी टालि दीजै जिसैं, माय सहुनी थई साठ लेखै इसैं । एह नर रयणनो ध्यान नित जे धरै, तेह सुर पद लही मोक्ष पदवी वरै ॥ १७ कलश० इम थुण्या तीर्थ कर चक्रीशर बासुदेव वलदेव ए, प्रति वासुदेव सुसेव जेहनी करै सुर नर सेव ए । त्रेसठि शलाका पुरुष उत्तम जगत जय वन्ता सदा, प्रह समै तेहना चरण पङ्कज नमै मुनि वसतो मुदा ॥ १८ ॥ इति संपूर्ण ।

॥ * अथ बोल चर्च्या * ॥

पहले बोलें कहो स्वामीजी काणो हुवे तिको किसें करमरे उदे, पूरव भवमें वीज फुल घणा विंध्या तिन करमरे उदे ॥ १ दूसरे बो० कहो स्वामीजी खोजो हुवे तिको किसे करम रे उदे, पूरव भवमें घणी फविराजी करी तिस करमरे उदे ॥ २ ॥ तीसरे बोले कहो स्वामीजी कुबड़ो हुवे तिको किण करमरे

उदे, पूरष भवमे वहुत एकेंद्री जीवरा चुरण कीया तिस करमरे उदे ॥ ३ ॥ चौथे कहो स्वामीजी वहिरो हुवे तिको किसो करमरे उदे, पूरव भवमें वनास पती कायनें हाथे करी छेदन करी तिके करमरे उदे ॥ ४ ॥ पांचमें बोलें कहो स्वामीजी गुंगो हुवें ते किस करमरे ऊदे, पूरव भवे चतुर विध संघरा औगण वाद बोल्या तिण करमरे उदे ॥ ६ ॥ छठे बोलें कहो स्वामीजी गलत कोढ हुवे ते किस करमरे उदे, पूरव भवे सोनो रुपेरा घणा आगर किना तिस करमरे उदे ॥ ६ ॥ सातमें बोले कहो स्वामीजी जस करे अपजस आवे तिको कीन करमरे उदे, पूरव भव सचीत औपदी घणी भेली तिस करमरे उदे ॥ ७ ॥ आठमें बोलें कहो स्वामीजी आंख्यां झील मलो दीसे तिको कोण करमरे उदे, पूरव भवे पंचेंद्री रा रुप धणा ग्रहण कीया तिन करमरे उदे ॥ ८ ॥ नवमें बोलें कहो स्वामीजी भगंदर रोग उपजें ते किण करम रे उदं, पूरव भवमें पंचेंद्री जीवने हाथें करीणे मारीया तिस करमरे उदे ॥ ९ ॥ दसमें बोलें कहो स्वामीजी वावनो हुवे ते कीसे करमरे उदे, पीछला भवमें निमक खारीरा आगर कीया तिस करमरे उदे ॥ १० ॥ इग्यारमें बोलें कहो स्वामीजी स्वाम वरण हुवे ते किण करमरे उदे, पीछले भवे वनास पति कायरी जड मूल सु खोदी तिस करमरे उदे ॥ ११ ॥

बारमें बोलें कहो स्वामीजी कंठ माला रोग हुवे ते किण करमरे उदे, पूरव भवमें मांछला ढेर मारया तिण करमरे उदे ॥ १२ ॥ तेरमें बोलें कहो स्वामीजी धनरी वंछा हुवे ओर धन पांमे नही तिको किण करमरे उदे, पूरव भवमें अन्तराय जीवांरे दीवी तिण करमरे उदे ॥ १३ ॥ चवदमें बोलें कहो स्वामीजी सरीरमें पथरी रोग हुवे ते किण करमरे उदे, पूरव भवमें मैथुन घणा सेव्या तिव्र राग करके तिण करमरे उदे ॥ १४ ॥ पनरमें बोलें कहो स्वामीजी सरीरमें रोग दीसे नही वेदना वहुत होय तो कोणसा करमरे उदे, पूरव भवमें छीपाय धन लीयो दगा वाजी सुं तिस करमरे उदे ॥ १५ ॥ सोलमें बोलें कहो स्वामीजी संयोगसूं विजोग हुवे ते कोण करमरे उदे, पूरव भवमें माया कपटाइ वहुत सी किवी तिस करमरे उदे ॥ १६ ॥ सतरमें बोलें कहो स्वामीजी रुप कुरुप हुवे ते कोण करमरे उदे, पूरव भवमें कोटवालरा भवकीया तिण करमरे उदे ॥ १७ ॥ अठारमे बोलें कहो स्वामीजी सरीरमें मोटो रोग उपजें तिको कोण करमरे उदे, पूरव भवमें कुवा तलाव खुदाया तिस करमरे उदे ॥ १८ ॥ कहो स्वामीजी कोई जीव मीठो बोलें अगलेने कडुवो लागै तिको कोण करमरे उदे, पूरव भवमें पंचेंद्री को मांस भक्षण कीयो तिस करमरे उदे ॥ १९

कहो स्वामीजी कोइ जीव तपस्या करणे की इच्छा करे लेकिन होवे नही सो कोण करमरे उदे, पूरव भवमें तपस्या करतां अन्तराय दीवीं तिण करमरे उदे ॥ २० ॥ कहो स्वामी जी कोइ जीवनें निंद घणी आवे तिको किसे करमरे उदे, पूरव भवमैं मदरा घणी पीवै तिस करमरे उदे ॥ २१ ॥ कहो स्वामीजी कोइ जीव सच बोले औरकुं परतीत नहीं आवे तिको कोण करमरे उदे, पूरव भवमें झुठी गोहाइ भरी तिण करमरे उदे ॥ २२ ॥ कहो स्वामीजी तरङ्ग लहर आवे सो किसे करमरे उदे, पूरव भवमें घणी नसेंकी जिनसा खाइ ते करमरे उदे ॥ २३ ॥ इति सम्पूर्णम् ॥

॥ अथ मोहनी का ३० बोल ॥

तस जीव कुंडमें डबोय २ कर मारे तो महा मोहनी कर्म बांधे ॥ १ ॥ तस जीवकुं गलो मोस कर मारे तो महा मोहनी । २ । तस जीव कुं धुंवो देकर मारे तो । महा० ३ मस्तक काटे तो । महा० ४ । मस्तक पर गीलो बांधे आड़ कर धूपमे खडो रख कर मारे तो । महा० ५ । गुंगा पगले कुं हांसी करके मारे तो । महा० ६ । पंचामें बेठ कर मिथ्या भाषा बोले तो । महा० ७ । जिन पुरष ने वडो करके थाप्यो है उसकी घात चिन्तवे तो । महा० ८ । राजाका खजाना

रोके तो । महा० ९ । बिरमचारि नहि झूठी वात कहै हुंवाल ब्रह्मचारी हुं तो । महा० १० । बाल ब्रह्मचारी नही झूठी वात कहे हुं वाल विरमचारी हुं तो । महा० ११ । जिसकें गुमास्तो रहे तिण धनी की घात वंछे तिसकी जनाना सती व्यभचार करे तो । महा० १२ । सर्पणी बचें कुं खाय चाकर ठाकुरने मारे तो । महा० १३ । राजाकी घात चिंते तो । महा० १४ साधुकी घात चिंते तो । महा० १५ । परस्पर मे कलह करावे तो । महा० १६ । कोइ पुरष स्त्री धर्म करणने उठ्यो होय उसको डीगाय देवे तो । महा० १७ । अनाचार सेव कर छीपावे तो । महा० १८ । अनाचार सेव कर पराये माथे कुडोआल देवै तो । महा० १९ । चारुं तीर्थका अवरण वाद बोले तो । महा० २० । तीर्थंकरा की अवरण वाद वोले तो महा० २१ । जिण आचार्य उपाध्याय पास पढ्यो गुणयो होय उसकी निन्दा करे तो । महा० २२ । जिण आचार्य उपाध्याय की घात वंछे तो । महा० २३ । तपसी तो नही तपसी लोकामें कहलावै तो । महा० २४ । बहु श्रुती नही लोकामें वहु श्रुती कहलावे तो । महा० २५ । रोगी गलानी कुं भरोसो देकर उसकी वेया वच्च नही करे तो । महा० २६ । देवता आवे नही झुठी कहें मेरे पास देवता आवेहे तो । महा० २७ सिद्धांका अवरण वाद बोले तो । महा० २८ । धर्म करे उस

पर द्वेष भाव रखे तो । महा० २९ । कोइ उत्तम भव्य जीव आलोय आत्म निन्दके निसल्य होय सुद्ध मरण कर मरे तो उस की निन्दा विकथा करे तो । महा० ३० ॥ इति सम्पूर्णम् ॥
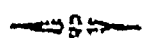
हे स्वामी गुरु कुण तत्व पदार्थका जांणते गुरु कहीजे । १ जलदी क्या कांम कीजे संसार को छेद कीजे । २ । मोक्ष वृक्ष नो बीज किसो सुद्ध क्रिया ज्ञान मुक्ति को बीज है । ३ । हे स्वामी चोर कुण विषय चोर शील रुप द्रव्यंना लुंटण वाला ४ । हे स्वामी जीवको वेंरी कुण प्रमाद पांच वेंरी है । ५ । संसारमे खांणी क्या गमखाणी चहीये । ६ । हे स्वामी मित्र कुण पाप धुं दूर करे ते मित्र कहीये । ७ । हे स्वामी वडाई नो मूल क्या कोइके पास कुछ मांगणो नही । ८ । हे स्वामी साच किसो सर्व्व जीव कें हितकारी वचन बोलीजे । ९ । आंधौ कोण खोटा कांम करे । १० । इति सम्पूर्णम् ॥

॥ * अथ रवचन्द कृत सिझाय * ॥

आज गइ मन केरी संका (एदेशी) सुण चेतन अव सिखडि साची, श्री जिन वचने राचिरे, जिनवर भापी गणधर साखि ते गुरु वचने दाखि रे ॥ सु० १ ॥ नरकादिक गति ए तुं भमियो दूखः सदा भारि रे, काल अनन्त इम धर्म

विहूणा अव जो आंख्य उघाडि रे ॥ सु० २ ॥ अली अक्षर द्रष्टां ते पामी मनुज भव सामग्री रे, आरज क्षेत्र उत्तम कुल जोगे अबकूं आलस मांडि रे ॥ सु० ३ ॥ सद गुरु वयणे सरधा करतुं मोह निंद सब छांडि रे, काल अचानक पकडे आवी रहसे बाजि मांडि रे ॥ सु० ४ ॥ लाख वातकी एक बात कहुं करयंारे जिन बचने थिरता रे, ते सुभ वीर वचन थी लहीए रवि शशि गिरि धिरता रे ॥ सु० ५ ॥ सम्पूर्ण ॥

॥ अथ षट दर्शनाष्ट ॥

दोहा) शिव मति बोध सुवेद मति नैयायक मत पक्ष मीमांसक मत जैन मत षट दर्शन परतक्ष ॥ १ ॥ (अथ शिव मत यथा) देव रुद्र जांगी सुगुरू आगम शिव मुख भाष, गनै काल पर नाति धरम इह शिव मतकी भाष ॥ २ बोध मत यथा) देव बुध गुरू पद्धती जग वस्तु छिन ऊध सून्य वाद आगम भनै चार्वाक मत बोध ॥ ३ ॥ (अथ वेद मत यथा) देव ब्रह्म अद्वैत जग गुरू वैरागी भेख, वेद ग्रंथ निश्चे धरम मत वेदांत विशेख ॥ ४ ॥ (अथ न्याय मत यथा) देव जगत करता पुरुष गुरु सन्यासी होय; न्याय ग्रंथ उद्यम धरम नैयायक मत सोइ ॥ ५ ॥ मीमांसक मत यथा) देव अल्ला दरवेस गुरु मानै करम

गरंथ, धरम पूर्व कृत फल उदे यह मीमांसक पंथ ॥ ६ ॥ अथ जैन मत) देव तीर्थंकर गुरु जती आगम केवल जैन, धर्म अनन्त नयात्मक जो जानै सो जैन ॥ ७ ॥ एक मत छ भेद सुं भए छुटक छ और, प्रति षोडस पाखंड सुं थया छयानवै और ॥ ८ ॥ इति सम्पूर्ण ॥ * ॥

॥ अथ इखुकार राजा भृगु प्रोहित सिझाय ॥

महिला में वैठी राणी कमलावती, झीणी तो उडे मारग खेह । जोवै तमासो इखुकार नगरमें, कौतिक उपनो मनमें एह ॥ १ ॥ (सांभल हे दासी आज नगरमें वहदो किम घणो) कातो परधान सखी डंडीया, का केई लुंट्या राजा गांव । का कोइ गाडयो धन नीसरयो, गाडा रह्या छै ठामो ठाम ॥ २ सां० आ० ॥ ना तो परधान वाइजी डंडीया, ना कोइ राजा लुंट्या गांव । भगू परोहित धन तज नीसरयो, राजारै धन लेवारो चाव ॥ ३ ॥ (सांभल हे राणी हुकम करो तो कोई गाडो इहां धरां) वेटां तो तिणरा संजम लीयो, वरज्यो घणुं ही पिता मात । ते पिण चारित लेवा क्रम था, भगू जशा तिणे मोह लटचात ॥ ४ सांभल हे० हुक० ॥ इम सुण कमलावती राणी इम कहे, इहां नो करो तो काय सांभलनें राणी माथो धुणीयो, राजारी ममता नहीं ठाय ॥

५ ॥ (सां० दासी राजानें ए वातां जुगती नही) महिला सुं राणी कमलावती, आईछै राजारे हजुर। वचन कहै राजानें आकरा, जाणे पोरस चढियो बोलै सूर ॥ ६ ॥ (सांभल हो राजा ब्राह्मण छोडी रिद्ध क्युं आदरो) कर जोडी कमला कहै, सांभल कंत सुजाण। ब्राह्मण जे रिद्ध परिहरी, तेतो घर मांहै मत आण ॥ ७ सां० राजा० ॥ ए रिद्धसुं अपणे कांई घणो हुसी, राजारा मोटा छै भाग। वमियै आहार री वांछा कुण करै, कै कुतरा कै काग ॥ ८ सां० राजा० ॥ वमियो आहार पीछो नर भखे, नही पर संसवा जोग। भगु प्रोहित रिद्ध तज नीसरयो, थे जाण्यो छै आसी म्हांरे भोग ९ सां० राजा० ॥ सं कलपियो धनडो पाछो किमलीयै, सांभल हो महाराज। दान दियो थे पहिलां हाथसुं, ते पाछो लेतां नावे थानें लाज ॥ १० सां० राजा० ॥ निश्चैतो मरणो राजा इक दिनें, छोडीनें काम विसेष। वीजो तो जगमें सरणो को नही, तारै जिनजीरो धर्म एक ॥ ११ सां० राजा० ॥ सगलै जगत रो धन भेलो करी, थे घालो भंडारां रै मांहि। तो पिण त्रिसना राजा पापणी, त्रिपत न मनडो थाय ॥ १२ सां० राजा० ॥ सांभल ने इखुकार राजा बोलीयो, तुं भाषैनी वचन संभाल। का तुंने राणी झोलो वाजीयो, काकोई कीधी मतवाल ॥ १३ ॥ (सां० राणी राजानें करडा वचन

न बोलीयै) नोंतो राजाजी झोलो वाजीयो, ना कोई कीधी मतवाल । ब्राह्मणरो वमियो धन थे आदरो, वरजण आई हो भुपाल ॥ १४ सां० राजा० ॥ वलतो राजा राणीनें इम कहे, इसडी वैरागण थाय । अजुंतो निजरां आवे नही, तुं बेठी छे घर मांय ॥ १५ ॥ (सां० राणी राजा कर०) उत्तर वालीतो दीसै नही, इसडी आई छै मतवाल । हुंतो घर छोडीनें नीसरी, थे पिण छोडो हो भुपाल ॥ १६ ॥ (सां० राजा आज्ञा देवो तो संयम आदरूं) रतन जडतरो राजा पींजरो, तिणमें सूवटो पडियो फंद । इण रीतै हुं थांरै राजमें, रहिनें पासुं आणंद १७ सां० राजा आ० ॥ सनेह रूपिया तांतण तोडनें, आरंभ धनसुं रहस्यां दूर । विरकत थई मोन पणें रह्या, थे पिण होयज्यो सूर ॥ १८ सां० राजा आ० ॥ दवतो लागी हो राजा वन मझे, हिरण सिसा बलै मांय । गिरध पंखी ज्युं आमिष देखनें, मन मांहें हरषित थाय ॥ १९ ॥ (सां० राजा, राग द्वेषरा भांगा लग रह्या) मांहो मांहे खधो ईसको, दस प्राण रहित कीधो काल । दुसमण तो मनमें हरष पाम्यो घणो, जानें ते माहरो मिटियो साल ॥ २० सां० राजा रा० इण दिष्टांतै लोभी मूरख थका, मुरछ रह्या भोग मांहि । पेलानें दुखियो देखी चेतै नही, लागी राग द्वेष री लाय ॥ २१ सां० राजा राग० ॥ मांसरी बोटी पंखीरी चांचमां,

नर पासै पंखी पडियो आग। आमिष सम भोग छोडनें, चारित्र लेस्यां चित्त लाय ॥ २२ ॥ (सां० प्राणी संयम थी सुख पामीयै) महल पिलंगादिक अथिर छै, ते पांम्या छै अपणें हाथ। कामभोग में रकत होय रह्या, ते तज होयसां नाथ ॥ २३ सां० राजा सं० ॥ पांचे इंद्रयांरा भोग छोडनें, द्रव्य भावै हलका थाय। सहज वाउ पंखिनी परै, विचरस्यां अपणी दाय ॥ २४ सां० प्राणी सं० ॥ गिरध पंखी ज्युं भोग जाणजो, एह काम वधारै संसार। साप ज्युं मोर थकी डरती रहै, ज्युं पापसुं संक स्यां इण वार ॥ २५ सां० प्राणी सं० ॥ सोक तजी संतोष सुं, लेस्यां संयम भार। ममता तजि समता ग्रहो, करस्यां उग्र विहार ॥ २६ सां० प्राणी सं० ॥ तन धन जौवन कारमो, चंचल वीज समान। खिण खिण खुटै आउखो, मूरख करै रे गुमान ॥ २७ सां० प्राणी स० ॥ हस्ती ज्युं वंधण तोडनें, आपे वन मुखे जाय। करम बंधण तुटै संयम लियां, सुणो कहुं छुं महाराय ॥ २८ सां० प्राणी० इम सुणनें इखुकार राजा चेतियो, छोडीनें मोटको राज। कायरनें तो ए तजतां दोहिलो, विप्र सहित सारया काज ॥ २९ सां० प्राणी स० ॥ मोह न राख्यो परिग्रह छोडके, पायो जिन धरम सुजाण। तपस्या सगलांही आदरी, उतकृष्टो पराक्रम आण ॥ ३० सां० प्राणी स० ॥ सुध संयम पालै सदा

सुमति गुपति दयाल । भमरानी परै करै गोचरी, रिप टालै दोप वयाल ॥ ३१ सां० प्राणी स० ॥ तारण तरण जिहाज छै, भव्य जिवनें उतारै पार । केवल ज्ञान उपायनें, सुख पाम्यां श्री कार ॥ ३२ सां० प्राणी स० ॥ मोह निवारी प्राणी समझनें, निरमल भावना भाव । छए जणा थोडा कालमें, मुगति विराज्या जाय ॥ ३३ सां० प्राणी स० ॥ राजा सहित राणी कमलावती, भृगु पुरोहित जशा नार । प्रोहित भृगु ना दोय डीकरा, शिव सुख पाम्यो सार ॥ ३४ सां० प्राणी संयमथी सुख पामीये ॥ इति * सम्पूर्ण * ॥

॥ * अथ नंदीपेण मुनिनी सिझाय * ॥

राज ग्रही नगरी नो वासी, श्रेणीक नो सुत सुविलासी हो ॥ मुनिवर वयरागी) नंदी पेण देशन सुणी भीनों, नाना करतां व्रत लीनो हो ॥ मु० १ ॥ चारीत्र नित्यें चोखुं पाले, संजम रमणी सुं माले हो । मु० । एक दिन जिन पाए लागी गोचरी नी आज्ञा मांगी हो ॥ मु० २ ॥ पांगरी यो मुनि वोरवा, क्षुधा वेदनी करम हरवा हो । मु० । ऊंच नीच मध्यम कुल मोटा, अटतो संजम रस लोटा हो ॥ मु० ३ ॥ एक ऊंचो धवल घर देखी, मुनिवर पेठो सुद्ध गवेखी हो । मु० । तिहां जई दीधो धर्म लाभ, वेश्या कहे इहां अर्थलाभ

हो ॥ मु० ४ ॥ मुनि मन में अभिमानज आंणी, खंड करी नाख्यो तरणुं तांणी हो । मु० । सो वन वृष्टि हुई वार कोडी, वेश्या वनिता कहे कर जोडी हो ॥ मु० ५ ॥ (थारे माथे पच रंगी पाग सोनानो छोगलो मारुजी ॥ (एदेशी) थेंतो ऊभा र हीनें अरज अमारी सांभलो ॥ (साधुजी०) थेंतो मोहोटा कुल ना जांणी मूकी द्यो आंमलो ॥ सा० ६ ॥ थेंतो लेई जाउ सोवन कोड गाडां ओंठे भरी ॥ सा० ॥ थारे केसरीये कसवी नें कपडे मोही रे ॥ सा० ॥ थारी मुरत मोहन गारी जगत मां सोही रे ॥ सा० ॥ थारी आंखडीयानी कचाणरी लाग णो ॥ सा० ७ ॥ थारी नवलो जोबन वेस विरह दुख भाज णो ॥ सा० ॥ एतो जंत्र जडित कपाट कुंचीमें कर ग्रही ॥ सा० ॥ मुनि वलवा लागो जांम के आडी ऊभी रही ॥ सा० मेतो उछी अस्त्री नी जात मति कही पाछली ॥ सा० ॥ थेंतो सुगुण चतुर सुजांण विचारो आगले ॥ सा० ८ ॥ थेंतो भोग पुरन्दर हुं पण सुन्दरी सारीरे ॥ सा० ॥ थेंतो पेहरो नवला वेस घरणां जर तारीरे ॥ सा० ॥ मणि मुगता फल मुगट विराजे हेमनां ॥ सा० ॥ अमें सजीयें सोल सिणगार कें पेरुं रस अङ्गनां ॥ सा० ९ ॥ जे होय चतुर सुजांणके कदी यन चुकसे ॥ सा० ॥ एहवो अवसर साहब कदीयन आवसे सा० ॥ इम चिंते चित्य मझार नंदी षेण वाहलो ॥ सा० ॥

रेहवा गणकाने धांमके थइनें नाहलो ॥ सा० १० ॥ (ढाल २) पुरवाली देशी) भोग करम उदय तस आव्यो, सासन देवी इंम संभलाव्यो हो । मु० । रही बार वरस तस आवास्यों, सासन देवी इंम संभलाव्यो हो । मु० । रही बार वरस तस आवासें, ते समे लो एकण पासे हो ॥ मु० ११ ॥ दस नर दिन प्रतें प्रति बुझे, दिन एक मुरख नवि बुझे हो । मु० । बुझ वतां हुइ बहु वेला, भोजन नी थइ अवेला हो ॥ मु० १२ कहे वेश्या उठो स्वामी, एह दशमो न बुझे कांमी हो । मु० वेश्या वनिता कहे धस मसती, आज दशमा तुमें हिज ह सती हो ॥ मु० १३ ॥ एह वयण सुणी नें चाल्यो, फरी संजम सुं मन वाल्यो हो । मु० । फरी संजम लीयो उल्हासें वेष लेइ गयो जिन पासे हो ॥ मु० १४ ॥ चारित्र नित चोखं पाली, देव लोकें गयो देई ताली हो । मु० । तप जप संजम किरिया साधी, घणा जीवनें प्रति बोधि हो ॥ मु० १५ ॥ जय विजय गुरु सीस, तस हरप नमे निस दीस हो । मु० मेरु विजय इम बोले, एहवा गुरु ने कुण तोले हो ॥ मुनि वर वयरागी १६ ॥ * ॥ इति सम्पूर्ण ॥ * ॥

॥ ❀ अथ बार भावना ❀ ॥

(दोहा) श्री आदीसर जिनवर तणा, पद पङ्कज प्रणमेव । भण सुं बारें भावना सानिध करि श्रुतदेव ॥ १ ॥ दान दया तप जप क्रिया, भाव पखै अप्रमांण । लुंण विना जिम रस वती ए श्री जिनवर वांण ॥ २ ॥ दांन सीयल तप भावना करतां दुसम काल । भावन भावो भविक जन, पुन्य सरोवर पाल ॥ ३ ॥ अनित्य पणो असरण पणो, भव सरुय एकत्व । अनित्य पणो वलि अशुचि पणो, आश्रव संवर तत्व ४ ॥ नवमी निर जर भावना, धर्म शु लोक सुभाव । बोधि दुल्लभ परभव इसी, बारह भावन भाव ॥ ५ ॥ (ढाल १) पहिली भावन भावीयै जी, अनित्य पणो संसार । संध्या राग समो सहु जी, निरखे न होय गिमार ॥ ६ ॥ भविक जन परिहर विषय रो विरोध । हित कारण करूणा करीजो, श्रीगुरु द्यै प्रतिबोध ॥ ७ ॥ (भविक जन) वरषा कालें जिम रमेंजी, बालक रांमति काज । रेणु तणा घर कारमा जी, तिम धन संपति राज ॥ ८ भ० ॥ अतुली बल जिनवर कह्या जी, चक्रवर्त्त सबल सरीर । अनित् पणें थिर न विरह्या जी, डाभ अणी जिम नीर ॥ ९ भ० ॥ इम जग सर्व असार ता जी, जांणी मकर कुकर्म । इह भवि परभवि सुख भणी जी, साचो कर जिन धर्म ॥ १० भ० ॥ (ढाल २)

धरम पखै कुण जीव नेरे सरणे राखण हार । मात पिता सुत सब मिलीरे, कर न सकें उपगार रे ॥ ११ ॥ (धम्म हीयै धरो) असरण जाण संसारो रे । जीव जतन करो, जिम पांमो सुख सारो रे ॥ १२ ध० ॥ मिथिला नगरी नो धणीरे राज नमि इण नाम । अंतेवर धन तेहने रे कोइ न आव्यो काम रे ॥ १३ ध० ॥ साठ सहस सुत सगर नारे नंद तणो धन रास । राखि न सक्या तिहने रे भोला हीये विमास रे १४ ध० ॥ एक सरणो जिनवर तणो रे सूधो धर्म संसार । आतम हित कर तिण भणी रे मानव जनम म हारो रे ॥ १५ ध० ॥ (ढाल ३) इण संसारें जीवडा रे अर हठ माला न्याये रे । घाडल प्रेरयो पांनज्युं रे अधो उरध वलि थाये रे ॥ १६ इम जाणी हो प्राणी विषय निवारीये रे । सुख कारण हो श्री जिन धर्म संभारीये हो ॥ १७ ॥ कीड़ पतङ्ग पतङ्ग पणो भमे रे निरधन ने धन धारी रे । सो भागी दो भागीयो रे भूपति नें भिखियारी रे ॥ १८ इम० ॥ इम नटनीपरि भव भम्यो रे विध विध वेश विनाणे रे । सुख दुख जे तिहां भोग व्यारे नाणी विण कुण जांणें रे ॥ १९ इम० ॥ जो भव भमतां ठभम्यारे तो प्रमाद तज जागो रे । जंबु वयर तणी परे रे इन विध मारग लागो रे ॥ २० इम० ॥ (ढाल ४) एक पणो जग जीवने जोवो हीयें विमास । धर्म पखै सब

जीवडा परिभमें उदास ॥ २१ एक० ॥ परभव थी चवि एकलो आवें वलि जाइ । जनम मरण पुण्य एकलो कोइ सरण न थाइ ॥ २२ एक० ॥ मात पिता सुत कामनी परिजन ने मांहि । असुभ कर्म जीव एकलो लीजै दुरगति साहि २३ एक० ॥ पाप करी धन मेलव्यो अति चंचल चित्त । पर भव जातां सब मिली वांटीन ल्यै वित्त ॥ २४ एक० ॥ रोगादिक दुख एकलो वेदें निरधार । वांटी न सकै कोसगौ जाण्यो सयणाचार ॥ २५ एक० ॥ जीव अनाथी नी परै जागो जिन वांण । परमारथ जाण्यौ पखै किम कहीयै अजांण ॥ २६ एक० ॥ (ढाल ५) जीवां थकी एजुवा जुवा धन सयण परियण जोइ । आपणौ साजण तुं गिणै एक जिन धर्म हो जिहां थी सुख होइ ॥ २७ ॥ आप स्वारथ जग सहूरे पर कारणरे तुं कांइ गमार । पाप करी पोतां भरै रे सुख कारणरे तुं धरम संभार ॥ २८ आ० ॥ संध्या समें जिम तरवरे पंखीया मिल विलसंत । परभात पहुंचै दह दिसै इम परिजन रे तज तुं मनचिंत ॥ २९ आ० ॥ जिम चरण वेला गौ मिलै गोवालीया नें पास । पाछिलें दिन निज घररे वलि पहुचें रे तिम ए घर वास ॥ ३० आ० ॥ पंथीया पंथें जिम मिलै संध्या समें इक गाम । जु जुआ जायै सहू सनै तिम सयणां रे सङ्गम इक ठाम ॥ ३१ आ०

धन तेहते तजै सुख भणी गिण सरव सङ्ग असार । संवेग रस मांहि झीलतां मन रङ्गरे ल्यै संजम भार ॥ ३२ आ० ॥ ढाल ६) देह असुचि करि पूरीयो हो असुचि करी उतपन्न इम जांणी हो प्राणीया धरम करै ते धन्न ॥ ३३ ॥ सुविचारीरे प्राणीया निज मन थिर कर जोय । इण संसारें सुख भणी हो धरम पखै कुण होय ॥ ३४ सु० ॥ मंस रुधिर नख नैनसा हो मेद चरम वस केश । ए सरुप इण देहनें हो किहां इहां सुचि लवलेस ॥ ३५ सु० ॥ श्रोत वहे नव अहि निसैं हो पुरष सरीर असार । श्रोत इग्यारे नारिनें हो अशुचि तणा भंडार ॥ ३६ सु० ॥ नाना व्यंजन रसवती हो जिहां थी विणसी जाय । चोवा चन्दन वलि सवे हो जस सङ्गम मल थाय ॥ ३७ सु० ॥ देह अथिर जिनवर कह्या हो माटी भंड समान । एक सुकृत कर सासतो हो जिम सुख लहै प्रधान ॥ ३८ ॥ (ढाल ७) आश्रव कारण ए जग जाणीयें परिहर सहना हो सङ्ग । दुरगति जातां सहज साथीया तिन धरम सुं धरि रङ्ग ॥ ३९ आ० ॥ पंचेइंद्री सव जगनें नडै विरुया विषय सवाद । एक इंद्रीनें वसे पांमें जीव प्रमाद ॥ ४० आ० नादे मृगलो रसवसि माछलो रुप्प देखी पतङ्ग । वासे भमरो फरसे हाथीयो पामे रङ्ग विरङ्ग ॥ ४१ आ० ॥ च्यार कषाय निवारो मन थकी भव तरुना ए मूल । फर्नांक पाक समान्स

जेहना दुरगति नें अनुकूल ॥ ४२ आ० ॥ पंचे आश्रव दुख कारण गिणो जोग क्रिया वली तेह । करम तणी थिति रस कारण वली आश्रव कारण एह ॥ ४३ ॥ (ढाल ८) पंच सुमिति निरती धरै रे पालै आदर आणीरे । त्रिण्ह गुपति गुपता सदा जी श्रुत परमारथ जांणी रे ॥ ४४ ॥ संवर भावन भावीये जी मन समाधि धरि प्राणी रे । आगम माहे एहना जी फल हित प्रमुख वखाणी रे ॥ ४५ सं० ॥ खंति प्रमुख दस विध सदा जी साधु धर्म जे धारै जी । ते संवर रस अनुभवै जी जनम मरण भय वारै जी ॥ ४६ सं० ॥ करम उदय करि आवीया जी जेह परीसह जीयै जी । गय सुक माल तणी परै जी ते दिन २ अति दीयै जी ॥ ४७ सं० संवर बारह भावना जी मेल सतावन भेदै जी । संवर तत्व विचारतां जी अशुभ करम वल भेदै जी ॥ ४८ ॥ (ढाल ९ ध्यान विनय काउसग धरो रे वेया वच सिझाय । पायछित करो खरो रे दस विध धरि मन राय ॥ ४९ ॥ (रे प्राणी धरि संवेग विचार, सदगुरु वचन संभार रे प्राणी)। टेक । तप अन सन अणोदरी रे वृति प्रमति रस त्याग । काय कलेस संलीनतारे ए तपसुं धरि राग ॥ ५० रे० ॥ रतना वली कनका वली रे एकावली गुण रयण । सिंह निक्रुड तप बहु परें रें तप करि धरि गुरू वयण ॥ ५१ रे० ॥ तप विण

किम निज गतमारे पामें निरमल भाव । नवमी निर जर भावना जी मनमें भावन भाव रे ॥ ५२ ॥ (ढाल १०) धन धन गुरु मुख श्रुत सुणी जे पालें गुरु सीखुए । साधे ए सिद्ध तणा घणा सुख मिठा जिम इखुए ॥ ५३ भा० ॥ भावन भावो भावीयां धरम तणी इण रीतु ए । भरथ इला पुत्रनीं परै ते थायें जग वदी तूए ॥ ५४ भा० ॥ जे निज आतम षस करी इंद्री विषय विरूतू ए । मोह तणा दल निरदली सील धरै सुपवितू ए ॥ ५५ भा० ॥ मात पिता सुत कामनी प्रमुख तजी भव पासू ए । जेहनें सङ्ग पणो धरै ते धन सुगण निवासू ए ॥ ५६ भा० ॥ तरूण पणे जे तप तपे विपम परी सह जीतु ए । उप सम रस करि पूरीया समिति णिमणी अरि मीतू ए ॥ ५७ भा० ॥ इम गुण वन्त तणा सदा जां गुण ग्रहतां गुण होय । फुल तणै परिमल गुणै तेल तणो गुण जोय ॥ ५८ भा० ॥ (ढाल ११) श्री जिन सासन लोक सरुप वखणीयें रे चवदह राज प्रमाण । जनम मरन करि वार अनंती पारि सीयो रे जांणे ते जग भांण ॥ ५९ भा० ॥ लोक सरूप विचारो आतम हित भणी रे निज मन तुं थिर राख । धर्म ध्यान ए श्री मुख जग गुरु उपदिसे रे त्रीजे अङ्ग साख ॥ ६० लो० ॥ भव २ भमतां जीव करम वस आपणे रे मात पिता सुत होय । ते हिज वयर विसेपें सत्रु पणो

भजै रे पंचम अङ्ग जोय ॥ ६१ लो० ॥ वाघण भव सुत देखी साधु स कोसलो रे जोवो भवि परिणाम । वयर तणै वसि सुत आमिष भखै रे सारैं ते सब काम ॥ ६२ लो० ॥ स्वारथ कारण जीव तणै सहुयें सगो रे स्वारथ विण सब दुर । लोक सरुप इसौ मन माँहि चिन्तवे रे धरि उपसम रस पूर ॥ ६३ लो० ॥ (ढाल १२) लहि मानव भवि दोहिलो वलि सरीर निरोग । उत्तम कुळ उतपति लही देव सुगुरु संयोग ॥ ६४ ॥ (संवेग रस आणीये रे जाणी श्री गुरु वांण । आलस प्रमुख तणै उदै रे आगम श्रवण दुलंभ । सदहणा पिण दोहिली जिम जल काचै कुंभ ॥ ६५ सं० ॥ कोडी काजै न हारीयै जिम कनकनी कोड । तिम भोगारथ कांइ गमै लाधो धरम नी जोड ॥ ६६ सं० ॥ जिम समुद्र माहि पाडीयो रतन न लाभै तेह । तिम प्रमाद सवि हारीयो धरम दुहेलो एह ॥ ६७ सं० ॥ पाम्यौ धरम अछै इहां वली लहिस्यां केम । तिण करि लाधो रांकधो जिम पामें सुख खेम ६८ सं० ॥ सुर नर ऋधि कुसम जिहां शिव सुख फल सम जास । धरम कलप तरु सेवतां पूजें वांछित आस ॥ ६९ स० ढाल १३) इण परि बारह भावन जाणी, आण जिणन्द तणी मन आणी । अह निस जेह धरै मन माहैं, ते श्री जिन धरम आराहे ॥ ७० ॥ रस वारिधि रस ससि हर बरसै, बीका

नयर नयर मन हरसै । श्री जिन चन्द सूर गुरु राजे, एह विचार सुणो हित काजे ॥ ७१ ॥ प्रमोद माणक गणि सह गुरु सीसै, गणि जय सोम कहै सु जगीसै । आदीसर सूर तरु सुप सायै, एह भणंतां शिव सुख थायै ॥ ७२ ॥ इति श्री बारह भावना सम्पूर्णम् ॥ * ॥ * ॥ * ॥

॥ अथ पंचमी बृहद्स्तवन ॥

प्रणमुं श्री गुरु पाय, निरमल न्यान उपाय । पांचमी तप भणु ए, जन्म सफल गिणु ए ॥ १ ॥ चउवीस मो जिन चंद केवल न्यान दिणंद । त्रिगडे गह गह्यो ए, भवियण नें कह्यो ए ॥ २ ॥ न्यान वडो संसार, न्यान मुगति दातार । न्यान न्यान दीवो कह्यो ए, साचो सरदह्यो ए ॥ ३ ॥ न्यान लोचन सुविलास, लोकालोक प्रकाश । न्यान विना पसु ए, नर जाणें किसुं ए ॥ ४ ॥ अधिक आराधक जाण, भगवती सूत्र प्रमाण । न्यानी सर्वतु ए, किरिया देशतु ए ॥ ५ ॥ न्यानी सासो सास, करम करै जे नास । नारकि नें सही ए, कोड वरस कही ए ॥ ६ ॥ न्यान तणो अधिकार, बोल्या सूत्र मझार । किरिया छै सही ए, पिण पाछै कही ए ॥ ७ ॥ किरिया सहित जो न्यान, हुवै तो अति परधान । सोनो नें सुरो ए, सङ्ख दूधे भरयो ए ॥ ८ ॥ महा निशीथ मझार,

पांचमि अक्षर सार । भगवंत भाषीयो ए, गणधर साखियो ए ॥ ९ ॥ (ढाल१ पहिली काल हरानी) पांचमि तप विधि सांभलो, जिम पामो भव पारो रे । श्री अरिहंत इम उपदिसै भवियण नें हित कारो रे ॥ पां० १० ॥ मिगसर माह फागुण भला, जेठ असाढ वैसाखो रे । इण षट मासै लीजियै शुभ दिन सदगुरु साखो रे ॥ पां० ११ ॥ देव जुहारी देहरे गीता रथ गुरु वंदीरे । पोथी पुजो न्यान नी, सगति हुवै तो नंदीरे ॥ पां० १२ ॥ बे कर जोडी भावसुं, गुरु मुख करो उपवासो रे । पांचमि पडिकमणो करै, पढो पंडित गुरु पासो रे ॥ पां० १३ ॥ जिण दिन पांचमि तप करो तिण दिन आरंभ टालो रे । पांचमि तवन थुई कहो, ब्रह्म चारिज पिण पालो रे ॥ पां० १४ ॥ पांच मास लघु पंचमी, जाव जीव उत्कृष्टी रे । पांच वरस पांच मासनी, पांचमि करो शुभ दृष्टी रे ॥ पां० १५ ॥ (ढाल२ उल्लालानी) हिव भवियण रे पांचमि ऊजमणो सुणो, घर सारुरे वारु धन खरचो घणो । ए अवसर रे आवंतां वलि दोहिलो, पुण्य जोगै रे धन पामंता सोहिलो । (उल्लालो) सोहिलो वलीय धन पामतां पिण धर्म काज किहां वली, पंचमी दिन गुरु पास आवी कीजीयै कावसग रली । त्रिन न्यान दरसण चरण टीकी देइ पुस्तक पूजीयै, थापना पहिली पूज केसरं सुगुरु सेवा

कीजीये ॥ १६ ॥ सिद्धां तनीरे पांच परत वीटांगणा । पांच प्रकारे मुख मल सूत्र प्रमुख तणा । पांच डोरारे लखण पांच मजी सभ्रा, वांस कुंपारे कांची वारु घरतणा ॥ (उल्लालो) वरतणा वारू वलिय कमली पांच झिल मिल अति भली । थापना चारिज पांच ठवणी सुहपती पड पाटली । पट्ट सूत्र पाटी पंच कोंथल पंच नव कर वालीयां, इण परें श्रावक करे पांचमि उजमणो उजवालिया ॥ १७ ॥ वलि देहरे रे स्नात्र महोच्छव कीजिये, घर सारुं रे दान वली तिहां दीजिये प्रतिमांन रे आगलि ढावणो ढोइये, पूजानां रे जे जे उपगरण जोइये । (उल्लालो) जोइये उपगरण देव पूजा काज कलस भृंगार ए, आरती मङ्गल थाल दीवो धुप धाणो सार ए । घनसार केसर अगर सूकड अंगुलुहणां दीस ए, पंच पंच सगली वस्तु ढोवो सगति सुं पच्चवीस ए ॥ १८ ॥ पांचमी तारे साहमी सर्व जीमाडिये, रात्री जागे रे गीत रसाल गवाडिये । इण करणी रे करता न्यान आराधिये, न्यान दरशण रे उत्तम मारग साधिये । (उल्लालो) साधिये मारग एह करणी न्यान लहीये निरमलो, सुर लोकमें नरलोक मांहे न्यानवंत ते आगलो । अनुक्रमें केवल न्यान पामी शाश्वता सुख जे लहे, जे करे पांचमी तप अखंडित वीर जिणवर इम कहे ॥ १९ ॥ कलश ॥ इम पंचमी तप फल प्ररूपक

वर्द्धमान जिणेसरो, मैं थुण्यो श्री अरिहंत भगवंत अतुल वल अलवेसरो । जयवंत श्री जिनचंद सूरिज सकल चंद नमुं-सीयो, वाचना चारिज समय सुंदर भगति भाव प्रसंसीयो ॥ * इति सम्पूर्ण * ॥ * ॥ * ॥

॥ अथ श्री राजसिंह कुमार नी चौपाई ॥

दोहा) श्री अरिहन्त सिद्ध आचार्य वलि उपाध्याय अण गार । पांचे पद सुभ भाव थी नमतां जय जय कार ॥ १ ॥ चउदह पूरवनो कह्यो सार एक नवकार । एहनें जपतां के थया शिव वधुना भरतार ॥ २ ॥ आपद टले सम्पद मिले प्रगटें आनन्द पूर । ईति भीति वहु उप समें दालिद जावें दुर ॥ ३ ॥ त्रिदशाधिप सानिध करें थायें कारज सिद्ध । रोग शोग टलिनें हुवें अष्ट सिद्धि नवनिद्धि ॥ ४ ॥ मन शुद्ध इक लाख जाप थी वांधें श्री जिन गोत । मन्त्र जन्त्र मूली सिरें भवनिधि तारण पोत ॥ ५ ॥ श्री मतीं पिङ्गल संवलु हुंडक कंवल जीव । इण भव परभव सुख वरया रट नवकार सदीव ॥ ६ ॥ तिण नवकारो पर कथा श्री मृगाङ्क नृप नन्द राज सिंहनी वर्णवुं श्रोतानें सुख कन्द ॥ ७ ॥ (ढाल १) वीज करें सीता सतीं रे लाल (एदेशी) तीजें पुष्कर वर दीपमां रे लाल, भरत क्षेत्र सुख कार । सु विचारी रे वद्ध

नयरें वहु देशथी रे लाल, सोभित अति श्रीकार ॥ सु० १
श्रोता सांभलज्यो कथा रे लाल, त्रिकरण राखी ठाम । निद्रा
विकथा परि हरि रे लाल, रसछें अति अभिराम ॥ सु०२ श्रो
सिधवट नामे दीपतो रे लाल ग्राम तेहने तीर । पर्वत इक
उंचो तिणे रे लाल वहें नीझरणे नीर ॥ सु०३ श्रो० ॥ फिर
वहु जाती रुंषनी रे लाल अंब कदंब अनार । जंबु निंब तमा-
लना रे लाल कहतां नावें पार ॥ सु०४ श्रो० ॥ बावन चंदन
तेहनी रे लाल आवें परिमल वास । तस आक रख्या मधुकरा
रे लाल गणरव करें उलास ॥ सु०५ श्रो० ॥ सरवर पाल सु
सोभता रे लाल हंसा केरा थाल । चक चकइ सारस बका
रे लाल सहु तिहां रहें खुस्याल ॥ सु०६ श्रो० ॥ क्याहीं घणो
रमणीक छें रे लाल क्याहीं अति भयकार । क्षंगी दरखत
तेहमें रे लाल न चढें द्रग दिनकार ॥ सु०७ श्रो० ॥ सिंह
स्याल सूकर ससा रे लाल रिझ रोझ विकराल । फोही
फेका रव करें रे लाल फिरता अजगर व्याल ॥ सु०८ श्रो० ॥
चीता चित्का रव करें रे लाल जोरें गुंजे सीह । गज टोला
फिरता घणा रे लाल मद झर अति अबीह ॥ सु०९ श्रो ॥
यम मुख सम अति भय करु रे लाल गुफा घणी विस्तार ।
तम पसरयो चिहुं फेरमें रे लाल देखंता भयकार ॥ सु०१०
श्रो० ॥ पहवें तिण गिरिनी गुहा रे लाल श्री दमसार मुनीस

गुरु आज्ञा के आविया रे लाल चौमासे सुजगीस ॥ सु० ११ श्री० ॥ चौमासें रह्यो मुनि करें रे लाल श्री जिनवर नो जाप अप्रमाद गुण संचरें रे लाल तप चौमासी थाप ॥ सु० १२ श्री० ॥ पांचे सुमतीयें सदा रे लाल सुमता गुपतें तीन। आठे प्रवचन मातने रे लाल खोलें रमें सलीन ॥ सु० १३ श्री० कर सिझाय सुभाव थीरे लाल करमी करें भगांण। एकांतें श्रुत वखनथी रे लाल पालें जिनवर आण ॥ सु० १४ श्री० ॥ निंदें वंदें आयने रे लाल विहुं ऊपर समतोल। निरवद्य वांणी वागरें रे लाल तत्व सहित अणमोल ॥ सु० १५ श्री० ॥ अनु प्रति कोम विहुं विषें रे लाल परि सह नावि राति खेद। निंदा विकथा नवि करें रे लाल एको मोक्ष उमेद ॥ सु० १६ श्री० ॥ ज्ञुलात चन्द कहें मोहिरी रे लाल त्रिकरण भाव त्रिकाल। होज्यो मुनिने वन्दना रे लाल ए कही पहली ढाल ॥ सु० १७ श्री० ॥ (दोहा) सान्ति सुधा रस झीलता सीतल श्रुत सु गात। कोटि काम दल जीपता धीर मेरू साक्षात ॥ १ ॥ पंच महाव्रत पालता वालता कर्मना वृन्द। दोषण वहु विध टालतां आलता ज्ञानं सानन्द ॥ २ ॥ अथ मारग वहतां कहें भील भीलनी नार। दीठा मुनि ध्याने रता विहुं मन करें विचार ॥ ३ ॥ ए कुंण इहां एकां तपण स्यु साधे छै काज। एह इरागण गिरि गुफा निडर पणे महा साज ॥ ४ ॥ एतो

जीवा जोग छै छाडी घर परिवार । स्युं इहां ए कारज करें आलोचि पियु नार ॥ ५ ॥ ततखिण मुनिपें आयनें वैठा प्रणमी पाय । मुनि तो ध्यान रतें तसु कछुयन पूछी वाय ६ ॥ वैठीके तलिवार, विहुं गया आपणे टाम । फिर वीजें दिन मुनि तणा दर्शण कीधा आम ॥ ७ ॥ नित प्रतते विहुं मुनि तणी सेवा साझें भुर । मन राखें वैराग में निरखी मुनि नो नुर ॥ ८ ॥ मुनि सेवा फल मोटको छैनि सुणो भवि लोय । हिव आगल सेवा थकी स्युं फल एहने होय ॥ ९ ॥

ढाल २) लहरांश भीजेंलो (एदेशी) इक दिन काउसग पार सें मुनि आगल वैठा दीठा रे (धन २ मुनिवरु ए आ०) हलवा करमी जांणनें इम बोले वचन समीट रे ॥ १ ध० ॥ रे भाया एह मनुक्षनो अति दोहिलो छै अवतार रे । एहनें फोकट जं गमें वलि सोधें पापना भार रे ॥ २ ध० ॥ ते नर कंचन गिरि तजी गहें पीतल सुन्दर जाण रे । काच खण्ड कर हुं सडी गहें तजि मणि रत्ननी खांण रे ॥ ३ ध० ॥ कल्पतरु उन्मीलने घर वाहें पेड़ वंछुल रे । वांचि करि कर आनियो किणे खर देइ फूल रे ॥ ४ ध० ॥ मृग मद छाड कु वासने कर गहियें इस घणेरो रे । आंव तजी गहें आकने अमृत तजि विप गहें फेरि रे ॥ ५ ध० ॥ मुरखामे मुरख वडो नस आख्यो सास्त्र मझार रे । इण जैन रतन पामिनें रहि न

करयुं धर्म लिगार रे ॥ ६ ध० ॥ विषय तृष्णायें रम रह्यो साध्यो नवि धर्म नो टाणा रे । ते नर भर दरियें जई तज नाव उप- लवें टाणो रे ॥ ७ ध० ॥ भील भीलडी नें मुनि इम सीखवें सुणो सुविचार रे । जिव हिंसा नो पाप छें घणो नरक पडें निर धार रे ॥ ८ ध० ॥ वेदन दस प्रकार नी सहियें तिहां पडियां प्राणी रे । समय मात्र नवि सुख लहें वहें झाक झीक दुख खांणी रे ॥ ९ ध० ॥ परमा धामी देवता करि सिंह बाघना रुप रे । धाय धाय तन फाडता छेदें भेदें दुख कूप रे ॥ १० ध० ॥ भूख तृषा अति आकरी पर वस नो कष्ट अपार रे । क्षेत्र वेदना आकरी मांहो मांहि लडें भयङ्कार रे ॥ ११ ध० ॥ बरछी सेल कृपांण थीं करे खण्ड खण्ड जस काय दे । फेर असुभ ना उदय थी तन पारा ज्युं मिल जाय रे ॥ १२ ध० ॥ एक एक थी अधिक छें साते नरके दुख दाय रे । एम अनन्ती वेदना थिति सागर संख्या थाय रे ॥ १३ ध० ॥ वध मृषा चोरी अबंभ थी परिग्रह थी पांमें फोडा रे । पिण एहनें त्यागें इसा जगदीसें जिवज थोडा रे ॥ १४ ध० ॥ कहें मुनि तुम प्राणी तणी करो जीव हिंसा नो नेम रे । इण भव परभव तेह थी तुम रहस्यो कुसले खेम रे ॥ १५ ध० ॥ निसुणी विहुं जण गुरु मुखें इम हिंसा दुख वाई रे । मनमें डरप्या अति घणा कहें मुनिनें सीस

नमाई रे ॥ १६ ध० ॥ महाराजा अम टालस्यां जे मुझथी टलिस्यें कर्म रे । बीजी ढाल हुलास ए कही धन धन अरिहंत धर्म रे ॥ १७ ध० ॥ (दोहा) मुनि कहें तुम वेहुं जणां सीखो ए नवकार । पहिलें पद अरिहंत जी द्वादश गुण श्रीकार ॥ १ दूजें सिद्ध सिद्धि स्थिता आठ गुणे अरूप । तीजें आचारज गुणं षट त्रिंशद्गण भूप ॥ २ ॥ उपाध्याय चौथे जपो गुण पचवीस उदार । ज्ञाता अङ्ग उपङ्गना सिक्ष भणावे सार ॥ ३ पंचम मुनि पण महव्वइ गुण सतावीस धार । इम परमेष्टी पंच पद मंत्र नमु नवकार ॥ ४ ॥ एपांचे पद समरतां सारा पाप पुलेह । मङ्गलीक नो मुख्य ए पहलो मङ्गल एह ॥ ५ इण भव परभव सुख लहें एह थी चिंता चूर । मन विकसें तन उलसें दोखी दुरजन दूर ॥ ६ ॥ श्री अरिहंतें निज मुखें मोटुं सहुमें कीध । पद अमोलख धर्म नो सार तुमाने दीध ७ ॥ तीन काल गुणज्यो तुम्हे त्रिकरण राखी ठाम । तुमनें हित वहुलो हुस्यें तिन पिण सीख्यो तांम ॥ ८ ॥ चौमासें थयें मुनि गया गुरूपें करी विहार । पहुचावी घर आविया ए विहु स्त्री भरतार ॥ ९ ॥ (ढाल ३) सुत उच्छव माड्यो भूप राजिंदा भू० (एदेशी) हिवनि सुणो ताजि ब्यापात राजिंदा ब्याघात रा० जवुं द्विप सुहामणो । तस लाख जोजन परिमांण रा० श्री जिन कह्यो आगम पणो ॥ १ ॥

तिण जबुयें आख्यो साहा रा० क्षेत्र दक्षिण दिशि मेरु थी । भरत क्षेत्र उत्तम जन युत रा० षट खंडें सोभित अति ॥ २ तिण मध्य खंड पुर एक रा० मणि मंदिर नांमें भलो । मणि रत्न तणा आगार रा० ऊपें वड पुहवी तिलो ॥ ३ ॥ गढ मठ मंदिर घर हाट रा० सोहें डल गवाक्षनी । जाणें ते विजय नी पंत रा० धवलित छवि सित पक्षनी ॥ ४ ॥ चोहटें चोरासी वसह रा० व्यापारि विवहारिया । करें विणज नानाविध वस्तु रा० मुख मीठा निर्मल हिया ॥ ५ ॥ वलि चालें धरम नी आंण रा० कइ श्रावक व्रत साचवें । घे अटलक भावें दांन रा० त्रिकरण मुनि जद जाचवें ॥ ६ ॥ पुर स्त्री पिण सील सुजांण रा० पति कहणा नवि मेटती । जिन धर्म थकी बहु लीन रा० मुनि चरणांबुज भेटती ॥ ७ ॥ विचरें जिण नगर मझार रा० मोटा मुनिवर मालता । जिन राज प्ररुप्पे मार्ग रा० निर्दुषण पण चालता ॥ ८ ॥ सुखिया तिहां लोक सदीव रा० निज निज कारज सहु करें । तिण पुर भुपति सिर मोड रा० देखि दुर्जन दूरें हरें ॥ ९ ॥ नृप नाम मृगांक उदार रा० काछ वाच निकलंकिसो । प्रजा पालें पुत्र पणेह रां० केहने दुख कदि ना दियो ॥ १० ॥ तिण नृप घर नारस नूर रा० विजय वती पट रागिणी । नृपथी वहें प्रीत अतीव रा० कदि न हुवें अलखांमणी ॥ ११ ॥ अथ भील

भीलडी नवकार रा० मुनिवर दीध हतो तिणे । जपता ते
त्रिकरण जाप रा० तीन काल आरत घणे ॥ १२ ॥ करि
आयु पूरण के काल रा० भील नो जीव सुभ भाव थी ।
विजय पट राणी कुप रा० टपनो पुन्य प्रभाव थी ॥ १३ ॥
राणीयें गर्भ प्रभाव रा० सिह नो सुपनो देखियो । नृप सुण
हरख्यो मन मांह रा० पुत्र जन्म घर लेखियो ॥ १४ ॥
पालें नित रूडी रीत रा० गर्भ घणे कर जावतें । स्थिति
पाकें प्रसव्यो पुत्र रा० सुभ वेला दिन फावतें ॥ १५ ॥ हिय
हरख्यो मृगाङ्क राजान रा० सुतनी सुणी वधामणी । वज
डाव्या जसना निसान रा० कर उच्छव हुंसें घणी ॥ १६ ॥
करवावी रसवती सर्व रा० जीमाव्या पुरजन सहु । सुत
नाम राज सिंह कुमार रा० वतलाव्यो आदर वहु ॥ १७
पंच धाय मायें हुलरंत रा० वधतो कुमर दिनो दिने । जिम
वधतो सुर तरु छोड रा० अथवा विधु सित पक्ष वने ॥ १८
पूरव कृत पुन्य प्रभाव रा० एहवा कुसमे अवतरयो । एह
तीजी ढाल अनूप रा० कहे हुलास हर्षे भरयो ॥ १९ ॥
दोहा) अनुकम सीखी कुमर सहु कला वोहोत्तर सार । शस्त्र
अने वली शास्त्रनी गुप्त न रही लिगार ॥ १ ॥ रूप घणो गलि
यामणो चतुरता भण्डार । सुतनी देश विदेशमे पसरी किर्ति
उदार ॥ २ ॥ तिण नृपनो गुण आगलो मति सागर मंत्रीस

तेहनो पुत सुबुद्धियो सुमति नाम सुजगीस ॥ ३ ॥ तेहने सींह कुमार ने माहो माहि प्रीत । दिन प्रति दिन वधति अधिक ते विहुंने अवदीत ॥ ४ ॥ एक घड़िने आंतरें न रहें बेहुं मित्त । षट प्रकार प्रीतें कह्यो ते निवहें इक चित्त ॥ ५ प्रस्तावें हिव एकदा ते नृप पुत सु जांण । वन क्रीडायें संच रयो चढी चपलके कांण ॥ ६ ॥ मित सुमति साथे लियो वलि परिकर वहु सङ्ग । पुर दूरें वन खण्डमे फेरें तुरी सरङ्ग ७ ॥ थाकें हयने फेरवें खेद उतारण काज । इक सर तीरे आंब तल उतर्‍यो सारे साज ॥ ८ ॥ तिहां किहांथी इक तिण समे पंथी आव्यो एक । नृप कुमार ना सादरें प्रणम्या पाय विवेक ॥ ९ ॥ तांम कुमर ते पथिक ने तेडि आपण पास । पूछें आदर अति घणे ते सुणज्यो उल्लास ॥ १० ॥ (ढाल ४ पंथी डारे (एदेशी) पंथी डारे, कहो तुम आव्या एथ किहां थी मुझने आखियें पंथीडारे । पंथी डारे किहां जावो धरि चुंप कहियें प्रच्छन न राखियें पं० ॥ १ ॥ पं० फिर कोइ अचरिज वात दीठ हुवें जो को पुरें पं० । पं० ते सुण ब्रामन कोड इम कहे पंथी चातुरें पं० ॥ २ ॥ पं० कहिवा मांडी वात सुणिये राजन चित्त थी, कुमरजी रे । कु० नृप सुत मांडी कांन निसुणे साथ सुमित्त थी कु० ॥ ३ ॥ कु० बोल्यो वड इ राय, स्वामी पदम पुरी थकी कु० । कु० आव्यो छुं

महाराज आगल जावा उच्छकी कु० ॥ ४ ॥ कु० जातुं सेत्रुंजे जात भक्ति करेवा मुनि तणी कु० । कु० आगल आसुं हेव अचिरज अभिनव तुम भणी कु० ॥ ५ ॥ कु० तेण पदम पुर भूप पद्म सेखर नांमे भलो कु० । कु० पाले प्रज समुदाय छायो जग जस ऊजलो कु० ॥ ६ ॥ कु० तहने राणी नाम हंसी रुप समी रती कु० । कु० नृप मन लीनो तेह जिम रामे सीता सती कु० ॥ ७ ॥ कु० पहरे नव नव वेस अद्भुत भूषण सुर समां कु० । कु० मृगमद अंबर लेप दिन अधिकी उपमा कु० ॥ ८ ॥ कु० संसारिक सुख भोग विलसे नृप राणी सहे कु० । कु० नित नित नवली प्रीत कंद कटुकता नवि यहे कु० ९ ॥ कु० तास उदर नी जात पुत्री इक अति वालही कु० । कु० पुत्राहुत अपार प्यारी नृपने ते सही कु० ॥ १० ॥ कु० रत्न वती जस नाम गुण गण रयण करंडियो कु० । कु० रुपें कामनी नार रतिनो मान विहंडियो कु० ॥ ११ ॥ कु० मीट ण मेले तेण सुरियो पिण देखीह जी कु० । कु० विधनो थई प्रसन्न दीध कला जगनी सजी कु० ॥ १२ ॥ कु० अहि विधु भमर कुरङ्ग सुक पिक मरालनी कु० । कु० छवि जिण लीधी छीन अदभुत अक्षरनी घनी कु० ॥ १३ ॥ कु० सुन्दर स्त्रीनी जेह विद्या ते चोसट भणी कु० । कु० गुण जल दरप तलाव आय भर्या सारद घनी कु० ॥ १४ ॥ कु० अनुपम कान्ति

उदार जोवन जालम आवियो कु.। कु. कामी नरने रूप उपम करेवा धावियो कु. ॥ १५ ॥ कु. पितु नव जौवन पेख परणावी इम चिन्तवे कु.। कु. वर वरवा थई जोग वाल्ही वाला एहवे कु. ॥ १६ ॥ कु. नृप सुत रुडुं कोय क्या होए जोडे लहुं कु.। कु. तो परणावुं सद्य ए चिन्ता नृपनि बहु कु ॥ १७ ॥ कु. आगल मीठी बात अचरिज कारी छे घणी कु.। कु. चौथी ढाल हुल्लास ए कही जिम चरितें भणी क. ॥ १८ ॥ (दोहा) एक दिवस नृप कन्यका रत्नवती मन रङ्ग। राज सभायें आविने बेठी तात उछङ्ग ॥ १ ॥ तिण अवसर बहु परि करे नट सुन्दर आकार। भूपतिने मुजरो करी कर्यौ ढोल ढमकार ॥ २ ॥ कहे एता दिन नी हमे चिन्तित इच्छा सार। ते सफली थई आज प्रभु दीठे तुम दीदार ॥ ३ ॥ भोगव राज्य तुं पद्म नृप प्रजा सहित चिरकाल। सुखिया रहज्यो सर्वदा जिहां लग तारक माल ४ ॥ जो आज्ञा माहाराज मुख दिवरावें ससनुर। नाटक देखावुं अम्हे दालिद करिये दूर ॥ ५ ॥ (ढाल ५) नदि यमुनाके तीर उडे दो पंखिया (एदेशी) तव नरवर आदेश दियो नटवर भणी। नट नायक तव नाटक मांड्यो विध घणी। करिने ढोल ढमकार परज गत उचरी। साते स्वर आलाप कर हरषे भरी ॥ १ ॥ सारे गम पध निसा निध

पम गरे सारे सा, मूर्छना वलि इकवीस तान विकट वसा । आद अन्त मध्य ग्राम त्रिगुण पंचम खरा, तान तनन की चाल विश्राम गहीवरा ॥ २ ॥ मीठें इक दुइ ताल त्रिताल आदें घणी, कोकिल कंठ राह उथले रागणी । खेलें नट बहु खेल असेस रसे भरी, देखें नरपति लोक एक दृष्टें करी ॥ ३ गज हय हंसना रुप देखावे सुन्दरु, वक्र संभाषण लोक हसाइत हित धरु । वलि नटवर इक रुप अनूपम आणियो भील भीलडी जेह प्रतक्ष प्रमाणियो ॥ ४ ॥ फिर फिर बोलें वाण साक्षातें भीलडा, धनु सर लीधा हात स्याम गङ्ग डीलड़ा । नृप पुत्रि मति वन्त रुप ते देखतां, मूर्च्छा पांमी अचेत पड़ी पुढु वीजतां ॥ ५ ॥ स्युं थयुएहवि कांम राय चित चमकियो, करे सीतल उपचार भराणो नृप हियो । पांमी तांम सचेत पितानें आगलें, कर जोडी कहें एह नटेस आव्यो भलें ॥ ६ ॥ जाती समरण ज्ञान उपजीयो तात जी, भील भीलडी रुप देख पाछल भजी । हुं पिण पूरव जन्म भीलनी स्त्री हुंती, माहरो प्रियु पुलिन्द घणो प्रेमे मति ॥ ७ ॥ ते भवथी हुं आय तुमे घर ऊपनी, पूरव पुन्य पसाय सुतापण भूपनी । पिण माहरो भरतार पुलिन्द किहां थयो, तहनो खरें विचारें निश्चय पाडवो ॥ ८ ॥ तो हिव जे कहें पूरन सुकृत माहरो, मयगो मान सरूप जे

अधगुण वाहरो । तेहने परणिस प्रेम अवर नर ना वरूं, तस वरजी हूं और नरां चितना धरूं ॥ ९ ॥ धारयो पण इम रत्न वतियें पथी कहे, ततखिण सुण अवदात कुमर मूर्च्छा लहे । उपन्यो जाति समरण कुमर जहवो, कीधो पाछलुं सुकृत दीठो ते हवो ॥ १० ॥ हुंथो तस भरतार नृपति धूमांहरी नारी हुंती एह इण भव अवतरी । कुमर थयो अनुराग प्रतिज्ञा सांभली, पूरुं तेहनो नेम पूरव भव सांकली ॥ ११ परंणु राज कुमारी पूरव नारी खरी, हेव वटाऊ आगल फिर कहे विस्तरी । रत्नवतीनो ते नेम पुरो पुर प्रगटियो, बहुला राज कुमार परणवा चित दियो ॥ १२ ॥ करवा प्रतिज्ञा पूर्ण नृपति सुत आवता, रुपे मन्मथ तोल नयन मन भावता पूछे पूरव बात तेहने नृप सुता, कहो जी आपे पूरव जन्मे कुण हता ॥ १३ ॥ वलि पूरव भव सुकृत स्युं कीधा अछे, ते कहो साच सरूप वरिस तुमने पछे । बुझ्यें पूरव भव तास प्रत्युत्तर नावता, फिके मुख नृप पुत्र फिरि घर जावता १४ ॥ कुड पडे सहु आय परणवा नारस्या, तिण थी नृपधु चित्त पुरुष कूडा वस्या । कुडी पुरुष नी वात कुड केलावणी इम थई राज कुमार पुरूष नी द्वेषणी ॥ १५ ॥ नवि देखे दीदार पुरुष नो पिण कदे, पुरुष परणवा वायक मुख थी ना वदे । रहे स्त्रीने परवार रात दिन रङ्गमे, व्याप्यो जोबन

जोर कुमरिना अङ्गमे ॥ १६ ॥ चिंते राजन हेव उपाय स्युं किजिये, पूरण नथयो नेम कहां किण दिजिये । पांचमी ढाल रसाल हुलास हुलास थी, कुमरना सीझी सकारज पुन्य प्रकाश थी ॥ १७ ॥ (दोहा) कहे पथिक ते कन्यका स्त्री रत्न सिरदार । तिम तुम पुरुषा में सही पुरुष रत्न श्रीकार १ ॥ तेहनी तुमनी जोडए जुगती थाय अतिव । निश्चय तुम तिण परणस्यां निवसी खरी मुझ जीव ॥ २ ॥ कुमरे तांम पथिक प्रते कीधा तांम पसाय । पांचेइ निज अङ्गना वस्त्र घणा सुख दाय ॥ ३ ॥ पय प्रणमी पंथी चल्यो आगल आपण माग । पाछो कुमर सुसाथ थी घर आव्यो वड भाग ॥ ४ ॥ रत्नवती नृपनी सुता परणेवा मन खन्त । हिवनि सुणो श्रोता जनो स्युं थाये ओदन्त ॥ ५ ॥ (ढाल६ माता जीरे देहरे रे, हुंतो चुंण२ फुलडा चाढुं रे माताजी मोगरो रे (एदेशी) तिण वेला पुरना सहुरे, महाजन मिलि ने एकठरे । सुणि जन सांभलो रे ॥ ए आं० ॥ राय दुवारे आविया रे भेटे वाघ सुधा छन्द रे ॥ १ सु० ॥ पोल खडा रही पोलियो रे, मूक्यो नरपति ने पास रे । आज्ञा जो हुवे रावला रे, पय भेटो कदीनी दास रे ॥ २ सु० ॥ राय हुकम मांहे जइरे सादर प्रणमी ने पाय रे । ढोकी आगल भेटणो रे करस्युं मुजरुं सीस नमाय रे ॥ ३ सु० ॥

पूछे नृप सहु तम भणी रे वरते छे कुसल कल्याण रे । के कोइ दुख छे कहने रे कहो भाइ करुं प्रमाण रे ॥ ४ सु० ॥ निहु कर जोडी वीनवे रे महाजन नि सुणो महा राय रे । सुखिया छां सहु साथ थी रे प्रभु आप तणे सुपसाय रे ॥ ५ सु० ॥ धन कण कंचन थी अम्ह रे नित वधती वेल अतीव रे । नित नित नवला आंगणे रे उच्छव प्रकटे सुख नीव रे ६ सु० ॥ वस्तु वस्त्र रे वाधती रे धनना घर अखुट भंडार रे । डर भय धूक दूर गया रे आपण देखी दिन कार रे ॥ ७ सु० ॥ पिण ए चिन्ता मांहरे रे, प्रभु तुम राय सिंह कुमार रे । पुरनी गलियें संचरें रे, ए अजुगत वात अपार रे ॥ ८ सु० ॥ अम्ह स्त्री रुप कुमारने रे, लुबधि तज कारज सारे र । सेरि सेरियें फिरे रे, प्रभु राज कुमरने लारे रे ॥ ९ सु० ॥ आरड़ता निज बालने र, धवरावत मूंकी जाय रे । लाज सरम सुध ना रहे रे, इक निरखण कुमरनी चाय रे ॥ १० सु० ॥ कोण तजि सहु साथनी रे, उपकंठ मुह पसारी रे । आंणी ने उभी रहें रे, हट कीत न रहे गिमारी रे ॥ ११ सु० ॥ सूने घर तस्कर धसी रे, ले जायें अम्ह धन माल रे । वरजीते माने नही रे, थाकी गया पालत पाल रे ॥ १२ सु० ॥ ओर सहु सुख राजनी रे, महरे करिछे नर नाथ रे । एह चिन्ता छे आकरी रे,

हिव भेटवी आपण हाथ रे ॥ १३ सु० ॥ राखियें आपण पुत्रने रे, अत्यादर राज दुवारें रे । तो अमने सुख ऊपजें रे, हम एह अरज अवधारें रे ॥ १४ सु० ॥ सुण महाजन मुख वातडी रे, नृप अतिहि मीठी वांण रे । दीव दिलासा सादरें रे, नरपति अवसर नो जांण रे ॥ १५ सु० ॥ सहु तुम जन सुखिया वसो रे, हूं कुंमर भणी कर जेम रे । राखे स्युं दरबारमे रे, हिव नगर नहि आवेस रे ॥ १६ सु० तुम मांहरें हग सारसा रे, तुम रहियें अम्ह जस थाय रे । तुमने दुहव्यां मांहरें रे, क्षिण नाखें नाहि सराय रे ॥ १७ सु० ॥ अम्ह लायक को चाकरी रे, फिर होय तो मुझने भाखो रे । तुम अमतो एकी पणो रे, मत संकमने कछु राखो रे ॥ १८ सु० ॥ रायें तास विसर्जीया रे, सहु महाजन गेह सिधाव्या रे । हुलास चन्द हेंने कही इम छट्ठी ढाल सुहाव्या रे ॥ १९ सु० ॥ (दोहा) रायें अनुचर ने मुखें कहराव्या समंचार । वच्छ कला अभ्यासियें राज दुवार मझार ॥ १ ॥ नगरें कदे न जाइयो ए मांहरो हित साज । मांन सीख सुत सांहजी जिम अम तुम सुख भाज ॥ २ ॥ जिम नरपति फरमाविया तेह कुमरने जाय । प्रतिहारें सहु वीनव्या कर जोडी सिर नाय ॥ ३ ॥ रहियें राज दुवारमें तुम पितु इम कह वात । नगरीयें जानो नहो सो वातें इक

वात ॥ ४ ॥ निसुण पिताना ए वचन दुहवांणो मन मांह चिन्तवषा लागो कुमर कदियें कहणो नांह ॥ ५ ॥ उलंघ्यो में तातनो न करी खांमी लिगार । तोए वन्धन स्यां भणी एतो खरो विचार ॥ ६ ॥ तो हिव इहां रहवो मने युक्त न केते काल । तो परदेशें संचरुं करण परिक्षा भाल ॥ ७ ॥ पिण विण कारण विण गुनें पितु वरज्यो स्यामाट । विलषो मन मुख ऊतरयो मोटो करें उचाट ॥ ८ ॥ तिण अवसर आव्यो तिहां सुमति कुमरनो साज । देखी आंमण दूमणो पूछें आदर आज ॥ ९ ॥ अहो मित्त किण कारणे उदासीन छो आज । कृपा करी फ़रमावियें वात थइ महाराज ॥ १०

(ढाल ७) चढोतो हो रांधू हो मारुजी खीचडो जी, मारा राज अमांहि रहो एतो जि । दवेंरो भात गाढा मारूजी हो भीज रह्यो जी झड मांह । (एदेशी) पूछ्यें कुमरने हो भाईडा सुमतने जी, मोरा मित्र मित्रजी कहें सहु मांडीने वात गाढा मित्रजी हो सांभलोजी, मोरा मित्र मित्रजी अम्ह परदेश वहेस्युं, गाढा मित्तजी हो सङ्ग चलोजी मोरा मित्त ए आ.) मुख अनुचरने हो भा. आकरा जी । मो. मि० कहराव्या वच तात ॥ गा १ ॥ इहां रहों घरमे हो भा. केंदमें जी । मो. मि० । वाहर पग न दिवाय । गा. । इम एह वंधें हो भा. मांहरा जी । मो. मि. । किम करि दिवस

विहाय ॥ २ गा. ॥ अवर तो आज्ञा हो भा. तातनी जी मो. मि. । ए बंधमो न सुहाय । गा. । एहीज मोटुं हो भा. सोच छें जी । मो. मि. । विण अवगुण न रहाय ॥ ३ गा तो सह्न चालो हो भा. मांहरें जी । मो. मि. । जो तुम प्रीत अपार । गा. । चालस्यां विहुं हो भा. धरती जी । मो. मि. । आजनी रात मझार ॥ ४ गा. ॥ जो वानी मांहरें हो भा. खंत छें जी । मो. मि. । पदम पुरी सुख कार । गा. । परणावि तिहां छें हो भा. मांहरी जी । मो. मि. । पूरब भवनी जे नार ॥ ५ गा. ॥ आपण करस्यां हो भा. तेहनी जी । मो. मि. । पूर्ण प्रतिज्ञा जे सार । गा. । तो हिव आपण भा. चालवुं जी । मो. मि. । न करवी जेज लिगार ॥ ६ गा. ॥ इण उपरांतिं जो भा. नवि चलो जी । मो. मि. । तो रहो सुखिया जी एथ । गा. । अम्हने तो जावुं हो भा. निश्चयें जी । मो. मि. । छेंजे पदम पुर तेथ ७ गा. ॥ इम सुण बोल्यो हो भा. सुमत जी । मो. मि. । तुम अम एकण तार । गा. । न पडो कदियें हो भा. आंतरुं जी । मो. मि. । ए मुझ मनह विचार ॥ ८ गा. ॥ किम मूकायें हो भा. एकलो जी । मो. मि. । इण वखतें परदेश गा. । मांहरें तो रहज्यो हो भा. दिन दिने जी । मो. मि० तुमथी प्रीति विसेस ॥ ९ गा. ॥ तुं परदेशी हो भा. हुं परे

रे । मो. मि० । ए वडी वात विरीत । गा. । इम तो आखि हो भा. जगतमे जी । मो. मि० । स्वारार्थियां नर प्रीत ॥ १० गा. ॥ कायाने छाया हो भा. एकठी जी । मो. मि० । खिण नवि दूर रहंत । गा. । ए तुम विरहो हो भा. अधखिणे जी । मो. मि० । मुझ तन केम सहंत ॥ ११ गा. ॥ तुझ विण फीकी हो भा. सम्पदा जी । मो. मि० । तुम विन फीको जी नेह । गा. । तुम विण फीकी हो भा. गय तुरी जी । मो. मि० । तुम विण सूनी जी देह ॥ १२ गा. ॥ सुख दुख सीरी हो भा. ते खरा जी । मो. मि० । प्रीत ना पालण हार । गा. । काम पड्यां थी हो भा. पांतरें जी । मो. मि० । ते मितने मुख छार ॥ १३ गा. ॥ तुझ मुझ प्रीति हो भा. अविहडु जी । मो. मि० । राषज्यो नित करतार । गा. । चालिस साथे हो भा. तांहरें जी । मो. मि० न रहुं गेह मझार ॥ १४ गा. ॥ इम विहुं मित्रें हो भा. चित्त मे जी । मो. मि० । चालिवा थया उजमाल । गा. । हर्ष हुलासें हो भा. एकही जी । मो. मि० । सातम ढाल रसाल १५ गा. ॥ (दोहा) मित्र २ मिल तिहां थकी थई तुरङ्ग असवार । कर कृपांण संबल लिया धन मणि रत्न अपार १ ॥ निर्भय पणते विहुं जणां वाटें वहे सचूप । चाल्या पदम पुरी दिसें होतें शकुन अनूप ॥ २ ॥ नव २ गिरि

वन नव नवा नव २ देश विदेश । नव २ पुर घर नव नवा नव २ नदी निवेस ॥ ३ ॥ नव २ कौतुक निरखता पंथें पुलिया जाय । इक दिन संध्याने समें ते वेहुं दृढ़ भाय ॥ ४ ॥ अटवीयें दिन आथम्यें सूने इक जक्ष वास । रयणे विश्रामो ग्रह्यो सावचेत सु विलास ॥ ५ ॥ सूतो सुमत मन्त्री तनुज वैठो सींह कुमार । हिव इण ठांमे ग्यं हुवें विस्मय वात उदार ॥ ६ ॥ (ढाल ८) पनां मारु घर्डी एक कर होजें काय हो । (एदेशी) अथ रयणं नृप कुमर जी चतुर नर आरत शब्द अतीव हो । श्रवण सुण्यो इक पुरुष नो च० चिंतें एमत दीव हो ॥ १ ॥ वड वचन नो पूरो वल वुद्ध सनूरो नृप कुमर जी च० पुन्य सदा जयकार हो । (ए आ०) एह अरण्यं ए समे च० कुण पाडे ए रीव हो । रषे कोइ मानुप वस पड्यो च० होय जो वनचर जीव हो ॥ २ ॥ तो हिव जाइ हुं तिणे च० छोडावुं इम चिन्त हो । कर कृपाण ले चड वडि च० चाल्यो कुमर तुरन्त हो ३ ॥ सादने अनुसारें करि च० पहुच्यो तिहां ततकाल हो । दीठो तिहां इक कुमर जी च० राक्षस अति विकराल ॥ ४ व० ॥ इक नरने इक कापमे च० घाली पीडें भूर हो । ते नर पीडांणो थको च० आक्रंदें स्वर पूर हो ॥ ५ व० ॥ छोडावो कोइ मुझने च० ए दुष्ट थी नर धीर हो । तोम

कुमर राक्षस भणी च० पूछे अहो वर वीर हो ॥ ६ व० ॥ किस्युं अकारज इण करयुं च० तुमनो ते कहो भेव हो । छोड परो हिव एहने च० मांन निहोर सु देव हो ॥ ७ व० ॥ तांम राक्षस कहें कुमरने च० करने सझाइ केय हो । आराध्यो इण मुझ भणी हो च० वहु आमंत्रण देय हो ॥ ८ व० ॥ समरयां हुं परतिष थयुं भक्ष मांगु नर एक हो । इण नवि दीधो तो हिवें च० करुं एहनो भख सुविसेष हो ॥ ९ व० ॥ भूखें चूंटें काल जो च० करस्युं ए भष आज हो । ए कारण इण झलियो च० अवर नही को काज हो ॥ १० व० ॥ निसुण कुमर मन ऊपनी च० दया घणी तिण ठांम हो । कुमर कहें राक्षस भणी च० कर जोडी ने आंम हो ॥ ११ व० ॥ हुं आव्यो चाली इहां च० नयणे आगल आज हो । विण सायें ए मांहरी च० क्षत्री षटने लाज हो ॥ १२ व० ॥ तिण हुं तुझनो पूरखुं च० ए दुष्भर भर पेट हो । एक दिवस मरवो सही च० ए यम वारें नेट हो ॥ १३ व० ॥ तुझने मुज्झ सरीर नो च० द्युं आमिष भर पूर हो । एहने आप कृपा करी च० मूको काष थी दूर हो ॥ १४ व० ॥ इम कहि काढ कृपाण ने च० आपण अङ्ग कुमार हो । काटण लागो राक्षसें च० ए कडयुं हाथ तिवार हो ॥ १५ व० ॥ कहें धन धन तुझ तातने च० धन २ तांहरी मात हो । जेहने ठकूरें

ठपनो च० सूर वीर तुमे भ्रात हो ॥ १६ व० ॥ हुं तुठो तुझ साहसें च० मांग२ वर हेव हो । कुमर कहें वर ए चहूं च० ए नर मूको देव हो ॥ १७ व० ॥ छोड्यो तब तिण जीवतो च० कुमर वचन मन मांन हो । राक्षस कहें निफल नही च० दरस देव नो जांन हो ॥ १८ व० ॥ तिण तुमनें देवुं खरो च० ए चिन्तामन रत्न हो । मनन चिन्तित सहु पूरस्यें च० राख्यां थी बहु यत्न हो ॥ १९ व० ॥ कुमरें तब चिन्तामणी च० लीधो मन धर कोड़ हो । देव अदृश्य थयो तदा च० ते नरने तिहां छोड हो ॥ २० व० ॥ कुमर फिरि ने आवियो च० जिहां सूतो निज मित्त हो । हुलास चन्द ए आठमी च० ढाल कही धर चित्त हो ॥ २१ व० ॥ (दोहा फिर पाछो निज मित्रने आपें ताम जगाइ । जिम थई सारी चरी तस विधि सार्चा भाइ ॥ १ ॥ चिन्ता मन घढियो करें ते देषाड्यो तास । अंधकार दूरें हरें दिनकर जेम प्रकाश ॥ २ ॥ मनमे हरषि सुमत जी घणो प्रसंस्यो मित्र । ताहरें पुन्ये पामस्यां लीला चाहिस यत्र ॥ ३ ॥ पाछल पहुर तिहां थकी चाल्या मित्र तुरन्त । वाटें बहु विध वातडी करता जाय पुलन्त ॥ ४ ॥ कुमर कहें रे सहोदरु मुझ मन चिन्ता भूअ । पुरुष द्रपणी छें घणी रत्न धती नृप धूअ ॥ ५ ॥ तहथी मिलिस्यां किम जह किम कर

सिझि सकाज । ए मोहरें मन सोचना वडी मित्र सिर ताज ॥ ६ ॥ मन्त्री सुत तव धीरपें सगल तणा आधार। जेहथी सहु आस्या फलें समर मन्त्र नवकार ॥ ७ ॥ पंच परमेष्ठी नो जपें कुमर जाप दिन रात । जिम सरज्यो तिम थाइस्यें एम करन्ता जात ॥ ८ ॥ (ढाल ९) राजन मांरी निद्रा ले गया, मांने भव रवि छो हो देगया । (एदेशी) इक दिन विहुं जण मित्र जी कांई पहुता सरवर पाल । आवी वैठा आंवनी जी कांई छांहे थाय खुस्याल जी ॥ १ पुन्ये सहु सुख आवी मिलें पुन्ये दुरजन दूरें टलें जी, कोई कुमर नो पुन्य पवित्र ॥ (ए आ०) राय सिंह सूतो तिहां जी कांई निद्रित थयो पथ खेद । वन खण्ड मांह गयो तिसें जी कांई सुमति मित्र उमेद ॥ २ पु० ॥ सुन्दर फल खावा भणी जी कांई तोडें भूखने लाग । जातो दीठो तहवें जी कांई विद्याधर नभ मार्ग जी ॥ ३ पु० ॥ तिण विद्याधर जावतें जी कांई राज सिंहने तांम । सूतो देखि तरुतलें जी कांई मनमें चिंतें आंम जी ॥ ४ पु० ॥ स्युंए अभि नव कांम छें जी कांई अथवा सुरपति एह । रूप अनूपम एहनो जी कांई वर्णवतां नहि छेह जी ॥ ५ पु० ॥ चिन्त्यो पाछल सुन्दरी जी कांई आविस हिवणां अत्र । देखिस जोए पुरुषने जी कांई तो करस्यें सिर छत्र जी ॥ ६ पु० ॥

मांहरी गिणतन वां वणे जी कांई पहने आगल लेस । एह थी अनुरागी हूस्यं जी कांई सुज स्त्री चपल विसेस जी ॥ ७ पु० ॥ मांहरो घर भांजे रखो जी कांई तास विचार न काय । नारी नवि रंजें इसो जी कांई करवो प्रथम उपाय जी ॥ ८ पु० ॥ एम विचारी कुमर जी कांई ततखिण ते वन मांह । जडिका तोडी लावियो जी कांई ढील करी क्षिण नांह जी ॥ ९ पु० ॥ घसी कुमर ने भालमे जी कांई तिलक करयो तिणवार । पुरुष रूप फिटी करी कांई थाय अनूपम नार जी ॥ १० पु० ॥ आप विमांणे वेसने जी कांई आगल चाल्यो नेह । पाछल थी तिण मारगें जी कांई विद्याधरि आवेह जी ॥ ११ पु० ॥ रूपें अनूपम अप्सरा जी कांई अथवा रतिने तोल । सूती देखि चिन्तवें जी कांई अहो स्त्री रत्न अमोल जी ॥ १२ पु० ॥ जो पति मांहरो एह थी जी कांई आवें कांम विकार । मुझने छोडी एहने जी कांई करस्यें आपण नार जी ॥ १३ पु० ॥ उपकारिन एहनो करूं जी कांई इम चिन्तव सुविसेष । सूली घस भाले कियो जी कांई तिलक पुरुष नो वेस जी ॥ १४ पु० ॥ थयो कुमर विद्याधरी जी कांई गइ आगल उछरङ्ग । नवमी ढाल सुहामणी जी कांई आसी हुलास अभङ्ग जी ॥ १५ पु० ॥

दोहा) विद्याधर विद्याधरी विनें परस्पर खोट । पीयो

सुमतें तें सहु दीठी रह्यें तरु उट ॥ १ ॥ आव्यो कुमर कने तदा जाग्रत करी कहन्त । भाई खेचर खेचरी इण पर करया उदन्त ॥ २ ॥ मूली ए विहुं इहां थकी आंणी गुंण साक्षात । देख्यो छें निज नयण मे नाही पटंतर भ्रात ॥ ३ ते विहुं आगल चालिया केते दिने पुलंत । जेह दिसें चाल्या हुंता ते पुर पदम पहुंत ॥ ४ ॥ (ढाल १०) पर्क्षी गुण रसियो, जेह सुगुण नर नार तेहने मन वसियो (एदेशी) तेण पदम ढूकडा रे, सुरिजन, वन मांहिं एकन्त । पंथी गुण रसियो, रत्नवति नृप वाल तेहने चित वसियो । (ए आ० एक प्रसाद मनोहरू रे सु. जक्ष तणो सोहन्त ॥ १ पं० ॥ तिण प्रासाद पर्खें वने रे सु. ते विहुं मित आल्हाद । प० । रहें रयण निद्रा समे रे सु. सोर्षे तिण प्रासाद ॥ २ पं ॥ चिंतामण सुपसाय थी रे सु. पूरें मननी आस । प. । भोजन आंणै भावतो रे सु. नयर जईने वास ॥ ३ पं० ॥ दिन नीगमतें एकदा रे सु, रत्नवती नृप वाल । पं. । वहु स्त्री वृन्दे परवरी रे सू. आवी प्रसादे चाल ॥ ४ पं. ॥ उतरी तांम सुखास थी रे सू. रत्नवती बहु मांम । पं. । आवें जक्ष ने देहरें रे सु. सखियां साथे जांम ॥ पं. ५ ॥ पुरुष भणी परहा करें रे सू० अवसर पांम अनूप । पं०। इण विहुं जडी प्रभाव थी रे सु. कीधो नारी नो रूप ॥ ६ पं ॥ जिहां वैठी

प्रासादमे रे सु० रत्नवती तिण ठाम । पं० । ए पिण एकण कोणमे रे सु० उभी देव सिर नाम ॥ ७ पं० ॥ पाछी वलति नृप सुता रे सु० दीठी स्त्री ए दोय । पं० । अण बलावता आदरें रे सु० पास बुलावि सोय ॥ ८ पं० ॥ पूछे तेहने नृप सुता रे सु० अहो बाई तज गुझ । पं० । किण नयरी थी आविया रे सु० तुमे विहुं दाखो मुझ ॥ ९ पं० ॥ सुमति सखि बोली तिसें रे सु० सुणो नृप धूआ भेव । पं० । माहरी सखि हुं विहुं जण्यां रे सु० करवा दरसण देव ॥ १० पं० ॥ मणि मन्दिर पुर माहरो रे सु० त्यां थी आवी हेव । पं० । केतला दिन रहिने इहां रे सु० करस्युं देवनी सेव ॥ ११ पं० ॥ वलति रत्नवती कहें रे सु० तुझ मुख देखी नेण । पं० । हुलसें छे माहरो हियो रे सु० मीठा तुम विहुं वेण ॥ १२ पं० ॥ मुझने पावन कीजीयें रे सु० चालो अम्ह घर नेह । प० । रहियें अम्हने प्राहूणी रे सजनी भावें भक्ति करेह ॥ १३ पं० ॥ सुमति सखि हस बोलती रे सु० अम्ह उतरी इक ठाय । पं० । रहस्यां मिलस्यां [illegible] थकी रे सु० राज दुवारें आय ॥ १४ पं० [illegible] हेवणां आपणे रे सु० घर चालण अट[illegible] । अम्हनो नेह ए रे सु० साहि ज [illegible] पसो प्राय [illegible] उभी रही रे सु० रत्नव[illegible] तुम नवि निरगे

अब खिणे रे सु० मुझने नवि रहे चैन ॥ १६ पं० ॥ हिव हट घट दूरे तजी रे सू० चालो अमचें गेह । पं० । दसमी ढाल हुलास थी रे सू० वाध्यो अभिनव नेह ॥ १७ पं० ॥ (दोहा रत्नवतीयें विहुं भणी आंणी आपण धांम । राखें आदर अति घणे भक्त युक्त वड मांम ॥ १ ॥ कदे इक अत्यानन्द थी हास्य विनोद अनेक । प्रश्नोत्तर आपे कदे मनमे धरि विवेक ॥ २ ॥ धर्म कथा मांडिवली ज्ञान घणो ए सार । चौदे पूरव नो जपे सार मन्त्र नवकार ॥ ३ ॥ दया धरम दिल राखिये मति रूडीनो टेक । एम करे तीने जणी ज्ञान कथा सुविवेक ॥ ४ ॥ गाथा छन्द प्रहेलिका दूहा अनुपम जीह कहती हर्ष प्रमोद में सुखथी निगमे दीह ॥ ५ ॥ (ढाल ११ सोई सयांणो अवसर साधे (एदेशी) इक दिन पूछें रत्न-वतीने, इम कुमर स्त्री खेल मतीने । अहो सजनी तें कठिन पण धारयो, पूरव भवनो वर संभारयो ॥ १ ॥ भीलनो जीव अजे नवि प्रकट्यो, तांहरें तनतो जौवन ढलक्यो । वर पाखें सोभे नवि नारी, तिण तुं कर हुं कहुं जे विचारी २ ॥ नर वरवा स्वयंवर मंडाविसें, एह प्रतिज्ञा सहु छंडावियें देश नयर पुर राय मोलावो, सुन्दर देखि वरो चित चावो ३ ॥ इम सुण रत्नवती तव बोली एस्युं आखें सहियर भोली । इम नवरुं हुं कहने भरता, वरस्यु मुझ पण पूरण

करता ॥ ४ ॥ पूरव भवनी वात कहेसी, वलि सुकृत नो सार लहेसी । धर्म कियो जे पूरव भवमे, कहस्यें करचुं जिम ते जन तवमे ॥ ५ ॥ परणिस मनने कोड घणेरें, एमे राति न पडण द्युं फेरें । कुमर सखि हंस बोली एमो, तोह्नुं सुण पूरु तुझ नेमो ॥ ६ ॥ पूरव भवना वीतक जेही, विधियें थया हुं आखुं तेही । हरषी रत्नवती तव भापें, नकर जेज त्युं अंतर राखें ॥ ७ ॥ कुमर नारि कहें पुष्कर दीपे, सुण इक सिद्ध वट ग्राम समीपे । गिरि तिण पर तुम स्त्री भरतारो, रहना सील तणो जम वारो ॥ ८ ॥ इक दिन मुनि कीधो चोमासो तुम पिण विहुं जाता तिण पासो । सेया करतां चित्त सदाइ, तव मुनि तुम विहुने सुखदाइ ॥ ९ ॥ सीख्यो मंत्र नवकार उदारो, तुमनो सुधरयो ते जम द्वारो । इण भव सुभ पुन्ये नृप पुत्री, आय थइ वडभाग उछुती ॥ १० ए जन्मान्तर वात तुमारी, भाखी जिण वीती सारी । सांभल रत्नवती चित चमकी, प्रच्छन भेद कहें एस्यां थकी ११ ॥ रपे होवें पूरव भरतारो, पिण पाम्यो नारी जम वारो । कुमरी चन्द्रलेखा सखि सांमो, जोइ भाखें मुसकी आंमो ॥ १२ ॥ सजनि प्रतिज्ञा आज अमारी, पूरवि छें प्राहुणडी सारी । नर छें अथवा नार ए होइ, निश्चय न थयो मुझने कोइ ॥ १३ ॥ चन्द्रलेखा कहें ए मिय थारो,

छे निश्चैं किण कारण नारो । रूप कर्यो छे सखि अवधारो चौडें करिस इहां आपण सारो ॥ १४ ॥ ए छे पूरव भवनो प्यारो, एहमे न धर सन्देह लिगारो । उपनो हर्ष एकादश ढालें, हुलास चन्द भाखी सुविसालें ॥ १५ ॥ (दोहा) चन्द्रलेखा वलि रत्नवती कर जोडीने एम । घणे निहोरें वीनवें कुमर स्त्री प्रतें एम ॥ १ ॥ मया करीने हिव करो प्रकट मुलगो रूप । जेम सोच सहु नो मिटें प्रगटें पुन्य अनूप ॥ २ ॥ औषधिने जोगें विहुं थया पुरुषने वेस । अद्भुत रुप सुशोभतो चकित थइ सहु देश ॥ ३ ॥ दोडी दीध वधांमणी नरपत भणी उदार । बाई ना चिन्ता फल्या भली करी करतार ॥ ४ ॥ ततखिण ते विहुं आविने नृप ने कर्यो जुहार । नृप पिण देखी एहने हरषित थयो अपार ५ ॥ भूप भणे हिव दाखियें आपण दो कुल वंस । सुमति मित्र तव वीनवें सुणो धरा अवतंस ॥ ६ ॥ (ढाल १२) माली थारा बागमे दोय नारंगी पाकीरे लोय । अहो दोय ना० (एदेशी) मणि मन्दिर पुर सुन्दरु अलका सम रायो रे लोय, अहो अ० । नाम मृगाङ्क मनोहरु प्रजने सुखदायो हो लोय ॥ अहो प्र० १ ॥ तेहनो पुत्र ए छे सही राय सिंह कुमारो रे लोय । अहो रा० । एक वटाउ मुखं सुण्यो तुम सुता विचारो रे लोय ॥ अहो तु, २ ॥ जाति समरण उपने

घरि सगली दीठी रे लोय । अहो न० । परणेवा मांननी लागी अति मीठी रे लोय ॥ अहो मा० ३ ॥ अम्ह विहुं तिहां थी चालिने इहां आव्या सीधारे लोय । अहो इ० ॥ तुम पुत्रीना कुमर जी पण पूरण कीधा रे लोय ॥ अहो प० ४ ॥ भूपतिने मन ऊपनो आनन्द घणेरो हो लोय । अहो आ० । व्याव करे यानी हिवं छे किस्युं अवेरो रे लोय ॥ ५ अहो छे० ॥ राय महोच्छव मांडिया साजन हरषाव्या रे लोय । अहो सा० । तेडाव्या तिथि पतिका धारी मन भाव्या रे लोय ॥ अहो धा० ६ ॥ साहो शुद्ध सुधावियो अतिहि अति नेडो हो लोय । अहो अ० । कुंकुम पत्री देइने सहु साजन तेडो रे लोय ॥ अहो स० ७ ॥ पुरना वधावा सहु तणा नरपत घर आवे रे लोय । अहो न० । नाचे मिलने गोरडी कोकिल स्वर गावे रे लोय ॥ अहो को० ८ ॥ वर नोला जीमावता वींदणी वलि वरने रे लोय । अहो वीं । आरिम कारिम आपण विहुं ठामे करने रे लोय ॥ अहो वि० ९ ॥ लगन दिवस उच्छव करि परणाव्या कोडे रे लोय । अहो प० । सहु कहे दुक्षम उपजो ए सरिसें जोडें रे लोय अहो ए० १० ॥ धन कण कंचन दाय जो बहु राजा दीधो रे लोय । अहो न० । हय गज रथ पायक दइ जगमें जस कीधो रे लोय ॥ अहो ज० ११ ॥ दासी दास घणी घणी

मणि रत्ननी पेइ रे लोय । अहो म० । मांगी जमाई लाडलें दीधी वस्तु तेइ रे लोय ॥ अहो दी० १२ ॥ कुमणा न राखी राय जी देश मुलकें काई रे लोय । अहो दे० । अर्थी जन संतोषि आप भणै जस वाइ रे लोय ॥ अहो प० १३ ॥ सात भूम नव भूमिया गृह रहिवा आप्या रे लोय । अहो गृ० । देश नगर भन्डार ना स्वामी पण थाप्यो रे लोय ॥ अहो स्वा० १४ ॥ सुखें कुमर स्वसुरालयें गयुं काल न जांणे रे लोय । अहो ग० । रत्नवती साथे रही सुख अभिनव मांणे रे लोय ॥ अहो सु० १५ ॥ ध्यान धरें नवकार नो बेहुं मन भावें रे लोय । अहो बे० । चिंतें सुख आपे लह्या ए मन्त्र प्रभावें रे लोय ॥ अहो ए० १६ ॥ पञ्च पुरे सुखियो रहें ए बारमी ढालें रे लोय । अहो ए० । परण्यो रत्नवती भणी हुलास विसालें रे लोय ॥ अहो हु० १७ ॥ (दोहा) इक दिन सूतां कुमर ने चित्त चढी ए वात । हुं आव्यो ए जायगां छांडी मातने तात ॥ १ ॥ ए युगती न करी थया वृद्ध अवस्था देह । हुं कुपुत्रनी मति करि छाडी आव्यो तेह २ ॥ प्रजा कहण थी तात जी कहुं हितनो समाचार । मे तव क्रोध तणे वसें डलटुं करयुं प्रकार ॥ ३ ॥ मात पिता गुरु सीखडी कटुक वचन कहें जांण । पिण मान्या सुखें उपजें अमृत थी अधिकांण ॥ ४ ॥ आज दिने मावी तनी

भक्ति न थायें काय । तो हुं सुत स्यां कामनो थयुं पिण अथ गुं गिणाय ॥ ५ ॥ फिर इहां हुं सुसरा घरे रहस्युं केते काल । आखिर तो घर आपणे रहवां चित्त खुस्याल ॥ ६ ॥ घणा रहें नर सासरें तेहने अधम कहाय । स्वात समो आदर रहें महणो लोक दिखाय ॥ ७ ॥ घर घोडा तो आपणा कांम पड्यां दे कांम । दूजानो मुख ताकवो एतो वात विरांम ॥ ८ ॥ तो हिव सुसरा पास थी मांग प्रभाते सीख । पित ना पय भेटण पुरें, जावुं भरने वीख ॥ ९ ॥ लगी चट पटी चित्तमें फीको थयु मुख नूर । ललना रत्नवती तदा पूछे आदर भूर ॥ १० ॥ (ढाल १३) मारें पगल्याने पायल लाज्यो हो, रसिया मारु, ऊपर लाज्यो हो जेहड घाजणी जी । (एदेशी) अहो प्रीतम प्राणाधार हो, प्रीतम प्यारा किम इम बैठा हो वदन विछायने जी । थयो मांहसे गुनहो कोय हो प्री० किम इम मुझथी हो रह्या रिसायने जी ॥ १ पिण हुंतो मांहरी जांण हो प्री० न पडे तुमनी हो भूली चाकरी जी । हवें चूक पडी कोइ वात हो प्री० तो नवि कीजें हो कुनिजर आकरी जी ॥ २ ॥ जोवो साहमी मीट मिलाय हो प्री० रङ्ग रङ्गीला हो साहिब स्यां करें जी । तृण तोडवा कुहाडि घाव हो प्री० कटकी केहा हो कांडी करें जी ॥ ३ ॥ हुं अबलानी जात हो प्री० कहवायें छे

हो तुम पग मोजडी जी । तुम मुझ सिरनो मोड हो मी॰ नयण न कीजें हो राता रीसडी जी ॥ ४ ॥ मै अनुमाने आज हो मी॰ जाणुंजे एता हो दीहें रङ्ग भरया जी । जेहुं तो मन आप हो मी॰ इण दिण मनमे हो अन्तर बहु परया जी ॥ ५ ॥ नवि लहुं सुख खिण एक हो मी॰ इण पर स्वामी हो तुमने रुसणे जी । मुझ ने वतावो भेद हो मी॰ इम तो प्यारा हो माहरें नवि घणे जी ॥ ६ ॥ अथवा नृप माहरें तात हो मी॰ कहो की वातें हो दुवें जी दूहव्या जी । कछु देणे राखी षोड हो मी॰ का किण अनुचर हो कडवा वचलव्या जी ॥ ७ ॥ किण दासी दास निटोल हो मी॰ आंणन मोनी हो ते पिण दाखवो जी । हुंतो तुम पगनी खेह हो मी॰ मुझथी छिपाविवो किम प्रियु राखवो जी ॥ ८ ॥ तव वोल्या हसने कुमार हो, नार नगीनी, सुणस सलूणी हो एसी वातडी जी । तुमनी वसी हृदय मझार हो ना॰ दोषन हुंता हो किम कहुं जीभडी जी ॥ ९ ॥ तुं माहरें प्राण समान हो ना॰ कथन मे चालें हो सुकुली सुन्दरी जी । नवि देणे लेणे खोड हो ना॰ सुसरें राखी हो कुमया ठाकरी जी ॥ १० दासी दास अनुचर कुंण तोल हो ना॰ मुझ आज्ञाये हो बाहर पग दियें जी । पिण पितु सेवानी चित्त हो ना॰ घट.पट लागी हो मेह जरे जियें जी ॥ ११ ॥ एक वात थयो मोने

वृद्ध हो ना० आपो मरीसो हो केतो आणवो जी । नवि समती तेहनी सेव हो ना० फोकट सुत पण हो मांहरो जाणवो जी ॥ १२ ॥ सुण रत्नवती कहें एम हो पी० प्रीयु मन साची हो चिन्ता तुं मनें जी । हुं पिण चालुं साथ हो पी० पन दिन गिणस्युं हो सासू मणमनें जी ॥ १३ ॥ परभाते धीनवी आप हो पी० मुझ पितु पासें हो सीखज मांगवी जी हुं पिण मांहरी मात हो पी० सम झाविने हो सीख लस्युं इहीं जी ॥ १४ ॥ इम दम्पती कर आलोच हो पी० वेहुं सवेरें हो ऊठ्या सेज थी जी । ए तेरमी ढाल रसाल हो पी० हर्ष हुलासें हो पभणी हेज थी जी ॥ १५ ॥ (दोहा) पद्म सेखर नृपनें कुमर प्रातें करि जुहार । अरज करें कर जोडी नें हिव महाराजा सार ॥ १ ॥ सीख दिरावो मुझ भणी कृपा करी भूपाल । जावुं देशें अम पुरें मणि मन्दिरें विसाल ॥ २ ॥ घणे काल आपण घरें सुखियो रह्यो सदीव हिव मेखावियें मुझ भणी धरने प्रीति अतीव ॥ ३ ॥ वृद्ध अवस्था बापजी अछें अमारें गेह । तेहनी सेवा साझ स्युं भक्ति धरि बहु नेह ॥ ४ ॥ धीनवतो सुसरा भणी इम राज सिंह कुमार । पहवें नृपनें आगलें आय कहें प्रतिहार ॥ ५ ढाल १४) नान्ह नाहलो रे (एदेशी) स्वामी मणि मन्दिर थकी रे उभो मेक्षक आपके । राजन सांभलो रे (ए आ०)

मिलें कागद ते कने रे कुमर नामनो थायक ॥ रा० १ ॥ जो आज्ञा हुवें रावली रे आइ वाचुं तस मांहिक । रा० । राय कहें मुझ आगन्यां रे आवाचो उछाहिक ॥ रा० २ ॥ नृप हुकमे प्रेक्षक तदारे आव्यो नृप दरबारक । रा० । कर मुजरो हाथें दियो दियो रे कुमरने लेख उदारक ॥ रा० ३ खोह्यो कागद कुमरजी रे वांची नृपने दीधक । रा० । रायें पिण ते वांचने रे कहें सहु मांह प्रसीधक ॥ रा० ४ ॥ तात तुमारें तुम भणी रे लिखिया ए समाचारक । रा० । वच्छ इहां आंवा तणी रे न करो जेज लिगारक ॥ रा० ५ ॥ अम गरड़ा पण ऊपणी रे दिक्षा लेवा खन्तक । रा० । सो वाताना एकही रे इहां आवा उदन्तक ॥ रा० ६ ॥ जिम आंधाने लाकडी रे तिम मांहरें सुत एकक । रा० । मांहरो पत्र ए देखतां रे पुलजे पन्थ विवेकक ॥ रा० ७ ॥ उत्तावल अतिहि लिखि रे घणी करी मनु हारक । रा० । मुख वाणी संभला वियारे प्रेक्षक पिण समाचारक ॥ रा० ८ ॥ खबर नहीं थी मुझ प्रतें रे एतादिन भी पूतक । रा० । जब मुख रहतो सासरें रे निसुणी मल्यो दूतक ॥ रा० ९ ॥ हिव अध खिण रहजे मती अहो पुत्र सिरदारक । रा० । ए पत्रे लिखिया अछे रे व्यति कर वहु वित्तारक ॥ रा० १० ॥ वांची पदम पुरी धणी रे चिंते जमाइ गेहक । रा० । मोकलवो आपण

धरें रे हठ तज घणें सनेहक ॥ रा० ११ ॥ नृप जइने अंत उरें रे राणी ने आक्षाक त । रा० । राय सिंह जामात ने रे तेडो मह्यो तातक ॥ रा० १२ ॥ हिव कुमरी मुकला विये रे वस्त्राभरण अमामक । रा० । दे धन कन्चन दाय जो रे दील तणो नवि कामक ॥ रा० १३ ॥ ए परदेशी माहुणा रे मोह करें वो कुडक । रा० । जावें नेह तजी नयो रे पंखीनी पर ऊडक ॥ रा० १४ ॥ पुत्री रत्नवती घणी रे वाली अन्न खिण मातक । रा० । विरह खमंता दोहिलो रे प्रिण पर तणी विसातक ॥ रा० १५ ॥ रायें राणी चिंतवी रे दीध घणुं धन सारक । रा० । दासी दासना जोड्ला रे दीध घणी मनु हारक ॥ रा० १६ ॥ हय गज रथ साथे घणा रे पायक बड्डा झुझारक । रा० । ढाल कही ए चौदमी रे आंण हुलास अपारक ॥ रा० १७ ॥ (दोहा) कीधो सासूयें तदा कुंकुम तिलक निलाड । गद गद स्वर कुमरने सासू हुसर सलाड ॥ १ ॥ अहो जमाई माहुणा तुम्ह सरिपा अम केर । घर आविस गिणस्युं जदा धन्य दिवस ते फेर ॥ २ ॥ लाडक वाही अम सुता चाली तुमचें साथ । पिण एहनी छे कुमर जी लाज तुमारे हाथ ॥ ३ ॥ वहिला मिलज्यो बालहा अम्ह उपर कर म्हाय । तुम विण अमने वरस दिन रैण छमासी जाय ॥ ४ ॥ पत्र लिखिने पाठयो विसर मजाज्यो आप ।

अमतो जीमें रावरो जपस्यां निस दिन जाप ॥ ५ ॥ काम काज सम आग जे होय ते संका छोड । लिखि ज्यो वस्तु मंगाव ज्यो जेहनो होवें कोड ॥ ६ ॥ इवि पुत्रीने मा तजी उछंगें वैसार । इम सिक्षा मण उच्चरे नयणे आसू धार ॥ ७

ढाल १५) सात सह्यारे झुलरें पणि हारी हे पांणीढे गइरे तलाव (एदेशी) पुत्री प्रमुदित मन करि सुकुमारी हे जप जे जिनवर जाप । देव गुरु धम उपरें सु० फंदयन धरजे जी पाप ॥ १ ॥ प्रीतम आज्ञा चाल जे सु० वचनन लोप लिगार । सासू सुसरा नी सदा सु० कर जे भक्ति अपार ॥ २ ॥ लडजे विढंज नवि कदा सु० के हथी कटुकन बोल । बोलिस मां सुण तेह थी सु० थाय मनुष्य नो मोल ॥ ३ ॥ दांन सुपातर नुं दिये सु० शुद्ध साधु प्रति लाभ । हाथ दलालि राख जे सु० तेह थी वधस्यें जी आभ ॥ ४ ॥ सहु थी सुण मीठा बोलत्रें सु० पाप थी रहजे जी भीत । चाल जे कुलवट आपणे सु० निज घर जेहवी जी नीत ॥ ५ ॥ घणु घणु हुं तुझ भणी सु० सी कहुं वात अपर्व । तुं पिण चतुर अछे घणी सु० लहती अवसंर सर्व ॥ ६ ॥ सजनी सहु आवी मिली सु० वाला पणनी प्रीत । रत्नवती तव साचवें सु० रुदन करि अगरीत ॥ ७ ॥ संमेडण साथे थयुं सु० नगर तणो सहु साथ । पुर बाहिर पहुचाविने सु० घर

आव्यो नर नाथ ॥ ८ ॥ कुमर तिहां थी चालियो सु० करतो अभङ्ग प्रयाण । थोडे केता नृप पुरे सु० वरतातो निज आण ॥ ९ ॥ केते दिवसें आवियो सु० आपण नयर नजीक । प्रेषक मेल्यो पाडवी सु० तातने आवानो ठीक ॥ १० ॥ राय मृगाङ्क सांभली (सुविचारी रे) पुत्र यथाइ नो सार अङ्ग उपङ्ग सहु उलस्या सु० जिम कदंब जल धार ॥ ११ चौरङ्गी सेना सझी सु० आव्यो साहमो भूप । कुमर पिताने आयता सु० पाय पड्यो धर चुंप ॥ १२ ॥ हरष आलिङ्गने मिल्यो सु० पुत पिता ससनेह । आज भलो दिन ऊगियो सु० मोती वुठा मेह ॥ १३ ॥ महोच्छव अतिहि आविया सु० राज दुवार मझार । ढाल पनरमी एकहीं सु० हुलास चन्द उदार ॥ १४ ॥ (दोहा) राज लोक हरषित हुआ कुमर तणो मुख देष । राये सुतने सूंपियो राज काज सुविशेष ॥ १ ॥ आपण चितमें चिंतव्यो सुतने दीजें राज । हुं गुरुरों संजम ग्रही सारुं आतम काज ॥ २ ॥ पुन्य वन्त नो चिंतव्यो कदेन निरफल थाय । ततखिण तोम वधामणी वन पालक ये आय ॥ ३ ॥ स्वामी आराम वन मझें संयुत बहु मुनि राय । श्री गुण सागर केवली समव सर्या छे आय ॥ ४ ॥ नरपत तोम वधामणी दीधी तास अपार । बहु परिवारें परवर्यो वंदण गुरु दीदार ॥ ५ ॥ पोष भजी

गम साचवी तीन प्रदक्षिण देय । वार वार कर वन्दना बैठी निज ठामेय ॥ ६ ॥ (ढाल १६) भमरथे जागो जी मुखडे पर धर्यो रुमाल (एदेशी) श्री गुरू इण पर उपदिसें जी कांई भविजन नें हित हेत । श्री जिन धर्म समाचरो जी कांई भव सागर नो सेत ॥ १ ॥ चतुर थे चेतो जी इम सद्गुरु भाषें मर्म । मुगत सुख हेतो जी तुम धरो अरिहन्त धर्म ए आ०) द्वि विध प्रकारें दाखियो जी कांई आगारिक अणगार । द्वादश व्रत आगार ना जी कांई भाष्या सूत्र मझार २ च. मु. ॥ देश पणे गुण चास थी जी कांई भागें कह्या व्रत वार । सर्व थकी मुनि राजना जी कांई पंच महाव्रत सार ॥ ३ च. मु. ॥ पहलें व्रत श्रावक तजें जी कांई देश थी मोटो जीव । हणवुं नही आकोटि नेजी कांई बीजें असत्य सदीव ॥ ४ च. मु. ॥ मोटो न वदें तीजें जी कांई अदत्त कुसील नो त्याग । चौथें पंचम धन तणो जी कांई नियम छठें दिसि भाग ॥ ५ च. मु. ॥ सातम मित छावी सनो जी कांई आठम अनरथ दन्ड । नवमें सामायिक करें जी कांई काटवा करम प्रचन्ड ॥ ६ च. मु. ॥ देशव गासिय दश व्रतें जी कांई एकादश व्रत मांहि । पोसह श्रावक जी करें जी कांई क्षोभ न आणे क्याहि ॥ ७ च. मु. ॥ सुद्ध साधु नें गवेषतो जी कांई देतो अटल क दांन । चौदें प्रकार नो

भाव थी जी कांइ ए द्वादश व्रत मांन ॥ ८ च. मु० ॥ कर्मादान तजें वलि जी कांइ पांच संलपण प्रेम । चौदे नेम चितारता जी कांइ समकित सेंठी नेम ॥ ९ च. मु० ॥ मुनिना सर्व थकी कहुं जी कांइ त्याग मनो वच्च काय । त्रिकरण त्रिण योगें करि जी कांइ निसुणा भवि समुदाय ॥ १० च. मु० पहले त्रिकरण थी तजें जी कांइ सहु प्राणि नो घात । दूजें सर्व थी नां वदें जी कांइ मृषा झुठ अवदात ॥ ११ च. मु० तीजें अदत्ता दान नो जी कांइ नियम त्री जाणें तह । चौथें मैथुन वर्जता जी कांइ सर्व थकी घर छेह ॥ १२ च.मु० ॥ पांचम त्रिविध प्रकार नै कांइ परिग्रह नो पच्च खांण । ए पांचे व्रत साधु ना जी कांइ पांच मेरु सम जाण ॥ १३ च. मु० ॥ ए विहुं माहें ज जना जी कांइ धारें एको धर्म । पामें शिव सुख सास्वता जी कांइ दूरा करिने कर्म ॥ १४ च. मु० पण आदरवें करी जी कांइ फल थायें मन कन्त । उत्कृष्टो पनरें भवें जी कांइ पामें भवनो अन्त ॥ १५ च. मु० ॥ श्रावक व्रत पाल्यां थकी जी कांइ थायें मोटो लाभ । थोडुं सेश भवो दधि जी कांइ रहें जिम जल अग डाभ ॥ १६ च. मु० ॥ भिन २ भाखें केवली जी कांइ भवि ने इम उप-देश । राजादिक सहु सांभलें जी कांइ धरिने मन सु विसेष १७ च. मु० ॥ ढाल सोलमी ए कहि जी कांइ ज्ञानसुर चन्द

सुख कार । गुरुनी वाणी सांभलें जी कांइ ते जग धन नर नार ॥ १८ च. मु० ॥ (दोहा) फिर गुरु कहें रे भविजना निसुणो सुझ सुख वैण । मोह नीद थी जागवो खोलो अंतर नैण ॥ १ ॥ मनुष्य जमारें आविया पांचू इन्द्री पूर्ण । काय निरोगी पांमिया एह अवस्था तूर्ण ॥ २ ॥ घर सम्पद पांमी घणी एता मिल्या संजोग । पिण ए गुरुने नवि मिल्या साचा गुरु जन लोग ॥ ३ ॥ कु गुरु कु देव ने वस पड्या मनुष्य जमारो फोक । नीगमता ते वापडा दुख पांमे परलोक ॥ ४ ॥ मोह मिथ्यातनी नींदमें सूता नर अविवेक । गुरु ना वचन न सरदहें तजें न आपण टेक ॥ ५ ॥ साहमा मूरख वापडा उलटी बोलें वांण । जैन धरम में चालिया गोला घणा पिछाण ॥ ६ ॥ जैन अैन जाणे नही खेथें पड्या कहाय । मिथ्या मत वातें करि घें ज्ञान दीप बुझाय ॥ ७ दीप बुझावणी या जगें हिवणा लोक हजार । साते भांते आखियें गुरु कहें सुणो विचार ॥ ८ ॥ (ढाल १७.) आभल रे सीता आयो (एदेशी) इक नर कहें ससार चालें छे जिण प चालो रे । थांहरो कहण कदे नवि मांना मांने र माला रे ॥ १ ॥ इम सत गुरु भविने मझ तांहरो कांय भरोसो जैन नो विषमे फरे तांहरो धर्म निवाहो अम आगल नें गवे

मत दाखो रे ॥ २ इ० ॥ ए पहली सिद्धांतें आखी, दीप वुझावण ज्ञानो रे । बीजे जे नर बाल अज्ञानी, बोलें बांकी वांनी रे ॥ ३ इ० ॥ थे जिन धर्म करो छो तिण थी, मारे आगल जास्यो रे । अम्ह पाछेंही पडिया रहस्यां, पिण रखे तिहां सीदास्यो रे ॥ ४ इ० ॥ तीजें मूरख जिन धरमी नें वचन कहें मुख आयो रे । थां धरम्यांने पालखी आविस, अम्ह तस पकडिस पायो रे ॥ ५ इ० ॥ चोथी ज्ञांन वुझामण करता, कहो तुम धरमी एता रे । स्वर्ग गया पिण कदेइन दीठा, तुमने कागल देता रे ॥ ६ इ० ॥ नवि कोइ जगमे दीसें आतो, नवि कोइ दीसें जातो रे । स्वर्ग मर्त्य पाताल तणी सहु, गोल गाल सी वातो रे ॥ ७ इ० ॥ पांचमी दीप वुझावण कहता, इम इक नर अज्ञानी रे । गोद तणा पट कीने मूरख, पटनी आसा ठांनी रे ॥ ८ इ० ॥ ओ भव धन सम्पद थी मीठो, तो आगलो भव किण दीठो रे । कुंण जांणे परलोक अछेंवा, नही छें निश्चय नीठो रे ॥ ९ इ० ॥ छट्ठी वुझावणि ज्ञान दिवानी, सूधं तेहन जोवे रे । कर्मानो अपचो नवि जांणे, कहें राम करें जो होवे रे ॥ १० इ० ॥ हर इच्छा इस्वर की माया, अपरंपार अलेखा रे । यवन कहें जो खुदा करेगा, क्या बंदेका लेखा रे ॥ ११ इ० ॥ पिण अज्ञानी एम न जांणे, कोण राम रहमाना रे । एकण कर्म

तणे वस पडिया, सुख दुख भोगे नाना रे ॥ १२ इ० ॥
सातमी दीप बुझामण एहवी, कहता अमतो अमारें रे ।
सास्त्र तणे परमाणे चालां, न पडां केहने लारें रे ॥ १३ इ०
मांहरा गुरु फरमाव्यो करस्यां, मांनस्यां देव भवांनी रे ।
भैंरू भरडा चौसट जोगण, पाय पडे मन आंनी रे ॥ १४ इ०
गावें वजावें नाचें कूदें, नर नारी हुवें भेला रे । हूं हूं हूं हुंका
रव करता, कहे मै देव ना चेला रे ॥ १५ इ० ॥ सिरणी
आदिक सखरी चाढें, दोस मिटावण माटें रे । पिण करमां
नो दोस न जांणे, पर वस पड्या उचाटें रे ॥ १६ इ० ॥ इण
पर करतां दीप बुझामण, मिनष जन्म नो दायो रे । पायो
ते पिण अहल्यो खोयो, राची विषय कषायो रे ॥ १७ इ०
सांते भांते दीप बुझामण, कर ज्ञान दीप बुझावें रे । पाछें
फिर दीप कथा येवो, दुहिलो अवसर नावें रे ॥ १८ इ० ॥
धन तन जौवन आयु चंचल, वीजल को चमकारो रे ।
वीणसतां नवि वार न लागें, धर्म हियें विच धारो रे ॥ १९
इ० ॥ वार वार इम मीठे वचने, भविने आगल भाखें रे ।
सतरमी ढाल हुलास वखाणी, सास्त्र तणी कर साखें रे ॥
२० इ० ॥ (दोहा) श्रवण सुणि गुरुना वचन श्री मृगांक
राजांन । राज सिंह ने राज पट थाप्यो आपण थान ॥ १
कहुं नि सुणो परजादि सहु आग सीमथी एह । मांहरें तोलें

मानज्यो नित प्रति धरज्यो नेह ॥ २ ॥ आपण बहु आडम्बरें श्री गुरु पासे आय । पंच महाव्रत आदरया सिंह पण मन लाय ॥ ३ ॥ राज सिंह नृप गुरु कने श्रावक ना व्रत बार । समकित सेंठी और पिण सोगन सबद अपार ॥ ४ आदरिया सुभ चित्त थी गुरु अन्यत्र विहार । कांधो पय पितुना नमी आव्यो गृह परिवार ॥ ५ ॥ चारित्र पाली चंप थी त्रिकरण राखी ठाय । अण सण अन्ते देव पद लह्यो मृगाङ्क ऋषि पाय ॥ ६ ॥ धन्य जेह जन जगतमें मोटी रिद्धि मंडाण । त्रिण जिम तज संयम ग्रहें पालें जिनवर आंण ॥ ७ ॥ (ढाल १८) कायारी वाडी कारमी (पदेशी) राज सिंह नरपत हिवें, मन वच थिर काय । श्री नवकार तणो खरो जपें जाप सदाय ॥ १ रा० ॥ तास प्रसाद न उपजें दुख कोय कदीव । निकंटक पण पालतो प्रजा लोक सदीव ॥ २ रा० ॥ बारें व्रत श्रावक तणा पालें निरती चार । सामाइक नित आदरें नर भव नो सार ॥ ३ रा० ॥ पासें पोखें धर्मने तप विविध प्रकार । दांन सुपात्र देवतो लयें लाहो अपार ॥ ४ रा० ॥ निश्चय धर्म जिनंदने मन राखें ठीक । और धर्मना फन्दमें नवि पडें अलीक ॥ ५ रा० ॥ देव चलावें आयने जो धर्म थी राय । तो पिण लेस नवि चलें मन वचने काय ॥ ६ रा० ॥ एक दिवस नृप डीलमें उपनो

आवी रोग । विषम देख नृप चिन्तव्यो करुं धर्म उद्योग ७ रा० ॥ ए तन काचा कुंभसो विनसत नहि वैर । सडण पडण विध्वंसना एहनो धर्म न फेर ॥ ८ रा० ॥ चिन्तव ततखिण निज पदें निज पुत्रने पाट । प्रताप सिंहने थापियो टाल्युं सयल उचाट ॥ ९ रा० ॥ आपण पें आलोयणां करि च्यार आहार । पचख्या लाख चौरासी थी खमावें वारंवार १० रा० ॥ भावें सूधी भावना भाव चारित्र लीन । सर्व थकी सावज तज्या वैरागें पीन ॥ ११ रा० ॥ ध्यांन धरत नवकार नो भावें अत्यंत । पांचम देव लोकें गया आयुने अंत ॥ १२ रा० ॥ दश सागरने आउखें सुरना सुख भोग । विलसें विविध प्रकारना नवकार संजोग ॥ १३ रा० ॥ रत्नवती नवकार नो जप जाप तिनेह । देव लोक पद देवने उपनी सुख अछेह ॥ १४ रा० ॥ तिहां थी ए वेहुं जणां नर पदवी पाय । सूधू संयम पालता केवल ज्ञान उपाय ॥ १५ रा० ॥ क्षय करि आवुं कर्मने शिव पदवी सार । पामीस ढाल अठारमी कही हुलास उदार ॥ १६ रा० ॥ (दोहा) भविका ए जिन धर्मना फल छें अतिहि मिष्ट । आस्वादत सुख ऊपजें अन्ते सुभ गत इष्ट ॥ १ ॥ इण भव परभव सुख लहे राज सिंह नृप जेम । पंच परमेष्टी नो जिके जाप जपे धरि प्रेम ॥ २ ॥ एह थी आपद नीगमे सम्पद थायें

सार । अन्ते एह प्रसाद थी शिवनी पदवी सार ॥ ३ ॥ ढाल १९) जाया तो विन घडी रे छमास (एदेशी) गिरवा गुण नो कारनां जी आख्या ग्रन्थ मझार । श्री जिन निज मुख उचरयो जी चौदे पूरव सार रे । भविका) जप नवकार सरङ्ग, आंणी अधिक उमङ्ग रे ॥ भ. १ ज. ॥ मुक्ति मिलें ए ध्यावतां जी सुर पदवी कुंण लेख । कांम धेनु चिन्तामणी जी ए सुर तरु विसेख रे ॥ भ. २ ज. ॥ ध्यान धरें नर तेहनों जी पसरें सुकृत वेल । रिद्धि सिद्धि घर नव नवी जी थायें घर नित केल रे ॥ भ. ३ ज. ॥ गुण अनन्त ए मन्त्रना जी गुण ईक जीभ न होय । सुर गुरु सहस जीभें करी जी स्तवें की पावें सोय रे ॥ भ. ४ ज. ॥ एहथी सुख सासन लह्या जी बहुलें जीव जगत्त । जपो २ रसना जपो जी श्री नवकार एकत्त रे ॥ भ. ५ ज. ॥ नवकारां परि मे रच्यां जी ए राय सिंह चरित्त । भविका गुणी गुण गाइने जी कीजें जन्म पवित्त रे ॥ भ. ६ ज. ॥ सम्पूरण एमें करयो जी मुनि चौ खग भू वर्ष । माघ शुक्ल एकादशी जी सुर गुरु वारें हर्ष रे ॥ भ. ७ ज. ॥ नागोरी लुंके गणे जी लक्ष्मी चन्द्र सुरिन्द । तस पद पङ्कज मधु करा जी जोहार मल्ल मुनिन्द रे ॥ भ. ८ ज. ॥ तास सीस सुद्धातमा जी श्री शिव दास सवाय । तास सीस शिव चन्दनो जी गुण कर जग जग

वाय रे ॥ भ. ९ ज. ॥ तस पद किङ्कर एहमे जी हुलास चन्द हित लाय । उगणीसें ढालें करी जी पूरण गुणि गुण गाय रे ॥ भ. १० ज. ॥ उछो अधिको एहमे जी जो कहिवां णु को पाय । तेहनो सहु साखें मुने जी मिच्छामी दुकडं थाय रे ॥ भ. ११ ज. ॥ भणज्यो गुणज्यो वांचज्यो जी भविजन थई उजमाल । श्री जिन धर्म आराधज्यो जी थायें मङ्गल माल रे ॥ भ. १२ ज. ॥ * ॥ इति सम्पूर्ण ॥ * ॥

॥ * ॥ अथ गोतम रास लिख्यते ॥ * ॥

वीर जिनेसर चरण कमल कमलाकय वासो । पणमवि पभनिसु स्वामि साल गोयम गुरु रासो । मन तनु वयणे कन्त करवि नि सुणहु भो भविया । जिम निवसै तुम देह गेह गुण गण गह गहिया ॥ १ ॥ जंबु दीव सिर भरह खित्त खोणी तल मन्डण । मगह देश सेणिय नरेस रिउ दल बल खन्डण । धनवर गुव्वर गाम नाम जिहां गुण गण सज्जा । विप्प वसै वसु भुइ तत्थ तसु पुहवी भज्जा ॥ २ ॥ तानपुत्त सिरि इन्द भूय भूवलय पसिद्धो । चवदह विज्जा विविह रुव नारी रस लुद्धो । विनय विवेक विचार सार गुण गणह मनोहर । सात हात सुप्रमाण देह रुवहि रंभावर ॥ ३ ॥ नयण वयण कर चरण जनवि पङ्कज्जल पाडिय । तेजहि

तारा चन्द सूरि आकाश भमाडिय । रुवहि मयण अनङ्ग करावि मेल्यो निर धाडिय । धीरम मेरु गम्भीर सिंधु चङ्गम चय चाडिय ॥ ४ ॥ पखवि निरुवम रुव जास गण जंपै किंचिय । एकाकी किल भित्त इत्थ गुण मेल्या संचिय । अहवा निच्चय पुव्व जन्म जिनवर इण अंचिय । रम्भा पउमा गवरि गङ्ग रतिहा विधि वंचिय ॥ ५ ॥ नय बुध नय गुरु कविन कोय जसु आगल रहियो । पंचसयां गुण पात छात्र हींडें पर वरियो । करय निरन्तर यज्ञ करम मिथ्या मति मोहिय । अणचल होस्ये चरम नाण दंसणह विसोहिय ॥ ६ ॥ (वस्तु) जंबु दीव जंबु दीव भरह वासंमि, खोणी तल मन्डण । मगह देश सेणिय नरेसर, वर गुव्वर गाम तिहां । विप्प वसे वसभूइ, सुन्दर तसु पुहवि भज्जा । सयल गुण गण रुव निहांण, ताण पुत्त विज्जा निलो । गोयम अतिहि सुजाण ॥ ७ ॥ (भास) चरम जिनेसर केवल नांणी, चोविह संघ पइट्ठा जाणी । पावा पुर स्वामी संपत्तो, चोविह देव निकायहिं जुत्तो ॥ ८ देवहि समव सरण तिहां कीजे, जिन दीठे मिथ्या मत छीजे त्रिभुवन गुरु सिंहासन बैठा, ततखिण मोह दिगन्त पइट्ठा ९ ॥ क्रोध मान माया मद पूरा, जाये नाठा जिम दिन चोरा । देव दुन्दुभी आगासे वाजी, धरम नरेसर आव्यो

गाजी ॥ १० ॥ कुशम बृष्टि विरचै तिहां देवा, चौसठ इंद्रज मांगे सेवा । चामर छत्र सिरोपरि सोहै, रुवहि जिनवर जग सहु मोहै ॥ ११ ॥ उपसम रस भर वर वर सन्ता, जो जन वानि वखाण करन्ता । जांणवि वर्द्धमान जिन पाया, सुर नर किन्नर आवइ राया ॥ १२ ॥ कन्त ससोहिय जल हल कन्ता, गयण विमानहि रण रण कन्ता । पेखवि इन्द भूइ मन चिन्ते, सुर आवे अम जज्ञ हुवंते ॥ १३ ॥ तीर तरंडक जिमते वहिता, समव सरण पुहता गह गहिता तो अभिमाने गोयम जंपै, इण अवसर कोपै तणु कंपै । १४ ॥ मूढा लोक अजाण्युं बोलै, सुर जानंता इम कांइ डोलै । मो आगल कोइ जान भणीजै, मेरु अवर किम ओपम दीजै ॥ १५ ॥ (वस्तु) वीर जिनवर वीर जिनवर नांण, संपन्न पावा पुर सुर महिय । पत्तनाह संसार तारण, तिहिं देवइ निम्महिय ॥ समव सरण बहु सुक्ख कारण, जिनवर जग उज्जोय करे । तेजहि कर दिनकार, सिंहासण स्वामी ठव्यो हुउ तो जय जयकार ॥ १६ ॥ (भास) तो चढियो घण मान गजै, इन्द भूइ भूख देवतो । हुंकारो कर संचरिय, कवणसु जिनवर देवतो ॥ जोजन भुमि समो सरण, पेखवि प्रथमा रंभतो । दह दिस देखै विबुध वधू, आवंती सुर रंभतो ॥ १७ ॥ मणि मय तोरण दन्ड ध्वज,

कोसीसे नव घाटतो । वयर विवर्जित जन्तुगण, प्राती हारिज आठतो ॥ सुर नर किन्नर असुर वर, इन्द्र इन्द्राणी रायतो चित्त चमक्किय चिन्तव ए, सेवन्ता प्रभु पायतो ॥ १८ ॥ सहस किणर स्वामी वीर जिन, पेखवि रुप विसालतो । एह अचंभव संभव ए, साचो ए इन्द्रजाल तो ॥ तो बोलावइ त्रिजग गुरु, इन्द्र भूइ नामेणतो । श्री मुख संसा स्वामी सवे, फेडे वेद पएण तो ॥ १९ ॥ मान मेल मद टेल करे, भगतहिं नाम्यो सीसतो । पंच सयांसुं व्रत लियो ए, गोयम पहिलो सीसतो ॥ बंधव संयम सुनवि करे, अगन भूइ आवेयतो । नाम लेई आभास करे, ते पिण प्रति बोधेय तो ॥ २० ॥ इण अनुक्रम गणहर रयण, थाप्पा वीर इग्यार तो । तो उपदेशै भुवन गुरु, संयम सुं व्रत वार तो ॥ बिहुं उपवासें पारणो ए, आपण पै विहरंत तो । गोयम संयम जग सयल, जय जयकार करन्त तो ॥ २१ ॥ (वस्तु) इन्द्र भूइ २ चढियो बहु मान, हु कारो करि कम्प तो । समवसरण पहुतो तुरन्त तो, जह संसा स्वामि सवे । चरम नाह फेडे फुरन्त तो ॥ बोध बीज संजाय मने, गोयम भवहि विरत्त । दिक्ख लेइ सिख्या सही, गण हर पय सम्पत्त ॥ २२ ॥ (भास) आज हुओ सुविहान, आज पचेलम पुन्य भरो । दीठा गोयम स्वामी, जो निय नयने अभिय झरो ॥

समव सरण मझार, जे जे संसा ऊपजै ए । ते तें पर उप-गार, कारण पूछै मुनि पवरो ॥ २३ ॥ जीहां२ दीजै दीख, तीहां केवल ऊपजै ए । आप कनें अण हुन्त, गोयम दीजै दान इम । गुरु ऊपर गुरु भक्ति, स्वामी गोयम उपन्निय । अणचल केवल नाण, रागज राखै रङ्ग भरे ॥ २४ ॥ जो अष्टापद सैल, वंदै चढ चौवीस जिन । आतम लबधि वसेण चरम सरीरी सोज मुनि । इय देशना निसुणेह, गोयम गण हर संचरिय । तापस पन रस एण, जो मुनि दीठो आवतोए २५ ॥ तप सोसिय निय अङ्ग, अह्मां सगतिन ऊपजै ए । किम चढस्यै दृढकाय, गज जिम दीसै गाजतो ए । गिरुओ ए अभिमान, तापस जो मन चिन्तवै ए । तो मुनि चढियो वेग, आलंबवि दिनकर किरण ॥ २६ ॥ कंचन मनि निप्पन्न दन्ड कलस ध्वज वड सहिय । पेखवि परमानन्द, जिन हर भरतेसर महिय । निय२ काय प्रमान, चिहुं दिसि संठिय जिनह बिंब । पण मवि मन उल्हास, गोयम गण हर तिहां वसिय ॥ २७ ॥ वयर सामिनो जीव, तिर्यक जृंभक देव तिहां । प्रति बोध्या पुंन्डरिक, कंन्डरीक अध्ययन भणी । चलता गोयम साम, सवि तापस प्रति बोध करे । लेई आपण साथ, चाले जिम जूथाधिपति ॥ २८ ॥ खीर खांड घृत आण, अमिय वूठ अंगूठ ठवे । गोयम एकण पात्र,

करावै पारणो सवे । पंच सयां सुभ भाव, उज्जल भरियो खीर मिसे । साचा गुरु संयोग, कवलत केवल रूप हुग ॥ २९ ॥ पंच सयां जिन नाह, समव सरण प्राकार त्रय । पेखवि केवल नाण, उप्पन्नो उज्जोय करे । जाने जानवि पीयूष, गाजंती घन मेघ जिम । जिन वांणी नि सुनेवि, णानी हुआ पंच सयां ॥ ३० ॥ (वस्तु) इण अनुक्रम २ नाण संपन्न, पनरै सै परि वरिय । हरिय दुरिय जिन नाह वन्दइ, जानेवि जग गुरु वयण । तिहिं नाण अप्पाण निन्दइ चरम जिनेसर इम भणे, गोयम मकरिस खेव । छेह जाय आपण सही, होस्यां तुल्ला वेव ॥ ३१ ॥ (भास) स्वामियो ए वीर जिनन्द, पूनम चन्द जिम उल्लसिय । विहरियो ए भरह वासंमि, वरस बहुत्तर संवसिय । ठवतो ए कनय पउ मेन, पाय कमल संघे सहिय । आवियो ए नयणा नन्द, नयर पावा पुर सुर महिय ॥ ३२ ॥ पेखियो ए गोयम स्वामि, देव समा प्रति बोध करे । आपणो ए त्रिसला देवि, नन्दन पुहतो परम पए । वलतो ए देन आकाश, पेखवि जाण्यो जिन समें ए । तो मुनि ए मन विषवाद, नाद भेद जिम ऊपनो ए ॥ ३३ ॥ इण समें ए स्वामिय देख, आप कनासुं टालियो ए । जानतो ए तिहुअण नाह, लोक विवहारण पालियो ए । अति भलो ए कीधलो स्वामि, जाण्यो केवल

मांगस्यै ए । चिंतव्यो ए बालक जेम, अहवा केडे लागस्यै ए ॥ ३४ ॥ हूं किम ए वीर जिनन्द, भगतहिं भोलै भोलव्यो ए । आपणो ए उंचलो नेह, नाह नसंपै साचव्यो ए । सांचो ए ए वित राग, नेह न हेज्जै लालियो ए । तिन समें ए गोयम चित्त, राग वैरागे वालियो ए ॥ ३५ ॥ आवतो ए जो उल्लट रहितो रागें साहियो ए । केवल ए नाण उपन्न, गोयम सहिज उमाहियो ए । तिहुअण ए जय जयकार, केवल महिमा सुर करै ए । गण धरु ए करय बखाण, भविया भव जिम निस्तरै ए ॥ ३६ ॥ (वस्तु) पढम गणे हर २ रिष पच्चास, गिह वासै संवसिय । तीस वरष संयम विभूसिय । सिरि केवल नाण पुण, वार वरस तिहुअण नमंसिय । राज ग्रही नयरी ठव्यो, वाणवइ वरसाउ । स्वामी गोयम गुणं निलो, होस्यै शिव पुर ठाउ ॥ ३७ ॥ (भास) जिम सहकारै कोयल टहुकै, जिम कुसमावन परमल महकै । जिम चन्दन सोगंध निधि, जिम गङ्गा जल लहिरयां लहकै । जिम कनयाचल तेजें झलकै, तिम गोयम सोभाग निधि ॥ ३८ ॥ जिम मान सरोवर निवसै हंसा, जिम सुर तरुवर कणय वतंसा । जिम महुयर राजीव वने, जिम रयणायर रयणे विलसै । जिम अंबर तारा गण विकसे, तिम गोयम गुरु केल घने ॥ ३९ ॥ पूनम निसि जिम ससियर सोहै, सुर तरु महिमा

जिम जग मोहे । पूरव दिसि जिम सहस करो, पंचानन जिम गिरवर राजे । नरवइ घर जिम मंगल गाजे, तिम जिन सासन मुनि पवरो ॥ ४० ॥ जिम गुरु तरुवर सोहे साखा, जिम उत्तम मुख मधुरी भासा । जिम वन केतकि मह महे ए, जिम भूमी पति भुय बल चमके । जिम जिन मन्दिर घन्टा रणके, गोयम लब्धे गह गह्यो ए ॥ ४१ ॥ चिन्तामणि कर चढीयो आज, सुर तरु सारे वंछिय काज । कुंभ सहु वसि हुआए, काम गवी पूरे मन कामी । [illegible] सिधि [illegible] धामी, स्वा[illegible] गोयम अणुसरो ए ॥ [illegible] पणव क्षर [illegible]हेलो पभणी जे, माया बीजो श्रवण सुणी जै । श्री मती सोभा संभवो ए, देवां धुर अरिहन्त नमी जे । विनय पहु उवझाय थुणी जे, इण मंते गोयम नमो ए ॥ ४३ ॥ पर घर वसतां कांय करी जे, देश देशांतर कांय भमी जै । कवण काज आयास करो, प्रह उठी गोयम समरीजे । काज समग्गल ततखिण सीझे, नव निधि विलसे तिहां घरे ॥ ४४ ॥ चवदय सय बारोत्तर वरसे, गोयम गण हर केवल दिवसे । कीयो कवित्त उपगार परो, आदहि मङ्गल ए पभणी जे । परव महोच्छव पहिलो दीजे रिद्धि वृद्धि कल्याण करो ॥ ४५ ॥ धन माता जिन उयरे धरियो, धन्य पिता जिन कुल अवतरियो । धन्य सु गुरु

जिन दीखियो ए, विनय वन्त विद्या भन्डार । तसु गुण पुहवि न लम्भइ पार, वड जिम साखा विस्तरो ए । गोयम स्वामिनो रास भणी जै, चौविह संघ रलिया यत कीजै, रिद्धि वृद्धि कल्याण करो ॥ ४६ ॥ कुंकुम चन्दन छडो दिरावो, मानक मोतियां चोक पूरावो । रयण सिंघासन बैसनो ए, तिहां बैठी गुरु देशना देशी । भविक जीवना काज सरेसी, नित नित मङ्गल उदय करो ॥ ४७ ॥ इति श्री गोतम रास सम्पूर्णम् ॥ * ॥ * ।

राग प्रभाती जकरै ॥ प्रह उगम सूर, भूखा निस्तरै संपजै, कुरला करे कपूर ॥ १ ॥ अ अमृत वसै गिह तणा भन्डार । जे गुरु गोतम समरियै मन वंछित दातार २ ॥ पुन्डरीक गोयम मुहा गण धर गुण संपन्न । प्रह ऊठी नें प्रणमतां चौदे सै बावन्न ॥ ३ ॥ खन्ति खमं गुण कलियं सुविनियं सव्व लद्धि संपणं । वीरस्य पढम सीसं गोयम स्वामी नमं स्वामी ॥ ४ ॥ सर्वारिष्ट प्रणासाय सर्वा भीष्टार्थ दायने सर्व लब्धि निधानाय गोतम स्वामीने नमः ॥ ५ ॥ *

॥ इति श्री ज्ञानावली सम्पूर्णम् ॥